॥ श्री हरिः ॥

ते हि सन्मार्ग रक्षकाः

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद

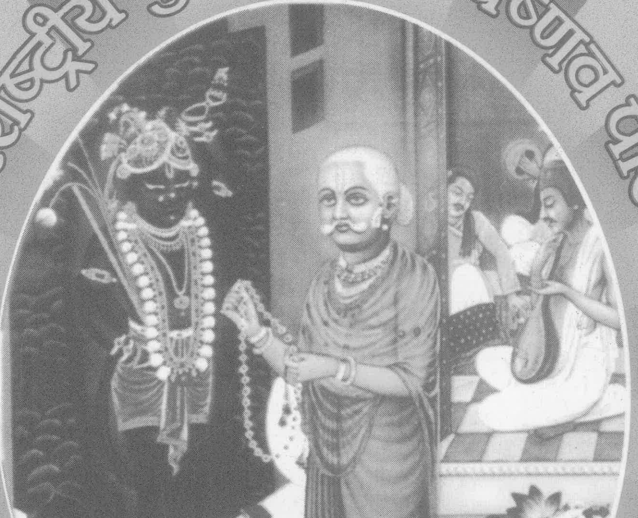

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कीर्तन विशारद

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्य क्रम. नं. ९

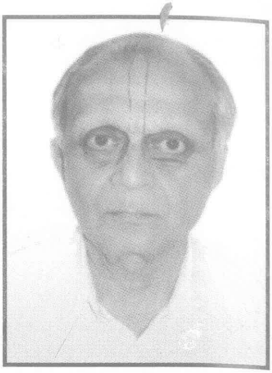

આ. પુ. વૈ. પરિષદનું ૧૦૦માં વર્ષમાં પ્રવેશવું એ એક પુષ્ટિ સંપ્રદાયની ઐતિહાસિક ઘટના છે, અને આજ વર્ષમાં કીર્તન શીખવાની પાંચમી અને છેલ્લી કેસેટ બહારપડતા પુષ્ટિ માર્ગ માં કીર્તન ક્ષેત્રે એક ઐતિહાસિક બાબત હશે.

પૂ. પા. નિ.લિ. પ્રથમેશજી મહારાજશ્રી, નિ. લી. તિલકાયત શ્રી ગોવિંદરાયજી મહારાજશ્રી, નિ. લી. શ્રી મુકુન્દરાયજી, પૂ. પા. શ્રી ગોકુલોત્સવજી નું સ્વપ્નું પુરૂ કર્યા નો આનંદ પરિષદ ને હંમેશા રહેશે.

ગુંસાઈજી ચેરીતેબલ ટ્રસ્ટ અને પરિષદના કીર્તન વિભાગ ને અભિનંદન તથા પ. ભ. જમુના પ્રસાદજી - ને નોટેશન્સ લખી આપી કીર્તનગાન કરવા અભિનંદન.

કીર્તન કલાસો, પાઠશાળાઓ, મંદિરો, સત્સંગ મંડળો, સ્કૂલો અને કોલેજોમાં આની ઉપયોગીતા ઘણી છે. આપણે સૌ આના પ્રચારમાં નિમિત્ત થઈએ એજ આશા.

દેશ વિદેશમાં આનો વધુને વધુ પ્રચાર થાય એ જ શુભેચ્છા.

લી. મુકુન્દભાઇ આર. શાહ
(અધ્યક્ષ)

॥ श्री हरि : ॥

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

❁ कीर्तन विशारद ❁

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठयक्रम नं.५

❁ कीर्तनकार एवं स्वरलिपि प्रदत्ता ❁

श्रीजमनाप्रसादजी शर्मा

❁ भावोद्बोधन ❁

श्रीमती कल्पनाबेन शाह

❁ संकलन ❁

श्रीमति कल्पनाबेन शाह

श्रीमति नैनाबेन द्वारकादास

एवं - कु. ख्याति निर्मल द्वारकादास

संशोधित एवं प्रमाणित प्रती

❁ प्रकाशक ❁

आं. पु. वै. प.
आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
१५-ई, लोहाणा निवास, रघुवंशी हॉल के ऊपर,
जे. एस. एस. रोड, चिरा बजार, मुंबई-२.
फोन : २२०७ ६०९८, ५६३७ २७५८

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
प. पू. निकुंजलता बेटीजी
अे/४, राजनिलम, ग्राउन्ड फ्लोर, डॉ. रजबअली पटेल लेन,
ब्रीजकेन्डी होस्पिटल के सामने, भुलाभाई देसाई रोड, मुंबई-२६.
फोन : २३५३ ८८१४ ● Email : nikunjalatabetiji@hotmail.com

मुद्रक : अक्षत प्रिन्ट्स :
३०३/अे, लक्ष्मी अेपार्टमेन्ट, प्लोट नं. ६, आनंद नगर, वसई (वेस्ट), पीन - ४०१२०२.
फोन : ९५२५०-२३४८५५२/९८१९११०३९०/९९६७०२३३३४

सर्व हक्क प्रकाशक के आधीन

॥ श्री हरिः ॥

कीर्तन विभाग की अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१.	पूज्यपाद गो. आचार्यवर्योंके आशिर्वचन	
२.	पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी	
३.	श्री के. एन. शाह - (विनीत पत्र)	
४.	आमुख	
५.	संगीत विषयक जानकारी	
६.	हमारी कीर्तन प्रणाली	
७.	ताल विभाग	
८.	वाद्य परिचय	
९.	मल्हार राग की जानकारी	६०
अ)	**गौड़ मल्हार ....** तैसोई वृन्दावन	६१
ब)	**मेध मल्हार या शुद्ध मल्हार ....** बोलत मोर सुहाये जहां तहां	६५
क)	**सोरठ मल्हार ....** हरियारो सावन आयो	६९
ख)	**धूलिया मल्हार ....** वा पट पीत की फहरान	७०
ग)	**सूर मल्हार ....** देखो माई ये बड़भागी मोर	७[illegible]
घ)	**मीयाँ की मल्हार ....** काहे को ब्रज पर दौरी बदरीया	७[illegible]
च)	**नट मल्हार ....** लालही लालके लालही लोचन	७[illegible]
छ)	**रामदासी मल्हार ....** लाल माई भीजत आये गेह	८[illegible]
ज)	**जयंत मल्हार ....** झूलत बने है बिहारी हिंडोरे माई	[illegible]
१०.	**मारु ....** हो लक्ष्मण सीता कौन हरी	[illegible]
११.	**पंचम ....** माई मोहे मोहन लागे प्यारो	८[illegible]
१२.	**शुद्ध बसंत ....** खेलत बसंत गिरिधरनलाल	९१
१३.	**ललित बसंत ....** खेलति बसंत निस पिय संग जागी	९३
१४.	**हिंडोल बसंत ....** सांची कहो मन मोहन मो सों	९५
१५.	**हिंडोल ....** रास विलास रंगभर निर्तत	९९
१६.	**सिंदूराकान्हरा ....** मोसो होरी खेलन आयो	१०१

ववआरद्रांग 69
77

शुद्धि पत्र

पुष्ठ नं	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१.	प. पू. गो. द्वारकेशजी का आर्शीवाद पत्र	स्तत्य	स्तुत्य
२१.	१७.	सढऩ	सदन
२४.	१६.	अष्टपटी	अष्टपदी
२५.	१०.	अरी औ	अरी ओ
८३.	१८.	नी घ	नी̱ घ
८५.	५.	नी̱̣	नी̣
९६.	५.	प	घ
११०.	७.	नी	नी̱
१३०.	३.	नी‿घ	नी̱‿ध
१४०.	३.	सां सां रे	सा सा रे̱
१४५.	६.	नी नी	नी नी
	१४.	नी̱̣ नी̱̣	नी̣ नी̣
	१४.	ध‿प	घ̱‿प
१४६.	१.	नी̱̣ नी̱̣	नी̣ नी̣
	७.	नी̱̣ नी̱̣	नी̣ नी̣

	१५.	नी̣̲ नी̣̲	नी̣ नी̣
	१५.	ध प	ध̲ प
१५४.	आरोह	नी	नी̣̲
	आलाप (१)	म रे सां	म रे सा
	आलाप (३)	सा	सां
१६५.	आखरी लाइन	करलेत थे	कर लेते थे
१६७.	६.	गोविंददास	गोविंद दास
१७२.	५.	गाधा	गाथा
१७३.	१.	नी नी सं सं	नी̣̲ नी̣̲ स स
	१३.	नी नी	नी̣̲ नी̣̲

बाकी सभी नी̲ और ग̲ कोमल है।

१७४.	१.	तुझो	तुझे
१७७.	१३.	षडऋतु	षडऋतुओ की केसेटो,

१७. **मारवा** .... नैना तेरे अति रस माते १०३
१८. **जैतश्री** .... झूलत डोल श्री राधिका के संग १०५
१९. **जंगला** .... अरी तुम कौन हो री या बन में १०८
२०. **नट नारायणी** .... नागरी नट नारायण गायो ११२
२१ **कल्याण** .... देखौ इन दिपन की सुंदराई ११५
२२. **श्याम कल्याण** .... कदंब बन बीथन करत विहार ११८
२३. **झिंझोटी** .... खेलत झुनझुनिया ते श्याम १२०
२४. **कुकुभ बिलावल** .... आज धरी गिरधर पिय धौती १२२
२५. **गौड़ बिलावल** .... कांकरी कान्हा मोहे मारे १२४
२६. **सामेरी बिलावल** .... अहो मेरी प्राण पियारी १२६
२७. **देवगिरी बिलावल** .... गढ़ते ग्वालिनि उतरी १२९
२८. **नट बिलावल** .... गोद बैठे गोपाल १३१
२९. **अहीर भैरव** .... जागिये ब्रजराज कुँवर १३४
३०. **भटियार** .... ललन उठाय देहो मेरी गगरी १३७
३१. **गुणकली** .... मुख देखन कौं आयी लालकौ १४०
३२. **कलावती** .... नैना मेरे बरज्यो न मानें १४२
३३. **राग श्री** .... सारेगमपधनी सप्त स्वर अलंकृत १४४
३४. **बिहागड़ा** .... मेरे तो गिरिधर ही गुणगान १४६
३५. **भैरवी** .... श्री वल्लभ भले बुरे तोऊ तेरे १५०
३६. **दरबारी कान्हरा** .... बिन गोपाल नहीं कोई अपनों १५४
३७. **जीवन चरित्र**
अ) **श्री कृष्णदासजी** १५७
ब) **श्री गोविंदस्वामी** १६३
३८. **ध्वजगीत** .... पूज्यपाद गो. श्री. रणछोडाचार्यजी महाराजश्री १७२
३९. **पुष्टिपताका गीत** .... पूज्यपाद गो. श्री. इन्दीराबेटीजी १७४
४०. **आभार** .... श्री जमुना प्रसाद शर्मा १८०

Names of Teachers who have contributed for the past five years to this course. (to be incorporated somewhere)

१ उर्मिलाबेन वोरा
२ रोहिणीबेन परीख
३ चारूबेन रेशमवाला
४ सरलाबेन लेहरा
५ मंजुलाबेन शाह
६ दक्षाबेन वैध
७ हसांबेन
८ ज्योत्सनाबेन
९ ड़ॉ बकुलाबेन चौकसी
१० कु. ख्याति द्वारकादास
११ श्री श्यामसुन्दर जोशी
१२ श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा
१३ **Vashi - 2**
१४ ड़ॉ. नटवरगोपाल मापावाला
१५ श्री गिरिधरगोपाल अग्रवाल
१६ श्री रविगोपाल अग्रवाल
१७ बीनाबेन - सांगली
१८ बबलाकाका - हलोल

परीक्षक - क्रियात्मक (Practical)

१ श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा
२ श्री श्यामसुन्दरजी जोशी
३ कु. ख्याति द्वारकादास
४ श्री भगवतीप्रसादजी शर्मा
५ श्री गिरिशभाई कारिया
६ श्रीमती हारदिकाबेन

परीक्षक - लिखित परीक्षा

१ श्रीमती तरूलताबेन संपट
२ कु. ख्याति द्वारकादास
३ श्रीमती छायाबेन गांधी

॥ श्री हरि: ॥

आचार्य प्रथमेश

श्रीमद् वेद व्यास विष्णु स्वामि श्री बिल्व मंगलाचार्य मतानुवर्ति
प्रथमपीठाधीश्वर गो. १०८ श्री रणछोडाचार्य महाराजा :
प्रथमेश
दीक्षित सोमयाजी

प्राकट्य ७ मई १९३१ ई.
ब्रज ज्येष्ठ कृष्णा ५ सं. १९८८ वि.सं.

नित्य लीला प्रवेश ४ जानेवारी १९९० ई.
पौष शुक्ला ८ सं. २०४७ वि.सं.

॥ श्री हरि: ॥

आचार्य प्रथमेश का अनुरोध

- "इन अंतिम क्षणों में आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ या इसे मेरा इच्छा पत्र समझें कि आप सभी परिषद के द्वारा संगठित होकर संप्रदाय की रक्षा करें, यही हमारा स्वधर्म है।" गो. र. प्रथमेश

- "आप सभी को अपना मानकर मेरे जीवन के अधूरे कार्य बिना किसी परस्पर कलह के, दृढ़ निष्ठा से परिषद द्वारा पूर्ण करने का पुनः आंतरिक आग्रह करता हूँ।" गो. र. प्रथमेश

- "मैं यह अंतिम आप से आशा करता हूँ कि मेरे अवसान के पश्चात् भी आप श्री महाप्रभुजी की सेवा परिषद द्वारा करते रहेने का प्रभु चरणों को साक्षी करके व्रत ग्रहण करेंगे।" गो. र. प्रथमेश

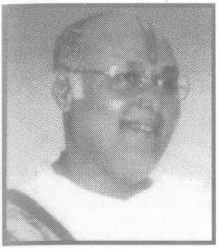

॥ श्री गोवर्धनो जयति ॥
॥ श्री नवनीतप्रियो जयति ॥

॥ प्रधान गृहाधिपति ॥

प्र गृ प

दिनांक : ०६/०७/२००५

तिलकायत गोस्वामी श्री १०८ - श्री राकेशजी (श्री इन्द्रदमनजी) महाराज

भारतीय संगीत परम्परा में पुष्टि मार्गीय हवेली कीर्तन कला का अपना विशिष्ट स्थान है । परमान्द की प्राप्ती हेतु इस सम्प्रदाय में कीर्तनों का चयन अत्यन्त बुध्दिमत्ता से किया गया है । कीर्तन भगवत्स्वरुप, भगवद् गुण, लीला, माहात्म्य, निकुंज प्रेम वात्सल्य दीनता एवं आश्रय आदि से संपूरित है । सेवा कर्ता निष्किंचन भक्त सावधान रहकर कीर्तन श्रवण करता रहे तो उचित काल में भगवद् प्रीति प्राप्त कर सकता है ।

अष्टसखाओं ने अपने आराध्य प्रभु श्रीनाथजी के पद एवं कीर्तन गाये हैं वे विश्व की अमूल्य निधि है ।

वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य शिरोमणि श्री गुंसाईजी ने अष्ट छाप की स्थापना की थी इन अष्ट सखाओं में सभी उच्च कोटि के अनन्य साहित्यकार एवं हवेली संगीतज्ञ थे । भगवत सेवा के राग-भोग-श्रृंगार तीन अंग है।

राग अर्थात् कीर्तन सेवा में कीर्तन भाव प्रधान रुप से गाये जाते हमारे यहाँ स्वर तथा ताल की प्रधानता नहीं भाव की है । हमारी यही हार्दिक कामना है कि इन कीर्तनों द्वारा सेवा में भाव वर्धन हो तथा पुष्टि प्रभु को आनन्दानुभूति हो सेवक की सेवा से । "कलौ केशव कीर्तनात्" कीर्तन से कलियुग में भगवत् प्राप्ति संभव है ।

आप समस्त वल्लभपथानुगामी पथिकों को कीर्तन भक्ति सिद्ध हो, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है । शुभाशीष सह

श्री ति. राकेश

(तिलकायत गोस्वामी राकेश जी महाराज)

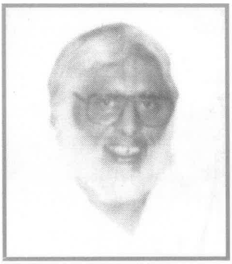

॥ श्री हरि: ॥

गोस्वामी श्री श्याम मनोहर
६३, स्वास्तिक सोसायटी, ४ था रस्ता, जुहूस्कीम,
पारले (पश्चिम), मुंबई - ४०० ०५६.

पुष्टिमार्गीय पदोंकी राग - ताल बध्द स्वरलिपिके प्रकाशनकी शृंखलामें पांचवीं कड़ीके प्रकाशनकी बधाई सभी सम्बध्द महानुभावोंके प्रति प्रकट करता हूँ।

श्रीभातखंडेजीने जब शास्त्रीय रागोंके ताल-स्वरांकित करनेका आद्य उपक्रम किया था तब किसीने उनसे पूछा था इन ग्रन्थोंको सीखकर क्या कोई तानसेन पैदा हो पायेंगे ? इसके समाधानके रूपमें उन्होंने कहा कि तानसेन न भी पैदा हो पायें पर हमारी शास्त्रीय संगीतको भलीभांति जाननेवाले कानसेन भी पैदा हो पायें तो कितनी बड़ी बात होगी !

मुझे भी ऐसा लगता है कि प्रशिक्षणार्थिओंको अतीव उपकारक ऐसे पुष्टिमार्गीय पदोंके ताल - स्वरांकनको प्रकाशित कर उनकी परीक्षा के संचालनके इस उपक्रमसे चाहे अष्टछाप जैसे कीर्तनगायक न भी प्रकट हो पायें परन्तु वैष्णवोंके घरोंमें बिराजते प्रभुकी सेवामें अपने पदोंको गा कर सेवा करनेवालोंके ठाकुरजी सेवाके समय ठेका तो अवश्य ही देंगे जैसे जिस पर श्रीगिरिधरजीने अपने श्रीहस्तके कड़े श्रीनवनीतप्रियाजीको न्योछावर कर श्रीधोंधीको दे दिये थे।

पुनश्च इस कार्यक्रममें सहयोगी सभीको हार्दिक अभिनन्दन के साथ....

गोस्वामी श्याम मनोहर

व्रजधाम, आध्यात्मिक केन्द्र
बडोदरा, गुजरात

गोस्वामी श्री इन्दिराबेटीजी

'श्रीगुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट एवं आंतर राष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद' दोनो के संयुक्त सहयोगसे पंचवर्षीय कीर्तन प्रशिक्षण अभ्यासक्रम के लिये चार वर्षोका अभ्यासक्रम एवं तदर्थ 'कीर्तन प्रवेशिका', 'कीर्तन प्रबोध', 'कीर्तन सुबोध', एवं 'कीर्तन प्रवीण' नामक चार पुस्तिकायें एवं तदनुसार केसेटें प्रसिद्ध हो चुकी है। पंचम अभ्यासक्रमके लिये पांचवी "कीर्तन विशारद" नामकी पुस्तिका एवं केसेट प्रसिद्ध होने जा रही है यह आनंदका एवं गौरवका विषय है ।

श्रीमद्भागवतके प्रथम स्कंधमें राजा परीक्षितने कई सवाल किये। उनमें एकप्रश्न था "सर्वात्मभावसे मनुष्यको क्या करना चाहिये ?" उसका उत्तर श्रीशुकदेवजी महाराजने द्वितीय स्कंधमें दिया "तस्मात् भारत सर्वात्मा भगवानीश्वरो हरिः श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च स्मर्तव्यश्चेच्छात्ताऽभयम्" (भा.२-१-५) दशविध लीला विनोदी प्रभुकी लीलाका श्रवण कीर्तन एवं स्मरण करना चाहिये। जो सर्वात्मा हैं, भगवान हैं, दुःख हरनेवाले एवं सुखानंदकारी हैं उनके स्वरुप, गुण एवं लीलाओका श्रवण एवं कीर्तन करने से अनायास वह श्रवण एवं कीर्तन, स्मरण रुप व्यापारमें परिणत हो जाता है। प्रभुकी तनुवित्तजा सेवा एवं गुणगान के साथ किया हुआ स्मरणरुप व्यापार धीरे धीरे चित्तको भगवद् प्रवण बनाता है। इसके बाद "चेत्तस्तद् प्रवणं सेवा" सेवाका यह यथार्थ स्वरुप भगवदीय जीवनमें प्रकट होता है । और मानसी सेवाका रुप

धारण कर लेता है ।

भगवद् लीला गान प्रत्यक्षमें प्रभु सन्मुख तत् तत् ऋतुअनुसार, उत्सवानुसार, प्रसंगानुसार किया जाय तो प्रभुको बडा सुख होता है । खासतौर पर अष्टसखाओंकी वाणी वेदतुल्य है । वेद प्रभुका निःश्वास है तो अष्टसखाओं की वाणी भगवद्लीलाका साक्षात् अनुभव है । प्रभु ही उनके मुखसे अपना गुणगान प्रकट करते है । अतः पुष्टिपथ पर आगे बढनेके लिये तनुवित्तजा सेवा प्रणालिकामें कीर्तनगान को अनिवार्य रुपसे सहयोगी बना लिया गया है । सेवा के अनवसरमें भी भावालम्बन, भावजागृति एवं रसिकताका संचार कीर्तनगानसे अत्याधिक बढता है । परीक्षाओंके माध्यमसे प्रशिक्षण लेकर पुष्टिभक्त भगवद्सेवाके अवसर पर अगर रागोंके अपने स्वरुपज्ञानके साथ कीर्तनगान करेगा तो कलानिधि कृष्ण अत्याधिक प्रसन्न होंगे । आज कई लोग कहते है कि हम "रुपा पोरिया" जैसे हैं जैसाभी गायेंगे प्रभु राजी हो जायेंगे । अतः कीर्तन सीखनेके लिये यत्किन्चित प्रयास नहीं करते है । अगर रुपा पोरिया जैसा भाव है तो प्रभु उस भावात्मकताका आत्मीयतासे स्वीकार करते है । परंतु भावशून्यदशामें रुपा पोरियाका उदाहरण देना ठीक नहीं होगा । पुष्टि भक्तको चाहिये सेवा, शृंगार, राग, भोग सभी प्रकारों में नावीन्य एवं कलात्मकताका आग्रह रखे । इससे सेवा प्रवीणता एवं दक्षता बढेगी । निबन्धसर्वनिर्णयकी कारिका '२३०' में श्री आचार्य चरण आज्ञा करते है ।

यथा सुन्दरतां याति वस्त्रैराभरणैरपि ।

अलङ्कुर्वीत सप्रेम तथा स्थानपुरःसरम् ॥ (स.नि. २३०)

कई जगह मैं देखती हूं कीर्तनीया मण्डलियां है। परंतु राग एवं तालका कहीं ठीकाना नहीं होता । आसावरी राग गा रहे कि सारंग राग पताही नही लगता । अतः अपने प्रभुको रिझानेके लिये आप कीर्तन प्रशिक्षण लें । अपनेभगवद् भावका पोषण करें एवं पुष्टिप्रभुके द्विदलात्मक आनंदका लाभ प्राप्त करें। किसी भी चीज या कलामें सुन्दरता सम्पादन करने के लिये उसका प्रशिक्षण पूर्व समयमें वंशपरंपरासे अपने ही गृहमें पूर्वजोंके द्वारा प्राप्त होताथा । गृहका वातावरण ही भगवद् सेवानुकूल था। आज समय बदल चूका है। खान-पान, रहन-सहनके ढंग बदल चूके हैं । ऐसी अवस्थामें सेवा प्रणालिकाके सभी आयामोंका शिक्षण जरुरी है। उन सभी आयामोंके लिये जो शिबिरोंके आयोजन हो रहे हैं वह भी आशास्पद है ।

पुष्टिभक्तोकों कीर्तनके प्रकारोमें उचित मार्गदर्शन देने के लिये में चिरायुष्मान श्रीनिकुंजलता बेटीजीको भूरि भूरि धन्यवाद एवं आशीर्वाद देती हूं तथा श्रीगुसांईजी चेरिटेबल ट्रस्ट एवं आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद को हृदयसे धन्यवाद देती हूं तथा अभिलाषा करती हूं की प्रशिक्षणकी पंचवर्षीय योजनाको आगे बढाया जाय एवं षष्ठवर्षीय, सप्तवर्षीय अथवा अष्टवर्षीय प्रशिक्षण पुस्तिकायें ओर भी घनीष्टतासे प्रकट की जायें ।

गोस्वामी इन्दिराबेटीजी

पू.पा.१०८ गोस्वामी श्री इन्दिराबेटीजी महोदया

गो. श्री चन्द्रगोपालजी महाराजश्री

‘श्री राधाकृष्णकुंज’, बी-४१/१, १ श्रीनगर सोसायटी, एच. रोड,
अकोटा रोड, दीनेश मीलके पीछे, **वडोदरा - ३६० ०२०.**
फोन : ०२६५-२३२६८६७

पू.श्रीजीजी (पू. श्रीनिकुंजलताबेटीजी) प्रस्थापित श्री गुसांईजी चेरिटेबल न्यास एवं आंतर राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद के संयुक्त तत्वावधानमें पुष्टिमार्गीय पदगान प्रशिक्षणके पंचवर्षीय अध्ययनक्रममें अन्तिम पंचमवर्षके अध्ययनहेतु पुस्तिका ‘कीर्तन विशारद’ नामसे मुद्रित होने जा रही है तदर्थ इस शुभ अवसर पर अतिशय प्रसन्नता पूर्वक मैं अपनी हार्दिक अनेक शुभकामनायें इससे प्रेषित कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि इस पंचवर्षीय अध्ययन से सेवा प्रवृत्त वैष्णव समुदाय अवश्यमेव लाभान्वित होगा।

इस पुस्तिकामें पूर्व प्रकाशनोंसे विशिष्टरूपमें हिंडोला, गोवर्धनलीला, वसन्त - धमारकी विशेषरूपमें जानकारी देते हुए वसन्त, बिलावल, मल्हार आदि रागों के विशेष प्रकार भी बताये गये हैं जिससे एक ही रागको विविध प्रकारमें गानेके माध्यमसे पद प्रस्तुति करने का अनूठा आनन्द भी सीखनेवालोंको प्राप्त हो सकेगा।

साथ ही इस संयुक्त साहसमें प्रवेशिका से लेकर कीर्तन विशारद पर्यन्तकी कसैट व सी.डी. भी प्रस्तुत की जा रही है जिससे भारतके विभिन्न नगरोंमें बस रहे वैष्णवजनोंको कि जहां प्रशिक्षण देनेवाला उपलब्ध न हो वहां पर भी लोग इसकी सहायता से प्रशिक्षण ले पायेंगे। एतदर्थ

विभिन्न स्थलों पर इस प्रकारप्रशिक्षण लिये हुओं की परीक्षा के लिये उन स्थलों से पूर्वसूचित होने पर परीक्षकों को भेजने की व्यवस्था भी विचारी गई है यह भी बहुत ही उत्तम विचार है ।

बहुत वर्षो पूर्व पू. श्रीजीजीने इस उत्तम भावनाको हृदयमें रखकर पुष्टिमार्गीय वैष्णवोंमें आम समाजमें पुष्टिमार्गीय पदसाहित्य का प्रचार - प्रसार हो व अनेक वैष्णव राग - ताल - लय - स्वर सहित पदगान करनेको सक्षम बने तदर्थ पंचवर्षीय अभ्यासक्रमकी कल्पना करके उसे क्रियान्वित करनेका संकल्प किया था जो आपश्रीके अत्यन्त परिश्रम से आज वह संकल्प पूर्ण होने जा रहा है इससे अधिक और क्या आनन्दका विषय हो सकता है ।

पू. श्रीजीजीसे इस संकल्पकी पूर्तिमें श्री गुसांईजी चेरिटेबल न्यास व आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद ने अपना अमूल्य सहयोग देकर सम्प्रदाय की उत्तम सेवा की है तदर्थ उनके सभी पदाधिकारी जनों को शुभाशिष - अभिनन्दन।

पुनश्च - कीर्तनकार श्रीजमुनाप्रसादजी, भावोद्बोधनकर्त्री श्रीमती कल्पना शाह, संकलनकर्त्री कु. श्रीख्याति, उपर्युक्त उभय न्यास संस्थाएं व उनके कार्यकरोंको शुभाशिषः शुभाभिनन्दन ।

भगवदीय,

गोस्वामी चन्द्रगोपाल

(गोस्वामी श्रीचन्द्रगोपालजी)

॥ श्री श्याममनोहरनवनीतप्रियगोवर्धनधरसहस्वामिनीमदनमोहन प्रभवः विजयन्ते ॥

सौंदर्य निजहृदगतं प्रकटितं स्त्रीगूढभावात्मकं ।
पुंरुपंच पुनस्तदन्तरगतं प्रावीविशत् स्वप्रिये ॥
संश्लिष्टावुभर्योबभौ रसमयः कृष्णोहियत्साक्षिकं ।
रुपं तत्त्रितयात्मकं परमभिध्येयं सदावल्लभम् ॥१॥
भावैरंकुरितंमहीमृगदृशामाकल्पमासिंचितैः ।
प्रेम्णाकन्दलितं मनोरथमयेः शाखाशतैः संभृतम् ॥
लोल्यैः पल्लविंत मुदा कुसुमितं प्रत्याशया प्रष्पितम् ।
लीलाभिः फलितं भजे व्रजवनी शृंगार कल्पद्रुमम् ॥२॥

नि. ली. पू. पा. गोस्वामी श्री मुरलीधरलालजी महाराजात्मज

गोस्वामी श्री श्यामसुन्दरजी (त्रिभंगीरायजी)

(चौपासेनी - जामखंभालिया - बोरीवली)

१०२-ए,
तेजल एपार्टमेन्ट,
सिम्पोली रोड,
बोरीवली (पश्चिम),
मुंबई - ४०००९२.
फोन :२८९९ १८८३.

क्रमांक : २५१,

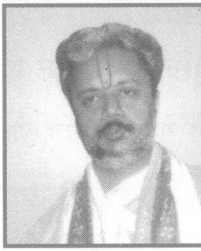

३०१, श्री व्रजमुरली निकेतन,
स्वामी विवेकानंद रोड,
सिम्पोली सिग्नल के पास, बोरीवली,
मुंबई- ४०००९२.
फोनः २८९९ १८८३.

दिनांक १०/६/२००६

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट,
अध्यक्ष महोदय।

यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में "श्री पुष्टि भक्ति कीर्तन विशारद ग्रंन्थ पाठ्चक्रम" का प्रकाशन होने जारहा है। श्री पुष्टीभक्ति कीर्तन शैली की प्राचीन पद्धति को जीवन्त रखनेके लिये एक अतीव स्तुत्य प्रयास किया जा रहा है जो कि अत्यन्त प्रशंसनीय और सराहनीय है।

पू. श्री निकुंजलताबेटीजी की अध्यक्षता तथा उनके मार्गदर्शन को प्राप्त करके प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशन में आपका अतिमहत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो कि आविस्मरणीय है।

मैं अपनी और से श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा को हार्दिक बधाई दे रहा हूँ क्योकी प्रस्तुत ग्रन्थ प्रकाशन के साथ-साथ पहले भी जितने ग्रन्थो का प्रकाशन हुआ, इन सभी पाठयक्रम ग्रन्थो में उनका मुख्यरूप से अभूतपूर्व योगदान रहा है जिसके वे भूरिशः धन्यवाद के पात्र हैं।अनेक शुभकामनाओं सहित शुभाशीर्वाद।

शुभम् किमधिकम् ।
भावक्त : गो. श्यामसुन्दरजी महोदय
श्री वल्लभाब्द ५२९

गो. श्यामसुन्दरजी -
महोदय।

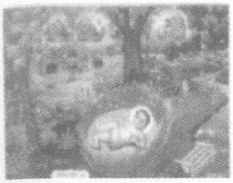

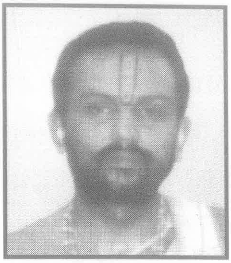

ગો. શ્રી દ્વારકેશલાલજી મહોદય

श्री आ.रा.पु. वैष्णव परिषद (मुंबई)

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

शुभाशीर्वाद

भगवत्कृपा से आपके द्वारा 'कीर्तन विशारद' पुस्तिका का प्रकाशन हो रहा है यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई।

संगीत शास्त्रमें पुष्टि मार्गीय कीर्तनों का एक विशिष्ट एवम् अद्बितिय स्थान है जिसमें राग, ताल, स्वर, लय के साथ में शब्दों के माधुर्य के उपर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। एवम् यह सभी कीर्तन भाव प्रधान है।

अष्टसखा महानुभावों की दिव्य वाणी केवल कोई कविता या कल्पना मात्र नहीं है किन्तु **श्रीमहाप्रभुजी** और **श्री गुसांईजी**के द्वारा जो पुष्टि बीज का उनमें निर्माण हुआ और निरंतर **आपश्रीके** कृपावर्षण से वह बीज अंकुरित एवम् फलित हुआ फलस्वरूप **पुष्टिपुरूषोत्तम प्रभुकी दिव्य लीलाओंका जो अनुभव उनको हुआ वही अनुभव उनके हृदयमें से कीर्तन स्वरूप प्रकट हुआ।**

इन कीर्तन प्रणाली के अन्तर्गत प्राचीन ध्रुपद धमार शैली प्रमुख है जिसे जीवन्त रखने का यह एक स्तत्य प्रयास है।

इस अभ्यासक्रमका लाभ लेकर सभी वैष्णवजन सुमधुर भावयुक्त कीर्तनगान करके निज सेव्य स्वरूपको रीझाकर पुष्टि भक्तिका अलौकिक फल प्राप्त करे यही भगवद् चरणारविंदमें अभ्यर्थना सह

इस पुस्तिका के प्रकाशनमें जिन जिन भगवदीयोंने अपना योगदान दिया है उन सभीको अंतःकरणके आशीर्वाद।

गो. द्वारकेश

पू.पा.गो.१०८ श्री द्वारकेशलालजी महोदय

શ્રી દ્વારકેશ નિકેતન, એસ. વી. રોડ, કાંદિવલી (પ.), મુંબઇ - ૪૦૦ ૦૬૭. મહારાષ્ટ્ર (ભારત). • ☎ (૦૨૨) ૮૦૭ ૩૧૭૪ ફેક્સ : (૦૨૨) ૮૦૬ ૦૧૮૦.
શ્રી મહાપ્રભુજી પ્રાગટ્ય બેઠકજી, દ્વારકેશ ભુવન, પોસ્ટ ચંપારણ્ય, વાયા : નવાપારા, રાજીમ, જિ. રાયપુર - ૪૯૨૧૦૭ (મ.પ.)•☎(૦૭૭૧૮૩) ૭૮૩૮ / ૭૮૩૬
શ્રી દ્વારકેશ પેલેસ, મોટી હવેલી, હવેલી રોડ, અમરેલી - ૩૬૪૬૦૧. (સૌરાષ્ટ્ર) ભારત.• ☎ (૦૨૭૯૨) ૨૨૭૬૭
શ્રી દ્વારકેશ કુંજ હવેલી, ૧૫, મીરા નગર સોસાયટી, ભાતની વાડી, વરાછા રોડ, સુરત (ગુજરાત) (ભારત) • ☎ (૦૨૬૧) ૬૪૮૭૦૫

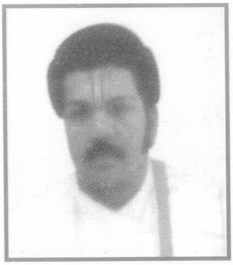

गोस्वामी श्री प्रशान्तकुमार
गोविन्द भवन, बृहन्मन्दिर, भुलेश्वर, मुंबई - ४००००२.
फोन : (०२२) २२४२२९५१
Email : goswami_prashant@vsnl.com

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् तथा श्री गुसांईजी चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त उपक्रम से पुष्टिमार्गीय कीर्तन अभ्यासक्रम अपने पंचम् तथा अन्तिम वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यह जानकर ह्रदय में अत्यन्त परितोष हो रहा है।

इस अभ्यासक्रम के माध्यम से मात्र देश मेंही नहीं, विदेश में भी सैंकड़ो जिज्ञासू भक्त अष्टछाप संगीत तथा अष्टसखा की दिव्य, अलौकिक एवं रसात्मक वाणी का गान प्रभु सुखार्थ कर रहे हैं और निःसीम सुख को प्राप्त कर रहे हैं।

'गुणगाने सुखावाप्तिर्गोविन्दस्य प्रजायते'

भगवान् भी जब अपने भक्तों के द्वारा अपने गुणगान का श्रवण करते हैं तब, उनकी कृपा का सागर (सर्वानन्दमय होते हुए भी) उमड़ पड़ता है और अपने भक्तों को पूर्णरूपेण आप्लावित करता है ।

'हृद्गतः स्वगुणान् श्रुत्वा पूर्णः प्लावयते जनान्'

सम्प्रदाय में ७० और ८० का दशक ऐसा आया जब हम शनैः शनैः अपने प्राचीन मन्दिरों में गाने वाले परम्परागत कीर्तनकारों को एक के बाद एक खोते चले गये। जो बचे रह गये, उन्हें यथोचित पोषण नहीं मिला। घोर उपेक्षा के परिणामस्वरूप वे भी निराश होकर या तो मन्दिरों को छोड़कर अपने गाँव चले गये (गुमनामी में) अथवा वृध्दावस्था में जैसे - तैसे गाड़ी खींचते हुए भगवान् को प्यारे हो गये। और अपने साथ चार-पाँच शताब्दि जूनी परम्परा / पध्दति ले गये। आज परिस्थिति यह है कि (कुछ मन्दिरों को छोड़कर) पूरे सम्प्रदाय में कहीं कोई परम्परागत कीर्तनकार नहीं है। कहीं तो कॅसेट / सीडी बज रही है, तो कहीं तबले के साथ कीर्तन (भजन शैलीमें) हो रहे हैं, तो कहीं हो ही नहीं रहे हैं ।

इन तीस - पैंतीस वर्षो के बीच में कुछ ऐसे स्तुत्य प्रयास हुए हैं जिनका उल्लेख करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। ८० के दशक से अपने

शिष्यवर्ग में कीर्तनों के प्रति जागृति / रुचि पैदा करने के लिए कुछ कीर्तनकारों ने क्लासिस के माध्यम से वैष्णवों को अष्टछाप संगीत सिखाना शुरु किया। इनमें मैं विशेषरूप से नामोल्लेख करना चाहूँगा, प.भ.श्रीमुरारिलाल चतुर्वेदी तथा प.भ.गो.वा.श्रीविठ्ठलदास बापोदरा का । इन दोनों ने अपने - अपने तरीके से अनेक वैष्णवों को न सिर्फ़ अष्टछाप संगीत से परिचित कराया बल्कि, उन्हें अपने सेव्यस्वरुप के समक्ष गाता कर दिया। लेकिन यह प.आ. श्रीइन्दिरा बेटीजी तथा प.आ. श्री निकुंजलता बेटीजी के अतुल योगदान एवं अभूतपूर्व प्रोत्साहन के बिना सम्भव नहीं था। इन भगिनिद्वय ने देश - विदेश में अनेक शिविरों का आयोजन करवाया और असङ्ख्य वैष्णवों ने इसका लाभ लिया और वेदतुल्य अष्टसखा की दिव्य वाणी का नाद अखिल विश्व में गूँजने लगा। आज भी समय - समय पर कीर्तन कार्यक्रम / स्पर्धा / अभ्यासक्रम के द्वारा प.आ. श्री निकुंजलता बेटीजी ने कीर्तन प्रचार की इस ज्वाला को प्रज्वलित रखी है।उन्हें मेरे कोटिशः धन्यवाद, आभार।

इस अवसर पर मैं विशेषरूप से नि.ली.कीर्तन मार्त्तण्ड, पू.पा.गो. १०८ श्रीमुकुन्दरायजी महाराज का स्मरण करूँगा, जिन्हों ने ६० के दशक में अष्टछाप संगीत की विशुद्ध परम्परा के संरक्षण / संवर्धन की ज्योत प्रगटायी थी। आपको भी मेरे कोटिशः प्रणाम।

वर्तमान समय में भी कई आचार्य बालक, गुजरात - सौराष्ट्र के कीर्तनकार तथा मुंबई में भी प.भ. श्रीभगवतीप्रसाद शर्मा, प.भ. श्री गिरीशभाई एवं प.भ. श्री जमुनाप्रसाद शर्मा जैसे कुछ लोग कीर्तनों का प्रचार- प्रसार - प्रशिक्षण में संलग्न हैं। उन्हें भी मेरे हार्दिक धन्यवाद। विशेषरूप से प.भ. श्री जमुनाप्रसाद शर्मा को जिन्होंने, इस अभ्यासक्रम (पंचवर्षीय) का लीपिबध्द संयोजन किया है। प.भ. श्री ख्यातिबेन को भी मेरे हृदयपूर्वक आशीर्वाद जो इस पूरे आयोजन में अत्यन्त सक्रिय रही हैं।

किमधिकम् !

गोस्वामी प्रशान्तकुमार

II Shree Goverdhandharan Vijayate II
II Shree Balkrishna Prabhu Vijayte II

Shree Nikunjlata Betiji

Rajneelam, Flat No. A/4,
Ground Floor,
Dr. Rajabli Patel Road,
Bhulabhai Desai Road,
Mumbai-400026.

हमारी कीर्तन प्रणाली

हिंडोरा

अगले साल "हमारी कीर्तन प्रणाली" के अन्तर्गत "वर्षोत्सव कीर्तन प्रणाली-२" के अन्तमें हिंडोराके पद के बारे में कुछ जानकारी दी गई थी। अब उसमें विशेष देखेगें।

ठकुरानी तीज (श्रा. सु.३)

आज से सभी राग खुल जाते हैं। मल्हार के साथ साथ अन्य रागोंमें भी पद गाये जाते हैं। आज तीज के दिन मंगलासे लेकर राजभोग दर्शन तक चुनरी के भाव के पद गाये जाते हैं।जहाँ बधाई बैठ गई हो वहाँ साथ में बधाई भी गाई जाती है। कहीं कहीं चुनरी के पद शृंगार औसरामे ही गाया जाते है। हिंडोरामें तीज के भाव के स्वतंत्र पद है, उनमें से चार पद गाये जाते हैं। कहीं कहीं दो बार झूलते हैं। काच के हिंडोरेमें भी झूलते हैं। तब उपरोक्त पदों के सीवा तत् तत् भावानुसार भी पद गाये जाते हैं।

पवित्रा अेकादशी (श्रा. सु.११)

आज से कुछ घरमें जन्माष्टमी की बधाई बैठती है। पवित्रा सुबह धरे या सायं धरे, पवित्रा अधिवासन समय राग सारंग में आलापचारी के बाद पवित्रा के दर्शन खुलने पर, पवित्रा धरावे के पद सारंग राग में गाये जाते हैं।

हिंडोरा के दर्शन में जैसे आगे लिखा गोविन्द स्वामी के रीती के चार पद

गाये जाते हैं। दर्शन पहेले भीतर झूलते हैं तब पवित्रा भाव के पद गाये जाते हैं। मल्हार राग आज से बंध होता है। कभी कभी गाया जाता है। विशेष नहीं। पवित्रा बारस के दिन हिंडोरा दर्शन में पवित्रा के भाव के हिंडोरा के चार पद गाये जाते हैं।

बगीचा तेरस (श्रा. सु.१३)

कहीं नवमी को या कहीं त्रयोदशी को बगीचा में श्री ठाकोरजी झूलते हैं। तब कुंज भाव के हिंडोरा के पद गाये जाते हैं। बगीचा में फुल के हिंडोरा हो तो फुल के भाव के पद भी साथ में गाये जाते हैं। उस दिन शेहरा के शृंगार हो तो शेहरा भाव का भी हिंडोरा का पद साथ में गाया जाता हैं।

रक्षाबंधन (श्रा. सु.१५)

सुबह या सायं रक्षा धरने के समय सारंग राग में रक्षा बांधवे के पद गाये जाते हैं। आरती समय "पावसरितु आनंद भर झूली रहो" कल्याण रागमें या कहीं "झूलत नवरंग संग"और कहीं "तिहारो घर सुबस बसो" और कहीं आरती बाद "खमाज राग में हिंडोरे से उतरे लाल बिहारी" इत्यादि पदो में से या तत् तत् घर की प्रणाली अनुसार पद गाया जाता हैं।

हिंडोरा के दिनों में ही जन्माष्टमी की बधाई बैठने पूर्व बाललीला की बधाई बैठतीहैं। कहीं आषाढ कृ. २ से ९ तक, कहीं ठकुरानी तीज से श्रा. सु. १० तक और कहीं तत् घरकी प्रणाली अनुसार, तब बाललीला के झांझ समाज सहित गाये जाते हैं। मंगला दर्शन, शृंगार औसरा, और कहीं कहीं राजभोग आये, राजभोग दर्शन में भी एक पद मल्हार का और एक पद बाललीला का गाया जाता हैं।

हिंडोरा के दिनों में जब कोई घर के बालक को उत्सव या जन्मदिन होय तब शयन भोग अर्ध समय एवं शयन दर्शन में एक या दो पद हिंडोरा के और एक बधाई गाई जाती हैं। जन्माष्टमी की बडी बधाई बैठने पर शयन भोग अर्ध समय या दर्शन में बधाईही गाई जाती है।

ग्रहण

हमारे यहाँ सूर्यग्रहण या चन्दग्रहणमें ग्रहण शुरु होनेसे लेकर मोक्षकाल तक मंदिरोमें दर्शन खुले रहते हैं । दर्शन के समय कीर्तन इत्यादि होते है । ग्रहण कभी प्रातः मध्यान्ह या रात्रिके समय भी होता है। ग्रहण के समय प्रथम महात्म्यके पद (१) पद्म धर्यो जनताप निवारन (२)चक्रके धरन हार (३) जाको वेद रटत (४) वंदो धरन गिरिवर भूप (५) चरन कमल वंदो जगदीश इत्यादि मेंसे गाये जाते है । मानलीलाके पद एंव ग्रहणका समय लंबा हो तो सूरदासजीका 'मानसागर ' इत्यादि गाया जाता हैं । इसके सिवा कहीं कहीं समय एंव ऋतु अनुसार भी पद गाये जाते हैं । प्रथम महात्म्यके पद ओर बादमें ऋतु अनुसार जैसेकि भादोंमें दानके दिनोंमे दानके , फागुनमें होरीके इत्यादि कहीं कहीं तत् समयके पद प्रथम गाये जाते है । किसी घरमें रासके हि पद गाये जाते हैं।

कभी कभी कहीं कहीं हमारे पदोके अलावा अन्यभी रचनाएं गाई जाती हैं । अन्य वाद्य भी अेकेले बजाओे जाते हैं ।

(चन्द्र ग्रहणमें मानके पद । सूर्य ग्रहण में मान सागर के अलावा दीनता, आश्रयके भी पद गाये जाते है ।)

कुंडवारा

हमारी सेवा प्रणालीमें गोपाष्टमीसे लेकर वसंत पंचमीके अगले दिन तकमे शीतकालमें श्रृंगार भोग समय प्रभुको भीतर कुंडवारा भोग आते हैं। तब दर्शन नहीं होते। कभी मनोरथ स्वरुप विशेष रुपसे कुंडवारा भोग आये पर एवं दर्शन मे प्राय; निम्त पद गाये जाते हैं। (१) गोकुल गोवर्धन पूजी अे (२) पूजा विधि गिरिराजकी (३) बडडेन को आगे दे गिरिधर (४) गुरके गूंजा पुआसुंवारी इत्यादि पद, एवं दर्शन मे सगाई ब्याहके भी पद गाये जाते हैं। जैसे की (१) ब्याहकी बात चलावत मैया (२) मैया मोहे अेसी दुल्हनी भाऐं (३) दिन दुल्हो मेरो कुंवर कन्हैया एवं अन्य सगाई ब्याहके पद गाये जाते हैं। श्रृंगारानुसारभी पद गाये जाते हैं। जेसे सेहरा धरे होतो सेहरा के भावके, टिपारा धरने पर "गोविन्द लाडिलो बड बोरा" इत्यादि राजभोग टिपाराके पद भी साथ साथ गाये जाते हैं।

कुंडवारा मनोरथके लिये कहीं भी पद के बारे मे कीर्तन पुस्तक में स्वतंत्र रुपसे लिखा नही गयाहैं। या तत् घर के बालककीं आज्ञानुसार या परंपरा से सुनके कीर्तन कार कीर्तन करते हैं।

छप्पनभोग

छप्पनभोग भी विशिष्ट मनोरथ है। छप्पनभोग भावनानुसार प्रभु अपने परिवार सहित वृषभानजी के यहाँ निमंत्रणसे भोजन करने पधारते हैं। ईसलिये गदाधरदासजी रचित ये पद भोग आये प्राय: गाया जाता हैं। "वृषमान सढन भोजन" को नंदादिक सब आये हो।

भोग आये एवं दर्शन खुलने पर......

(१) बैठी गोपकुंवरकी पांत.........धनाश्री रागमें

(२) श्री राधेजू पूछन आई ....बिलावल रागमें

(३) श्री वृषभान प्रोहितको..........सारंग रागमें

(४) महामहोत्सव होत .... धनाश्री रागमें

(५) परम कुलाहल............... इत्यादि पद के अलावा छप्पन भोगके विशेष पद कुछ कीर्तन पुस्तक में दिये गये हैं - उनमें से एवं ब्याहके पद गाये जाते हैं।

वर्षोत्सव कीर्तन प्रणाली-३

वसंत - धमार

हमारे कीर्तन साहित्यमें पदोंके जो विभाग किये हैं उनमें एक विभाग "वसन्त धमार, डोल, होरी, रसीया" के पद होते हैं। माध सुदी पंचमी (वसन्त पंचमी) से फागुन सुदी पूनम तक के चालीस दिन वसन्त होरी के कहे जाते हैं। ईन दिनों में क्रमानुसार कीर्तन गाये जाते है। जिसमें वसन्त एवं धमारके पद गाये जाते हैं और वसन्तराग विषेश रूपमें गाया जाता है।

वसन्त पंचमी

मंगलासे राजभोग सरे तक नित्यका क्रम गाया जाता है। पश्चात वसन्त कलशाके अधिवासन समय वसंत रागमें आलापचारी "आई रितु बसन्तकी ......श्री गोवर्धन धरण धीर लाडीलो.......गाई जाती हैं। दर्शनमें प्रथम श्री गुसांईजी रचित अष्टपदी "हरि रिह व्रज युवती शत संगे" हर घर में गाया जाता हैं। बादमें कहीं' कही' जयदेवजीकी अष्टपदी "हरि रिह सरस वसंते ". "ललित लवंग लता परिशिलन" इत्यादि मे से भी गायी जाती है। उत्सव भोग आये। राजभोग दर्शन एवं सायं भी सभी समय शयन पर्यंत वसंत पंचमी के भावके पद वसंत रागमें गाये जाते हैं।

सायं मानमें "अैसो पत्र पढयो नृप वसंत" पोढवेमें व "खेलत खेलत पोढी श्रीराधे" और आश्रयके पदमें "द्रढ इन चरणन के स्थान पर" "श्री वल्लभ प्रभु करूणा सागर" पद वसंत रागमें गाया जाता हैं।

- आजसे नित्य ग्वालसे संध्यार्ति तक झांझ समाज सहित कीर्तन होते हैं।
- आजसे वसंत राग शूरू होने के बाद होरीं दंडा रोपणी तक सभी समय सभी पद

वसंत रागमें हि गाये जाते हैं।

- आजसे खेलके दर्शन में डोलतक नित्य प्रथम आलापचारी बोली जाती हैं।

- खेलमें आलापचारी के बाद कुंज एकादशीके अगले दिन तक नित्य प्रथम श्रीगुसांईजी रचित अष्टपदी "हरि रिह व्रजयुवती" सतसंगे हि गाई जाती हैं। किसी घरमें श्रीनाथजी के पाटोत्सव के अगले दिन तक हि गाई जाती है।

- पलनाके समय प्रथम "प्रेंख पर्यंक शयनम्"पद वसन्त रागमें और अन्य तीन पद धमारकी पुस्तक में लिखे हुअे पलनाके पद मे से गाये जाते हैं।

होरी दंडा ....(माध्र शु.१५)

आज नक्षत्रानुसार सुबह या सायं होरी दंडा रोपणी होती है। होरी दंडा रोपणी के बाद धमारका प्रारंभ होता है। होरी दंडा रोपणी समय "धोष नृपति सुत गाईअे"

"वसन्त ऋतु सुख खेलिये आयो फागुनमास" "तुमचलो सबैमिलि" इत्यादि धमारमें से एक सुबह होतो बिलावल रागमें और सायं होतो गौरी रागमें गाया जाता है। आजसे चार रागोमें धमार शुरू होती है।राजभोग में बिलावल एवं धनाश्रीमें,और सायं गौरी एवं कल्याण रागकी धमारें गाई जाती है। कहीं कहीं आशावरी टोडी सुधराई रागकी भी धमारें शुरू होती है। विशेष कर ईन दिनों बालकोंके जन्मदिन पर बधाई गान वसंत. धनाश्री के साथ साथ इन रागोंमें होता है।

श्रीनाथजीका पाटोत्सव (माध-व्रज फागुन कु.७) आजसे सभी राग खुल जाते है, विशेष कर सारंग रागकी धमार आजसे हि शुरू होती है। आजके दिन गोस्वामी बालकोंके घर राजभोग में भीतर खेल या तिलक समय या दर्शनमें आशावरी रागमें "धन धन नंद यशोमति धन्य श्री गोकुल गाम" पद विशेष रूपसे हर घरमें गाया जाता है

राजभोग आये "या गोकुलके चोंहटे रंगराची ग्वाल" ओर राजभोग

खेलमें गुलाल उडते समय या कहीं आरती के बाद सुघराई रागमें "फगुवाके मिस छलबल लालको"पद खास गाया जाता है। आजसे शयनमें कुंज एकादशी के अगले दिन तक नित्य आरती आने तक कल्याण रागमें "श्री गौवर्धन राय लाला पद" कहीं कहीं गाया जाता है। मान पोढवेमें होरी के पद गाये जाते हैं।

= आजसे शयन दर्शन में नित्य झांझ समाज बजे।

=खेलमें धमार के कीर्तन के साथ डफ, चंग, उपंग, किन्नरी इत्यादि विशेष वार्जित्र बजाये जाते हैं।

=आजसे डोल तक सभी रागकी धमारें समयानुसार गाई जाती हैं।

=आज से कहीं कहीं रसिया गाने भी शूरू हो जाते हैं।

होलाष्टक (फागुन शु.८)

आजसे होलाष्टक प्रारंभ होताहै। आजसे गारी के पद शुरू होते हैं। गोविन्दस्वामी की गारी आरती के बाद गाई जाती है। शृंगार औसरामें भी गारी के पद गाये जाते हैं। आजसे होरीतक राजभोग एवं शयनमें आरतीके बाद होरीके खयाल और रसिया गाये जाते हैं।

बगीचा नोम (फागुन शु.९)

राजभोग आये कुंज भावकी धमार गाई जाती है। बगीचामें पधारे तब वसंत काफी रागमें आलापचारी बाद त्त त्त घर की प्रणाली अनुसार पद गाये जाते है। कहीं कहीं आजही राजभोग खेलमें अष्टपटी बधं होती है। और डोलके पद शुरू होते हैं।

आरती के बाद सुघराई में "फगवाके मिस छलबल" पद गाया जाता है।

कुंज एकादशी (फागुन शु.११)

वैसे आज से हि खेलमें अष्टपदी "हरी रिह व्रजयुवती शतसंगे" बंध होती है। खेलमें आलापचारी के बाद डोलके पद शुरू होतेहैं। डोल तक यही क्रम रहता है। गुलाल उडाने के समय या आरती के बाद प्रायः "फगुवा के मिस

छलबल" पद सुघराईमें गाया जाता है। अन्य समय धमारें गाई जाती है। शयनमें दो पद डोलके गाये जाते हैं।

होरी उत्सव (फागुन शु.१५)

आज पुन्यों एवं होरी भावकी धमार गाई जाती है। खेलमें डोलके पद. आरती उतरे तब-"पहोप वृष्टि होत. डोल झुलत है. "डोल झुलत है विहारी.विहारीन" इत्यादि पदोमें से एवं "फगुवाके मिस छलबल लालके" इत्यादि पद और भोग आरती में यह पद प्रायः गाया जाता है ...."कछुक दिन और रह्यो व्रजमें होरी हैं।"

डोलोत्सव (फा.कृ-व्रजचैत्रंकृ -१)

डोलोत्सवके दिन मंगलासे राजभोग तक धमार गाई जाती है। डोल अधिवासन समय राग धनाश्री में आलापचारी गाई जाती है। डोलमें प्रभु पधारे तब "अरी अी चल बेग छबीली" इत्यादि पद राग धनाश्री में गाया जाता है। दर्शन खुले तब डोलके पद, सभी खेल (चारो खेलके दर्शन) में देवगंधारमें पद शुरू होकर अन्य रागोंमें पद गाये जाते हैं।

चोथे खेलमें आरती आने पर "डोल झुलत प्रिय प्यारी पहोप वृष्टि होय" या "डोल झुलत प्यारो लाल बिहारी पहोप" इत्यादि में से पद गाया जाता हैं। आरती के बाद देवगंधारमें "खेलत दोउ अनुरागे" और गोस्वामी बालकोंको खेलावे तब "खेलत वसंत वर विठ्ठलेश" और उपरना बांटे तब "नंदरायके घर मांगन फगुवा आई" (बिलावलकी धमार) पद बाद "खेले फाग अनुराग भरे दोउ.युवती जनदेत आशिष" इत्यादि के पद गाये जाते हैं।

=पांडे के. प्रोहित के एवं समधिन इत्यादि पद फा.शु.१० से श्रृंगार औसरा राजभोग आये, शयन भोग आये, तब कभी कभी गाये जाते हैं।

निकुञ्जलता बेटीजी
सूरत.बड़ौदा.मुंबई

निकुंजलता बेटीजी

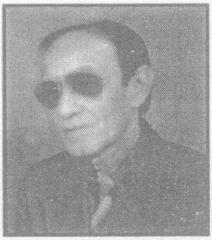

॥ श्री हरिः ॥

आदरणीय वैष्णव वृंद

सादर भगवत स्मरण

(पांचवे वर्षकी किताब आपके समक्ष प्रस्तुत करने में करीबन ३(तीन) सालका विलंब हो गया है, उसके लिये क्षमा चाहते हैं ।)

शास्त्रो ने, तथा परिषद के संस्थापित आचार्यो ने, तथा प्रथम पीठाधीश्वर नि.ली.पू.पा.गो. १०८ श्री प्रथमेशजीनेभी कहा है । कि "संघो शक्ति कलौ युगे", वैष्णवो ये, आं.रा.पु.वै.परिषद आपकी अपनी संस्था है, इसलिये इसके साथ संगठीत होकर इसको अहंता ममता के वाडावाद से विभाजीत न होने देकर दूर रखना है, बाहरी लोगो के द्वारा अपने संप्रदायपर होने वाले आक्रमणो से बचाने के लिये एवं प्रतिकार करनेके लिये संगठित होकर गुणानुवाद द्वारा प्रभु को प्रसन्नकरने के लिये नोटेशन्स के साथ राग, ताल - लय के साथ कीर्तन सीखकर प्रभुसेवा मे ऋतु अनुसार एवं समयानुसार इसका विनियोग करें और परिषदको तन मन धन से सहयोग करें । यही प्रार्थना ।

सेक्रेटरी

श्री. के. अेन. शाह

आं.पु.वैष्णव परिषद

॥ श्री हरिः ॥

॥ आमुख ॥

पू. पा. नि. ली. गो. १०८ तिलकायतजी श्री गोविन्दरायजी महाराज, नि. ली. गो. १०८ श्री मुकुन्दरायजी महाराज, परिषद पिता पू. पा. नि. ली. गो. १०८ श्री प्रथमेशजी रणछोड़ाचार्यजी महाराज, एवं पद्मभूषण पू. पा. गो. १०८ श्री गोकुलोत्सवजी महाराज आदि आचार्यो द्वारा वैष्णवो को नोटेशन्स के साथ ही कीर्तन सिखाने का आग्रह क्यों था ?

आजसे बहुत वर्षो के पहेले श्रीनाथद्वारा में श्री जी के मंदिर में जो कीर्तन गाये जाते थें, उनकी रेकॉर्डींग करने के लिये म्युझीक के डायरेक्टरो की एक टीम दिल्ली से श्रीनाथद्वारा आयी थी, कारण कि उनकी ऐसी मान्यता थी, के ध्रुपद धमार शैली पुष्टि मार्ग के मंदिरो में यथा योग्य रीति से प्रचलित है, इससे श्री तिलकायत जी की गैर हाजरी में, उस समय जो कीर्तनीया कीर्तन करते थे उनका कीर्तन रिकॉर्ड किया, लेकिन उनको इस गान से सन्तोष नही हुआ, उनका मानना था, कि ये कीर्तन गान शास्त्रीय स्टॅडंर्ड का (To the Standard) नही है।

इस बात की जानकारी जब तिलकायतजी को हुई, तब आप श्री ने अन्य आचार्यो के साथ विचार, विमर्श किया और स्वरलिपि सहित कीर्तन गान सिखाने का एकमत से निर्णय लिया।

उसके अनुसार नि.ली.पू.पा.गो. १०८ तिलकायत श्री गोविन्दरायजी, नि.ली.पू.पा.गो. १०८ श्री मुकुन्दरायजी, प्रथम पीठाधीश्वर नि.ली.पू.पा.गो. श्री प्रथमेशजी तथा पद्म भूषण पू.पा.गो.१०८ श्री गोकुलोत्सवजी आदि

आचार्यो ने शास्त्रीय प्रणाली से राग, ताल, लय और नोटेशन्स के साथ कीर्तनो को सिखाने की प्रथा शुरु की, पू.पा.गो.१०८ श्री गोकुलोत्सवजीने तथा नि.ली.पू.पा.गो. १०८ श्री मुकुन्दरायजीने अथाक परिश्रम करके नोटेशन्स के साथ पुस्तके छपवायी, उनका वितरण भी किया और प.भ. श्री बापोदराजी एवं प.भ. श्री मुरारी भाई, आदि कीर्तनीयाओ को नोटेशन्स के साथ ही सीखाने को कहा पर उन्होंने उसपर अमल नही किया, सब अपनी अपनी रीत से मौखिक शीक्षण ही देते रहे।

(वर्षो पहेले चंपकलाल नायकजी ने नोटेशन्स के साथ पुस्तके छपवाई थी।)

बादमें पू.पा.नि.ली.गो. १०८ श्री प्रथमेशजीने स्वयं के सेवक कीर्तनकार श्री जमना प्रसाद जी को नोटेशन्स के साथ कीर्तन गान सिखाने का आग्रह किया, परंतु उस समय वह सर्विस करते थे इस कारण वह तुरन्त इस बात पर अमल नही कर सके, और तीन वर्ष तक यह कार्य नही हो पाया, जब महाराज श्रीने दूसरीबार उनको आज्ञाकरी तब आपश्री की हाजरी में ही १९८८ की रथयात्रा के दिन से स्वर लिपि के साथ कीर्तन सिखाने की शुरुआत की, सप्ताहमें दो दिन कीर्तन सिखाया जाता था, जब एक वर्ष पूरा हुआ तो श्री प्रथमेश जी के सेवक जो शास्त्रीय संगीत में प्रवीण थे, श्री केशवदेव जोषी उनके द्वारा उनकी संस्था के नाम से वैष्णवो की परीक्षा ली जाती रही, और प्रमाण पत्र भी १९९७ तक हर वर्ष दिये गये बादमें संयुक्त प्रमाण पत्र दिये जाने लगे जिसकी एक एक प्रति भी इसके साथ संलग्न है।

यह क्रम लगभग ९ वर्ष तक चलता रहा, और श्री वल्लभ कृपा कीर्तन मंडल (आं.रा.पु. वैष्णव परिषद् द्वारा स्थापित कीर्तन विभाग) के विद्यार्थीओ ने सन १९८९ से १९९७ तक परीक्षाऐं दी और प्रमाणपत्र भी प्राप्त किये।

दरमियान आं. रा. पु. वैष्णव परिषद ने षडरितुओं की मंगला से लेकर शयन तक की केसेटो और पुस्तिकाऐं प्रकट की थी। (आचार्यश्री ओंकी इच्छा और आज्ञा को पूर्ण करने की भावनासे)

पश्चात नोटेशन्स के साथ कीर्तन की पुस्तिकाए एवं केसेट सहित अभ्यास क्रम शुरु करने का निर्णय लिया जिसकी तैयारी भी शुरु कर दी थी।

तभी श्री गुँसाईजी चेरीटेबल ट्रस्ट की संस्थापिका पू.पा. श्री निकुंजलता बेटीजी ने इस पंच वर्षीय अभ्यास क्रम योजना में अंशात्मक सहकार देने की इच्छा दर्शायी, जिसकी जानकारी श्रीमती नैनाबेन निर्मलभाइ द्वारकादास द्वारा परिषदको दी गयी, परिषदने भी इस बात को सहर्ष स्वीकार करली, और इस प्रकार श्री हरि गुरु वैष्णवो के सहकार से ही यह पंच वर्षीय कार्यक्रम हमने पूर्ण किया है। जिसका हमे बहुत संतोष है।

कीर्तनगान करने में शास्त्रीय संगीत के रागो का ही आधार लेने में आता है। स्वरलिपि के कारण रागके स्वर बहुत आसानी से सिखनेवाले के दिमाग में आ जाते है। स्वरलिपि के कारण ही राग के स्वर शुद्ध रीति से गाये जाते है। इस कारण कीर्तन रस का अनोखा आनंद प्रभुको प्रसन्न करने में आता है। इन कारणो को ध्यान में रखकर, स्वरलिपि सहित ही कीर्तन प्रशिक्षण की पंचवर्षीय अभ्यास क्रम की योजना बनायी गयी थी। इसका लाभ लेकर प्रत्येक वैष्णव प्रभु के सन्मुख ऋतु अनुसारऔर समयानुसार रागसे लयबद्ध ताल द्वारा कीर्तन गान करके प्रभु प्रसन्नता जरुर प्राप्त कर सकेंगे ! ऐसी अभिलाषा.......

उपाध्यक्ष

श्री बटुकभाई शाह (आ.पु.वै.प)

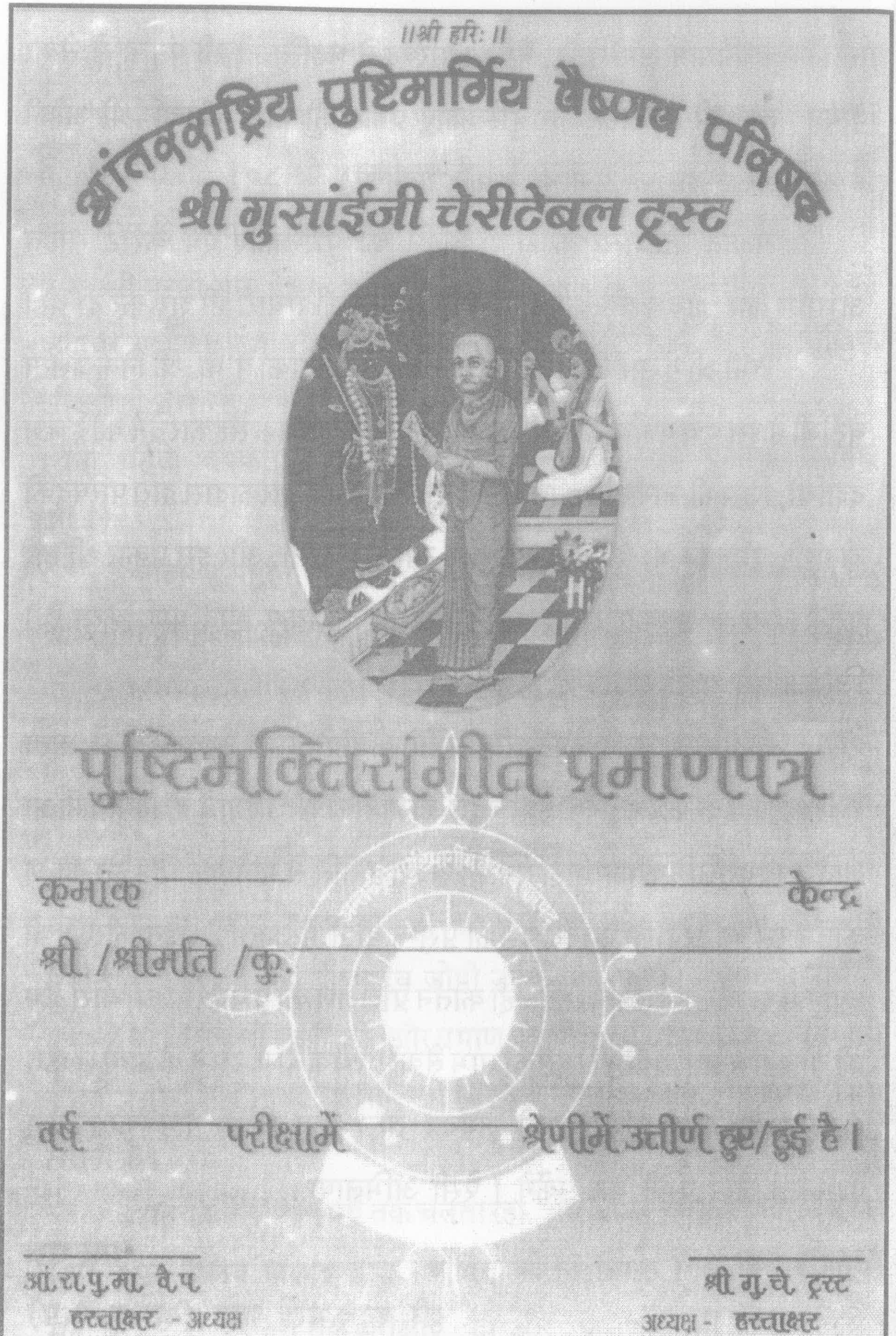

||श्री हरिः ||

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गिय वैष्णव परिषद

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

पुष्टिभक्तिसंगीत प्रमाणपत्र

क्रमांक ________ ________ केन्द्र

श्री /श्रीमति /कु. ________________

वर्ष ________ परीक्षामें ________ श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए/हुई है ।

आं.रा.पु.मा. वै.प
हस्ताक्षर - अध्यक्ष

श्री गु.चे. ट्रस्ट
अध्यक्ष - हस्ताक्षर

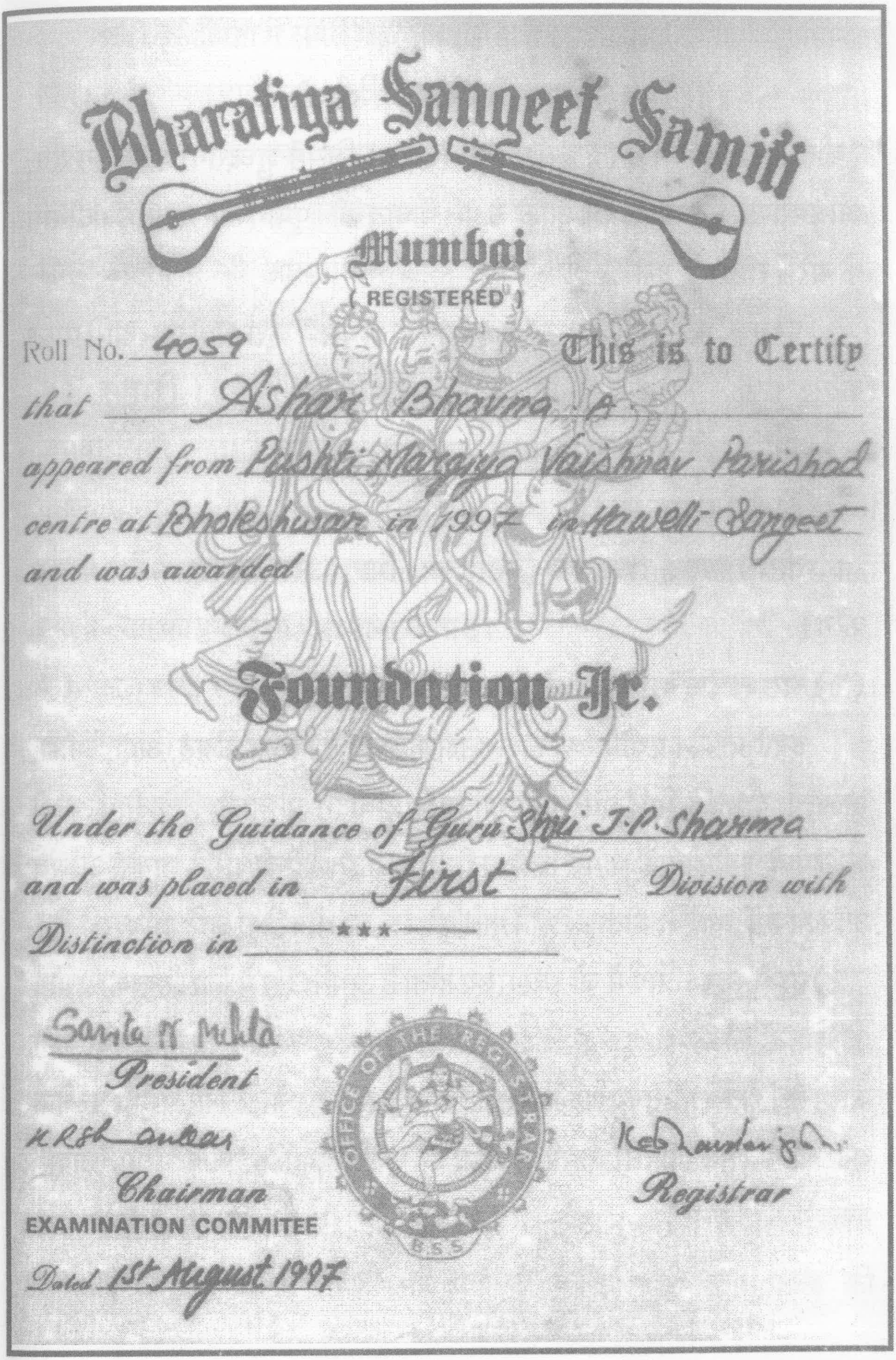

Bharatiya Sangeet Samiti

Mumbai

(REGISTERED)

Roll No. 4059 This is to Certify

that Ashar Bhavna B

appeared from Pushti Margiya Vaishnav Parishad

centre at Bholeshwar in 1997 in Haweli Sangeet

and was awarded

Foundation Jr.

Under the Guidance of Guru Shri J.P. Sharma

and was placed in First Division with

Distinction in ——— * * * ———

Sarita N Mehta
President

K R Shankar
Chairman
EXAMINATION COMMITEE

Registrar

Dated 1st August 1997

|| श्री हरिः ||

संगीत विषयक जानकारी

"कीर्तन -प्रवीण" में हमने रागों के भेद (प्रकार) जिसमें शुध्दराग, छायालग राग, आश्रयराग, संधिप्रकाश राग आदि के बारे में बात की। पूर्वांग और उत्तरांगवादी राग के बारे में सीखा ।

पुस्तक " कीर्तन-विशारद" में हम राग के ही बारे में कुछ आगे जानकारी प्राप्त करेंगे।

सबसे पहले राग लक्षण के बारे में बात करेंगे।

दूसरा राग रंजक स्वरो का उपयोग।

तीसरा स्वर और समयकी द्रष्टिसे राग विभाग और राग इसके बारे में बात करेंगे।

(१) राग लक्षण यानि राग के नियम : -

हमारे प्राचीन ग्रंथोमें राग के दस लक्षण बताये हैं। जैसे कि ग्रह, अंश, न्यास, अल्पत्व, बहुत्व इंत्यादि। राग नियम में वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, इत्यादी का समावेश भी होता है। हमारे लिये वादी-संवादी इत्यादी के बारे में जानना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि कीर्तन सीखने वाले को, राग का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

१) वादी स्वर : राग में जो स्वर मुख्य होता है अर्थात राग में जिस स्वरका प्रयोग अन्य स्वरों की अपेक्षा एक से अधिक बार होता हो वह स्वर राग का वादी स्वर कहा जाता है। राग रूपी राज्य का वह राजा माना जाता है। वादी स्वर पर ही प्रत्येक राग की विशेषता निर्भर रहती है इसलिये इस स्वर को "जीव" या "अंश" स्वर भी कहा जाता है।

यह स्वर ही राग में सबसे महत्वपूर्ण होता है। कभी कभी दो रागों में समानता होने पर भी केवल वादी स्वर की भिन्नता के कारण राग बदल जाते हैं। जैसे 'भूपाली' और 'देशकार' में स्वर समान होने पर भी वादी स्वर की भिन्नता के कारण ही दोनों रागों का स्वरूप बदल जाता है। वादी स्वर के कारण, राग का समय जानने में भी आसानी हो जाती है। इसीलिये कहा है की

"प्रयोगे बहुलः स्वर वादी राजाडुत्र गीयते।"

२) **संवादी :** वादी स्वर से कम , लेकिन राग में लगने वाले अन्य स्वरों से ज्यादा लिया जाता है वह राग का संवादी स्वर है। वादी के बाद इसी स्वर का महत्व होता है। वादी-संवादी-स्वरों का संबंध भी बडा मधुर होता है। वादी स्वर से चौथा स्वर संवादी होता है। अगर वादी स्वर राग का राजा है तो संवादी स्वर को राग का प्रधान या मंत्री माना जाता है।

३) **अनुवादी स्वर :** वादी-संवादी के उपरांत राग में जितने भी स्वर लगते हैं। उसे अनुवादी स्वर कहते हैं। इन स्वरों को राग के अनुचरों की उपमा दी गई है।

४) **विवादी स्वर :** साधारणतया जो स्वर राग में वर्जित है उसे विवादी स्वर कहते है। विवादी का अर्थ वास्तव में " बिगाड पैदा करने वाला " ऐसा होता है। अर्थात ऐसा स्वर जिससे राग का स्वरूप बिगड सकता है। इसिलिये इस स्वर को राग का "दुश्मन" समझा जाता है।

फिर भी यदी कुशलतापूर्वक कणके रूप में इस स्वर का प्रयोग कभी कभी किया जाय तो इससे राग की रंजकता बढ़ सकती है।किन्तु ऐसा प्रयोग करने में अत्यंत कुशलता दिखानी पड़ती है नहीं तो राग के स्वरूप को हानि हो सकती है।

५) **राग की पकड :** राग में लगने वाले स्वरों का छोटा मुख्य स्वर समुदाय जिससे राग पहचाना जा सके। उसी को राग की पकड़ कहते है। पकड़ को

राग का मुख्य अंग भी कहा जाता है, जो राग का सूचक होता है ।अच्छा कलाकार पकड़ के इस स्वर समुदाय को गायन-वादन में बार बार दिखाकर राग का स्पष्ट रूप व्यक्तकर देता है ।

(२) राग लक्षण की आवश्यक जानकारी के बाद अब हम, राग की रंजकता या सुंदरता को बढ़ाने में कौन से स्वरों का कैसे प्रयोग किया जाता है वह देखेंगे। इसमें वक्रस्वर कणस्वर मींड आदिका समावेश होता है ।

राग रंजक स्वरों का उपयोग

१) वक्र स्वर : गायन या वादन में किसी एक स्वर तक जाकर फिर पीछे वाले स्वर पर लौटकर अगले स्वर पर जाया जाता है, तब जिस स्वर से लौटते हैं, उस स्वर को "वक्र स्वर" कहा जाता है ।उ.तौर पर, "प ध नी ध सां" यहां "नी" स्वर वक्र है।

रागों में जो स्वर वक्र होते है, उनके वक्रत्व का ध्यान न रखने से राग की सुंदरता और शुद्धता दोनों को हानि होती है।

२) कण स्वर : किसी भी स्वर को गाते-बजाते समय, उसके आगे या पीछे के किसी स्वर को, तनिक छूलें यानी स्पर्श करे तो, उस स्वर को "कण" स्वर कहते है। उ.त. सां रें - यहां रें का स्पर्श करके सां पर वापस जाना है, तो यहां "रें" स्वर "सां" का कण स्वर कहा जाता है।

३) मीड : किसी भी एक स्वर से आगे के या पीछे के दो, तीन या अधिक स्वरों पर, ध्वनि को बिना खंडित किए, गाने या बजाने को "मीड" कहते है । मीड "⌒" इस चिन्ह द्वारा दीखाई जाती है। उ.त. " प ध नि सां" मे "प" से लेकर "सां" स्वर तक की मीड है। इसका मतलब यह हुआ की **प से सां** तक जाने में ध नि स्वरों को बड़ी कोमलता से गाया-बजाया जाय जिससे राग की रंजकता बढ़े।

राग लक्षण में राग की जाति का भी समावेष होता है जिसके बारे में हम पहले बात कर चुके हैं।

राग के इन लक्षणों का खयाल रखने से राग की पहेचान अच्छी तरह से हो जाती है और उसे गाने-बजाने में आसानी रहती है।

(३) अब हम देखेंगे समय और स्वर की दृष्टि से रागों के तीन वर्ग : -

उत्तर हिन्दुस्तानी पद्धति में, स्वर और समय को ध्यान में रखते हुए, रागों को तीन विभागों में बाँटा गया है।

१ संधिप्रकाश राग-यानि "रे" "ध" स्वर कोमल वाले राग।
२ "रे" "ध" शुद्ध स्वर वाले राग।
३ "ग" और "नी" कोमल स्वर वाले राग।

उपर दिये हुए तीन वर्गो में से, संधिप्रकाश राग याने "रे-ध" कोमल स्वरवाले रागों का समावेश प्रथम वर्ग में होता है। चतुर्थ वर्ष के पुस्तक में हमने "संधि प्रकाश" के बारे में उल्लेख किया था।

संधि यानि मेल. दिन और रात की संधि याने मेल होने के समय को, संधिकाल कहते हैं। इस समय में न तो पूरा दिन होता है, न पूरी रात। इसी समय को "संधिप्रकाश की वेला" कहा जाता है। इस समय में जो राग गाये-बजाये जाते हैं उसे ही संधिप्रकाश राग कहते हैं। चौबीस घंटो में ऐसी संधि दो, बार आती है।

१ सूर्योदय से पहले
२ सूर्यास्त से पहले

इसलिए संधिप्रकाश रागों के भी दो भाग माने गये है।

(१) प्रातःकालीन संधिप्रकाश राग समय सुबह ४ से ७

(२) सायंकालीन संधिप्रकाश राग समय दिन में ४ से ७ बजे तक गाये जाते हैं ।

संधिप्रकाश रागो में कोमल रे-ध स्वरवाले रागों का समावेश होता है। किन्तु इन रागों में "ग" स्वर शुद्ध होना जरूरी है। नहीं तो वह तीसरे वर्ग में स्थान प्राप्त करेंगे।

संधिप्रकाश रागो में "मध्यम" स्वर भी अति महत्वका होता है । इन रागो में तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है जैसे प्रातःकालीन राग रामकली, संध्याकालीन, रागपूर्वी ।

(२) दूसरा वर्ग :- "रे-ध" शुद्ध स्वर वाले राग :-

इस दूसरे वर्ग के रागों का, गाने-बजाने का समय, संधिप्रकाश काल के बाद आता है। इसलिये दूसरे वर्ग के रागों का समय भी चौबीस घंटों में दो बार आता है।

१ सुबह ७ बजे से लेकर सुबह १० बजे तक।

२ शाम ७ बजे से लेकर रात को १० बजे तक।

इसमें शुद्ध "रे-ध" स्वरवाले कल्याण, खमाज, और बिलावल थाटके राग गाये जाते है। दूसरे वर्ग के रागों को गाते-बजाते समय ये याद रखना चाहिये कि

१ इन रागों में भी ग स्वर शुद्ध होना चाहिये।

२ सुबह गाये जाने वाले इन वर्ग के रागों में "मध्यम"स्वर शुद्ध होता है जैसे की बिलावल, इत्यादि ।

शाम ७ से १० बजे तक गाये जाने वाले रागों में "तीव्र मध्यम" की प्रधानता होगी।

(३) तीसरे वर्ग के राग :- कोमल "ग - नि" वाले राग

१ इस वर्ग के गाने बजाने का समय सुबह १० से ४ बजे तक.

२ रात्रि १० बजे से लेकर सुबह ४ बजे तक.

इस वर्ग में तोड़ी, आसावरी, काफी वगैरे थाट के राग गाये-बजाये जाते है।

इस वर्ग के रागो कों पहचानने में खास ध्यान रखने योग्य बात है

१ इस वर्ग के रागो में 'ग' कोमल होना अत्यंत आवश्यक है.

(२) 'रे-ध' स्वर शुद्ध भी हो सकते हैं और कोमल भी।

रागों का समय और स्वर की दृष्टि से इस तरह विभाजन किया जाता है।

उत्तर भारतीय संगीत में जैसे अष्टप्रहर के समय का विभाजन रागों को गाने-बजाने के लिये किया है, वैसे ही हमारे पुष्टिप्रभु की सेवा में, इन रागों को सम्मिलित किया गया है। पुष्टिप्रभु को जगाने से लेकर, पौढ़ाने तक की, अष्टयाम सेवा में , इन रागो में कीर्तन गाये जाते है । जिसका ज्ञान हमें पहले पुस्तको में प्राप्त हुआ है । अतः उसका पुनरावर्तन अनावश्यक है।

राग और रस

अंत में हम राग और रस-संबंध की चर्चा करके राग की जानकारी पूर्ण करेंगे ।

हमारे साहित्य में नव रसों का वर्णन है । भारतीय संगीत में, साहित्य

के इन नवरसों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। साहित्य के नवरस इस प्रकार दर्शाये गये है। शृंगार, करूण, हास्य, वीर, अद्‌भुत, रौद्र, बिभत्स, भयानक तथा शांत रस।

ये नवरस, जीवन के सूक्ष्म रस है । और संगीत का नाता भी मानव की आंतरवृत्तियों के साथ, उनके मनोभावों के साथ, जुडा हुआ है । अतः ये सिद्ध हो जाता है कि, भारतीय रागों का, रस के साथ संबंध होना स्वाभाविक है ।

यदि हम रस का साधारण अर्थ करे, तो हमें अनुभव होता है की, प्रत्येक राग का अपना एक विशेष वातावरण है । निश्चित राग-गाने बजाने से, निश्चित वातावरण तैयार होता है, जिससे अपने आप रस की निष्पत्ति होती है। जिसका असर हमारे हृदय की गहराईओं को छू जाता है। एक सच्चा कलाकार, अपनी कला द्वारा ऐसा वातावरण और उससे जुड़ा हुआ रस निष्पन्न करके, श्रोताओं के हृदय को भावविभोर कर देता है।

ऐसे तो प्रत्येक राग के साथ, कोई न कोई रस जुड़ा हुआ माना जाता है, फिर भी संगीत में तीन-चार रसों को ही प्राधानता मिली है। जैसे कि श्रृंगार, वीर, करूणा, शांत इत्यादि।

हमारे पुष्टिसंगीत में शृंगार रस की मात्रा, प्रचुर प्रमाण में पायी जाती है। किन्तु साथ में शांत, वीर और करूण रस को भी अभिव्यक्त किया है। कई पदो में विप्रलंभ शृंगार, तो कई पदों में संयोग शृंगार रस की झलक पायी जाती है। एक बात अवश्य याद रखनी चाहिये की, ये शृंगार रस के पीछे लौकीक प्रेम का भाव नहीं है। इन पदों द्वारा जीवका-शिव के साथ, अंशका

अंशी के साथ आधिदैविक मिलन, और इस महामिलन से अचिन्त्य आनंद का ही संकेत मिलता है। इनके कुछ उदाहरण हम देखने की कोशिश करेंगे ।

राग 'ललित' और 'मालकौंसके' शृंगार रस के ये उदाहरण है।

"भोर भये मुख देख लजाने आज अति रेन उनीदे हो लाल-----"

सुरदासजी का ये संयोगशृंगार का पद है, जो ललित राग में है। दूसरा, संयोगशृंगार का राग ललित में ही श्री कृष्णदासजी का ये पद है ।

"कहो तुम साँची कहां ते आये हो भोर भये नंदलाल----------"

तो भक्त कवि नंददासजी का ये पद-

"देखन न दीनी बैरिन पलके - ये विप्रलंभ श्रृंगार का पद राग गौरी में है।

तो राग सिंदूरा में वीररस का ये अति प्रसिद्ध पद है----

"आज रघुपति चढ़े लंकगढ़ लैन को -----------"

राग मालवका ये पद, अद्‌भुत रसकी अनुभूति कराता है ।

"जै जै जै मोहन बलवीर, अद्‌भुत रस गावत मुनि कीर-------"

इन उदाहरणों से हमें ज्ञात होता है कि, हमारे कीर्तनो में भिन्न भिन्न रस की निष्पत्ति कराने वाले असंख्य पद है। इससे येही प्रमाणित होता है कि राग और रस का एक अतूट संबंध है, अविभाज्य संबंध है ।

|| श्री हरिः ||

संगीत शास्त्र

संगीत को सुमधुर बनाने के लिए अलंकारों के अलावा कुछ अन्य क्रियाऐं भी हैं, जिनके प्रयोग और अभ्यास से, संगीत सुमधुर लगेगा । यदि संगीत सुमधुर है, तो प्रभू का कीर्तनगान अतिमधुर होगा इसीलिये हमारे प्रभू को "मधुराधिपते" कहा गया है ।

मीड: एक स्वर से दूसरे स्वर तक बिना विच्छेद किये गाने को मींड कहते हैं।

जैसे : रे प या सं ध

कण: किसी मूल स्वर के साथ दूसरे स्वर का स्पर्श करना ही कण कहलाता है।

जैसे : $\overset{\text{प}}{\text{स}}$

आलाप : आलाप तीन प्रकार के होते हैं।

स्वरालाप : जो आलाप केवल स्वरों में लिये जाते हैं उन्हें स्वरालाप कहते हैं।

जैसे : सं - सं नी सं - - - रें नी रें सं ध नी प-

आलाप : जो आलाप आ कारादि में लिए जाते हैं उन्हें आलाप कहते हैं।

जैसे : सं - सं नी सं - - - रें नी रें सं ध नी प -

आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

बोल आलाप : पदों के बोलों को स्वरों में गाने को ही बोल आलाप कहते हैं।

जैसे : सं - सं नी सं - - - रें नी रें सं ध नी प -

मा - धौ - सों - म न मा - न्यौ - मे रौ मा ई

इसी प्रकार तानों को भी लिया जाता है

स्वरतान : जो तान केवल स्वरों में ली जाती हैं उन्हें स्वरतान कहते हैं।

जैसे : सरे मप धनी संनी धप मप मग रेस

बोलतान : पदों के बोलों को स्वरों में गाने को ही बोलतान कहते हैं।

जैसे : सरे मप धनी संनी धप मप मग रेस

मा- धौ- सों- मन मा- न्यौ- मेरौ माई

आलापतान : जो तान आ कारादि में ली जाती हैं उन्हें आलापतान कहते हैं।

जैसे : सरे मप धनी संनी धप मप मग रेस

आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ

|| श्री हरिः ||

"ध्रुवपद" या "ध्रुपद" गायन शैली

हमारे पुष्टि संप्रदाय में, पुष्टि प्रभु के सुख के लिये, तथा अपनी चित्तवृतिओंका प्रभु सेवा में निरोध करने के लिये, जो राग-भोग-श्रृंगार सेवा प्रणाली है, इसमें राग यानी, पुष्टि भक्ति संगीत को, भगवत् सेवा का मुख्य अंग समझा गया है।

पुष्टि संप्रदाय का यह संगीत, ध्रुपदगान शैली या ध्रुपदअंग पर आधारित है। "ध्रुवपद" शब्द का अपभ्रंश रूप "द्रुपद" है। ध्रुव का अर्थ होता है अचल। अर्थात ध्रुपद गायकी अपरिवर्तनशील तथा नियमबद्ध है।

यह गायन शैली अतिप्राचीन है। विद्वानों ने ध्रुपदगान को अन्य सभी गायन शैलीओं से श्रेष्ठ माना है।

यह शैली पिछली शताब्दी के आरंभ तक अति प्रसिध्द थी, किन्तु धीरे धीरे समय के प्रवाह के साथ, इस ध्रुपदगान पध्दति के अलावा, खयाल, ठुमरी, टप्पा, दादरा आदि प्रकार भी लोकप्रिय होते गये। फिर भी ध्रुपदगान की धारा मंदिरो में और राज्यालयों में अविच्छिन्न रूप से बहती रही।

आज हमें ध्रुपदगान शैली का जो रूप उपलब्ध होता है, उसका विशेष प्रचलन, राजा मानसिंह तोमर ने किया और बादशाह अकबर के समय में ध्रुपदगान शैली का सुवर्णयुग माना जाता है। जहाँ तक पुष्टिभक्ति संगीत का सवाल है, वह भी इसी समय की देन है। अकबर बादशाह के ही समय में, यानी पन्द्रहवीं शताब्दी में, पुष्टिमार्ग के प्रणेता, महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी के अनुयायी, भक्तकवि श्री कुंभनदासजी ने, इस गान शैली में ही, प्रभु सन्मुख प्रथम कीर्तनगान किया था।

आजकल ध्रुपद घराने की गायकी से, अष्टछापीय परंपरा के कीर्तनों की ध्रुपदगायन शैली में कुछ भेद दिखाई देता है। इसका एक कारण ये भी हो सकता है कि, पुष्टिसंप्रदाय में भाव और शब्द पर अधिक ध्यान दिया जाता है, नकि ध्रुपद गायन में आने वाली, दुगुन, तीगुन जैसी विभिन्न लयकारियाँ, गमक, नोम-तोम आदि पर। क्योंकी ये सब करने में, चित्त भगवत् लीलाओं के अवगाहन, भगवद् भाव से विचलित होकर, इन सब बातों में चला जाता है। जबकि हमारा मुख्य उदेश्य, प्रभु को रिझाना है। संगीत ज्ञान को प्रदर्शित करना नहीं। इसलिये हमारी संगीत परंपरा ध्रुपदगान शैली पर आधारित होते हुए भी, कुछ अलग सी दिखाई देती है। पुष्टि प्रणाली में कीर्तनानुसार, मध्यलय में सरल रीति से प्रभुसन्मुख गान करते हैं।

ध्रुपदगान अधिकतर व्रज भाषा में, हिन्दी में और उर्दू में भी होता है। इस गायन शैली में मुख्य तीन रस शृंगार, शांत और वीररस प्रधान रूप से होते है। ध्रुपदगान, चौताल, धमार, सूलताल, चर्चरी, तीवरा, ब्रह्मताल आदि में किया जाता है। और ये सब ताल परवावज पर बजाये जाते है। आजकल ध्रुपदगान के साथ तबला भी बजने लगा है। किन्तु हमारे मंदिरों में अभी तक पखावजकाही प्रयोग किया जाता है।

ध्रुपदगान खयाल गान से अधिक विस्तृत होता है। **स्थायी, अंतरा, संचारी और आभोग** - ध्रुपद गान में ऐसे चार विभाग होते हैं। और इसे आवश्यक समझा जाता है। अष्टछाप परंपरा के पदो में ये चारों का होना अनिवार्य माना जाता है। आजकल ध्रुपदगान में केवल स्थायी और अंतराका ही प्रयोग होता दिखाई देता है।

ध्रुपदगान को भारत का मर्दानी, याने दमदार गाना माना जाता है। इसके गाने में गले और फेंकड़े पर काफी जोर पड़ता है। ध्रुपदगान में भाषा की प्रौढ़ता और गांभीर्य होता है। ख्याल की तरह तान-पलटे, ध्रुपदगान में नहीं होते। नोम-तोम के आलाप से, ध्रुपदगान शुरू होता है। उसमे दुगुन-तिगुन, चौगुन, आड़ी आदि लयकारियाँ होती हैं। गमक होती है।

प्राचीनकाल में ध्रुपदगान करने वाले को कलावन्त कहा जाता था और उनकी विभिन्न वाणियाँ हुआ करती थी, जिनमें चार बानी मुख्य हैं।

१ गोबरहारी

२ ड़ागुर

३ नोहारी

४ खंडहारी

प्राचीनकाल में कृष्ण मतानुसार गौबरहारी बानी, शंकरमत की नौहरी बानी, भरतमत की ड़ागुरी बानी और हनुमतमत की खंडहारी बानी है। किन्तु ये सब बानियों का उद्‌गम कैसे और कहां से हुआ ये चर्चा का विषय है।

कई विद्वान ऐसा मानते है कि बादशाह अकबर के दरबार के चार महागुणी गायक थे।

१ तानसेन

२ ब्रजचंद बाह्मण (ड़ागुर गाँव के निवासी)

३ राजा समोरवनसिंह वीणाकार (खंडहार नामक स्थान के निवासी)

४ श्री चंद राजपूत (नोहार के निवासी).

तानसेनजी गौड़ बाह्मण होने से उनकी बानी का नाम गौड़ीय या

गोबरहारी बानी पड़ गया। इस तरह यह चार विद्वानों के कारण ये चार बानियाँ प्रसिद्ध हुई ऐसा माना जाता है।

पुष्टिभक्ति संगीत में मानने वाले। कहते हैं की, गोबरहारी बानी पुष्टिसंप्रदायकी परंपरा है। जिसका उद्‌गम श्री कुंभनदासजी से हुआ था। "गोवर्धनहरि" नामका अपभ्रंश "गोबरहारी" हो गया। यानी पुष्टिप्रभु की सेवा में जो कीर्तनगान होते थे उसे गोवर्धनहरि की बानी से पहचाना जाता था, जिसमें से अपभ्रंशहो के "गोबरहारी" हो गया। एकमत ऐसा मानते है, तो दूसरा मत माननेवाले ये कहते है की, हमारे यहां दीपावली के त्यौहार में, गोबर का गोवर्धन बनाकर उसकी पूजा की जाती थी। आज भी वैष्णव मंदिरो में ऐसा गोवर्धन बनाकर उसकी विधिवत् पूजा की जाती हैं। उसपर से "गोबरहरि" प्रचार में आया।

इन चारों प्रकार की बानी के अपने अपने लक्षण है। गोबरहारी बानी, शांत और धीर-गंभीर है। इस बानी के ध्रुपद सादे और सरल ढ़ंग से गाये जाते हैं। इसमे स्वरशुद्धि, शब्द उच्चारण, राग शुद्धि आदि की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। स्पष्टता इस वाणी का प्रधान लक्षण है।

ड़ागुरी बानी में, मींड, गमक, घसीट आदि का प्रयोग होता है। लालित्य और सरलता इसके प्रधान लक्षण है। खंडहारी बानी में खंड खंड करके गाने की प्रथा है। इसमें वेग और तरंग अधिक मात्रा में होते है तो नौहारी बानी में, नौ प्रकार से ध्रुपदगान किया जाता है। ये बानी विशेष रूप से रसकी सृष्टि नहीं करती। इस बानी से सिंह की गति का बोध होता है।

इस प्रकार देखाजाय तो गोबरहारी बानी को राजा की, ड़ागुर बानी को मंत्रि की, खंडहार बानी को सेनापति की और नौहार बानी को सेवक की

उपमा दी जा सकती है।

हमारे पुष्टिसंगीत पर गोबरहारी बानी का ही प्रभाव है। इस संप्रदायकी ध्रुपदगान परंपरा में, निश्चित राग एवम् निश्चित भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा अन्य राग वर्ज्य समझे जाते हैं। ध्रुपदगान की भाषा भी व्रज भाषा ही मान्य है।

हमारे यहां ध्रुपदगान की ये परंपरा, श्री कुंभनदासजी से शुरू हुई और श्री हरिरायजी के समय तक तो ठीकठाक चली। इसके बाद न तो कोई नये पद मिले है, न तो अष्टसखाओं जैसे कीर्तनगान करने वाले। फिर भी इस प्राचीन परंपरा को संभालनेका और उसे प्रवाहित रखने का श्रेय, हमारे मंदिरों को खास करके पुष्टिसम्प्रदाय के मंदिरों को ही जाता है।

किन्तु वर्तमान परिस्थिति तो बिलकुल ही शोचनीय है। प्राचीन परंपरा के कीर्तनकारों की संख्या कम हो रही है और अर्वाचीन कीर्तनकार, स्वैच्छिक परिवर्तन करने में लगे हुए हैं। ऐसे समय में प्राचीन शैली का ही आग्रह रखकर, हमारे अमूल्य खजाने को संभालने का हम सबका कर्तव्य बनता है।

|| श्री हरिः ||

ताल विभाग

प्रिय वैष्णवो, ताल के बारे में अगले चार पुस्तको में हम काफी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। हम जानते ही है की गायन-वादन और कीर्तन, जिस आधार पर होते है, उसकी क्रिया ताल से ही नापी जाती है। मनचाहे उतनी देर तक, कोई स्वर गाने से वह कर्णमधुर संगीत नहीं हो जाता। उसके लिये लय और कालमर्यादा अत्यंत आवश्यक है। इस कालमर्यादा के लिये ताल और लय दोनों अति आवश्यक है। इसलिये तो ताल को संगीत का **प्राण** कहा जाता है।

ताल शब्द **'तल'** धातु से बनता है, ये तो हम जानते ही हैं। ताल का मतलब है **स्थिरता** या **आधार**. इससे ये समझा जाता है की सुर के साथ साथ ताल के आधार पर खड़ा संगीत ही कर्णमधुर बन सकता है। बेताला और बेसुरा संगीत नहीं जैसे लोन बिन खाना और ताल बिन गाना।

ताल का गीत के **रस से भी** गहेरा संबंध है। अलग अलग तालों से विशेष रस निष्पत्ति में सहायता होती है।

हमारे अष्टछापीय कीर्तन संगीत पर, उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। उत्तर भारतीय-प्रचलित ताल, जैसे ध्रुवताल, मठताल, रूपकताल, त्रिपुटताल, अठताल, चर्चरीताल इत्यादि उस समय प्रचार में थे। अष्टछापीय कीर्तन साहित्य में प्रायः ये सभी तालों का दर्शन होता है। इससे एक और बात पर भी प्रकाश पडता है कि हमारी कीर्तन संगीत प्रणाली में, ताल का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। मंगलादर्शन के पश्चात-शयन पर्यंत की सभी सेवा में तालयुक्त कीर्तनगान ही होता है।

अधिकतर मृदंग और झांझसे ताल दिया जाता है।

अब हम पुष्टिसंगीत में उपयोगी कुछ तालों के बारे में बात करेंगे। प्रथम है,

१ रूपक ताल

२ चर्चरी ताल

३ तेव्रा ताल

१) **ताल रूपक :-** आधुनिक रूपक ताल का स्वरूप तीव्राताल के समान ही है। प्राचीन कर्णाटकी "त्रिपुट" ताल से उत्तर हिन्दुस्तानी पद्धति में तीव्राताल उत्पन्न हुआ है। ध्रुपदअंग के पदों में तीव्राताल का, तो खयाल गायन में रूपकताल का प्रयोग किया जाता है। यह तबले का ताल है।

हमारी पुष्टिकीर्तन परंपरा में भी रूपक ताल का प्रयोग किया जाता है।

ताल : रूपक मात्रा - ७ खंड - ३

ताली - ४, ६ मात्रा पर और खाली १ मात्रा पर

१	२	३	४	५	६	७
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
	०			X		२

२) **चर्चरीताल** :- चर्चरी ताल की मात्रा १० है। इस ताल का प्रचार आजकल हमारे मंदिरों में झपताल के समान हो रहा है। झपताल और चर्चरी दोनो तालों की मात्रा समान है, किन्तु दोनों के खंड अलग अलग है। झपताल में २,३,२,३ = १० मात्रा तो चर्चरी में ३,२,२,३ =१० मात्रा के खंड है। झप ताल खास कर के तबले का ताल है। जबकि चर्चरी मृदंग पर बजाये जानेवाला ताल है।

चर्चरी ताल के अलावा, मठताल, झ़पताल, सूलताल भी दस मात्रा के ताल है।

ताल - चर्चरी, मात्रा : १०

खंड - ४, ताली : १, ४, ८ मात्रा पर खाली : ६,
मात्रा पर

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धा	गे	किट	धा	किट	ता	किट	धा	गदि	गन
	X			२		०		३	

३) **तीव्रा / तेव्रा ७ मात्रा** :- यह ताल रूपक की ही तरह ७ मात्रा का है और ध्रुपदअंग के पदों में ज्यादातर पाया जाता है। जैसे रूपक तबले का ताल है, तीव्रा पखावज का ताल है।

ताल - तीव्रा मात्रा - ७ खंड - ४

ताली - १,४,६ मात्रा पर, खाली : २, मात्रा पर पखावज के बोल :

१	२	३	४	५	६	७
धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
X	०		२		३	

कीर्तन में ताल की पहचान

कीर्तनों की पुस्तकों में कौन सा पद किस राग में है यह तो दर्शाया गया है लेकिन वह पद किस ताल में है यह नहीं दिया गया इसलिए हम उन पदों का ताल निर्धारित करने के लिये कुछ महत्वपूर्ण नियम यहां पर दे रहे हैं ।

सर्वप्रथम हम त्रिताल में गाये जानेवाले पदों के बारे में बतायेंगे जैसे :-

नातर लीला होती जूनी : इस पद में विद्यमान मात्राओं को गिनें तो वे इस प्रकार होंगी:-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ना	-	त	र	ली	-	ला	-	हो	-	ती	-	जू	-	नी	-
X				२				०				३			

इसमें ह्स्व स्वर के लिये एक मात्रा और दीर्घ स्वर के लिए दो मात्रा इस प्रकार इस पद में १६ मात्राऐं हैं इसलिये सहज ही यह पद त्रिताल में गाया जायेगा । १६ मात्रा के पदों को २० मात्रा में भी गाया जा सकता है लेकिन उसके लिये प्रथम पंक्ति की दो आव्रत्ति और बाकी की पंक्तियों की चार आव्रत्ति करनी होंगी इसे हम झपताल कहेंगे ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
ना	-	त	-	र	ली	-	ला	-	-
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
हो	-	ती	-	-	जू	-	नी	-	-
X		२			०		३		

यदि १६ मात्राओं वाले पदको १४ मात्राओं में अर्थात् धमार ताल में गाना हो तो पहली और आठवी मात्रा में दो दो शब्द लेने हौंगे

१ २ ३ ४ ५ | ६ ७ | ८ ९ १० | ११ १२ १३ १४
ना-त र ली - | ला- | हो-ती - | जू - नी -
X | २ | ० | ३

इसी पद को अर्ध आडा चौताल में भी गाया जा सकता है

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ना-	त	र	ली	-	ला	-	हो-	ती	-	जू	-	नी	-
X	२		३		४		X	२		३		४	

किसी पद में स्थायी, अंतरा में यदि चार चरण होते हैं और चरण के प्रास भी मिलते हैं तो वह पद १२ मात्रा अर्थात् ध्रुपद में ही गाया जायेगा। ध्रुपद में गाने के लिये पद में चार चरणों का होना आवश्यक है यदि किसी पंक्ति में दो आव्रत्ति हैं और वह पद १२ मात्राका है तो स्थाई की उस पंक्ति को दो बार गाना होगा जिससे चार चरण हो जांय।

अंतरे की पंक्ति के और दूसरी पंक्तियों के चार ही चरण होंगे ।

जैसे: वि - ठ्ठ ले - श वि - ठ्ठ ले - श
वि - ठ्ठ ले - श क हि - रे - श्री
वि - ठ्ठ ले - श वि - ठ्ठ ले - श
वि - ठ्ठ ले - श क हि - रे - श्री

जैसे : वे - द र ट त, ब्र - म्हा र ट त, शं - भू र ट त, शे - श र ट त
ना - र द शु क, व्या - स र ट त, पा - व त न हीं, पा - र री जा कौ

इस पद में "त" का प्रास मिल रहा है तथा १२ - १२ के चार चरण भी हो रहैं इसलिये यह पद ध्रुपद में ही गाया जायेगा । किसी अन्य ताल में यह पद गाना उचित नहीं है यदि दूसरी ताल में गाना है तों इस पद को झपताल में गाया जा सकता है :

जैसे : वे द र ट त, ब्र म्हा र ट त, शं भू र ट त, शे श र ट त
ना र द शु क, व्या स र ट त, पा व त न हीं, पा र री जा कौ

होरी धमार के पद अधिकतर धमार ताल में, रास के पद ध्रुपद अथवा झपताल में, मल्हार के ताल आडा - चौताल में तथा बधाई के पद धमार, द्रुत धमार, आडा - चौताल तथा अर्ध आडा चौताल में गाये जायेंगे इसके उपरांत जो पद इन तालों में नहीं बैठते उन्हें अन्य तालों में भी गा सकते हैं यह कीर्तनकार के विवेक एवं अनुभव पर निर्भर करता है ।

॥ श्री हरिः ॥

वाद्य परिचय

संगीत में स्वर और ताल का जितना महत्व है, उतना ही महत्व भिन्न भिन्न वाद्यों का भी है। वाद्यों की संगत के साथ गाया-बजाया हुआ संगीत सोने में सुगंध जैसा होता है।

पाठ्यक्रम की अगली पुस्तकों में हमने तानपूरा, तबला और झांझ के बारे में जानकारी प्राप्त कर ही ली है। इस वर्ष के पाठ्यक्रम में, हम प्रभू की सेवा में बजाये जानेवाले शेष वाद्यों का परिचय दे रहे हैं।

हमारे भारतीय संगीत में अनेक विध वाद्य पाये जाते हैं। इनमें से पुष्टि प्रभू को सुख दे सके ऐसे वाद्यों का उपयोग प्रभू सेवामें किया जाता है। भारतीय वाद्यों को चार विभागों में बांटा जा सकता है। ऐसे ही पुष्टिसंगीत के वाद्यों का भी वर्गीकरण होता है।

इनमें प्रथम है

(१) तंतु वाद्य

(२) सुषिर वाद्य

(३) अवनद्ध या आनद्य वाद्य और

(४) घन वाद्य

वैदिक काल के साहित्य में भी इन चारों प्रकारों के वाद्यों का उल्लेख प्राप्त होता है।

(१) तंतुवाद्य : जिन वाद्यों में तंतु यानि तारों के द्वारा स्वरों की उत्पत्ति

होती है, ऐसे वाद्यों को तंतुवाद्य कहा जाता है। तंतुवाद्य भी दो प्रकार के होते है।

१) ततवाद्य   २) विततवाद्य

तत वाद्य : तत वाद्यो में वीणा, सितार, सरोद, तानपूरा, इकतारा इत्यादि आते हैं। ऐसे वाद्यों को मिजराब या अन्य किसी वस्तु की टंकोर देकर बजाया जाता है।

वितत वाद्य : वितत वाद्यों को गज की सहायता से बजाया जाता है। सारंगी, वायोलीन, इसराज वगैरे का समावेश वितत वाद्यों में होता है।

वैदिक समय में तंतु वाद्य में कर्करीवीणा, कांडवीणा, वारण्य या वाणका उल्लेख मिलता है।

२) **सुषिर वाद्य :** जो वाद्यों को हवा से या फूंक से बजाया जा सकता है, ऐसे वाद्यों को, सुषिर वाद्य कहते है। बंसरी, मुरली, शहनाई, महुवरी, बीना, शंख, चंग, भेरी, हारमोनियम, क्लेरोनेट आदि का सुषिर वाद्य में समावेश होता है। वैदिक समय में बाकुर नामक वाद्य फूंक से बजाया जाता था। तूणव और नांदि नामक वाद्यों का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

३) **अवनध्द या आनध्द वाद्य :** जो वाद्य चमड़े से मढे हुए होते हैं। ऐसे ताल वाद्यों का समावेश अवनद्ध या आनध्द वाद्य में होता है। जैसे कि मृदंग, परवावज, तबला, ढोलक, नगारा, डमरू, ढोल आदि। वैदिक समय में आडंबरी, भूमिदुंदुभि और अधिकतर दुंदुभि का उल्लेख मिलता है।

४) **घन वाद्य :** जो वाद्यो में आधात देकर या चोट देकर, स्वर उत्पन्न किये जाते हैं, ऐसे वाद्यों को घन वाद्य कहते हैं। जैसे जलतरंग, मंजीरा,

खंजरी, घंट, झांझ, करताल, घंटातरंग, वगैरे। वैदिक समय में आधारी नामक घनवाद्यका उल्लेख प्राप्त होता है।

पुष्टिसंप्रदायकी कीर्तनप्रणाली में, नित्य के सेवा क्रम में, जन्म वधाई में, त्योहार-उत्सव के दिनों में, होली के दिनो में, कीर्तनगान के समय, सारंगी, झांझ, पखावज, वीणा जैसे कई वाद्योंका उपयोग किया जाता है। अष्टछापीय परंपरा के पदों में से हमें ऐसे कई वाद्यों के नाम प्राप्त हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर हम नीचे की दो पंक्तियाँ देखेंगे।

१) "बाजत बीन मृदंग बांसुरी अंग चंग भेरी ड़फ झांझ झालर मंजिर--" (कृष्णदास)

२) "बाजत ताल मृदंग झांझ ड़फ शहनाई और ढोल-----(नंददास)

अब हम मुख्य मुख्य शेषवाद्यों का परिचय पाने की कोशिश करेंगे।

(१) वीणा या बीन: यह अति प्राचीन वाद्य है। श्रीनाथजी के सन्मुख जगायवे और पोढ़ायवे में यह वाद्य नित्य बजाया जाता है। सम्प्रदाय की प्रणाली में दो प्रकार की वीणा प्रचार में है।

१) किन्नरी वीणा

२) रुद्र वीणा

श्रीनाथद्वार में जो बीना बजाई जाती है उसको किन्नरी वीणा कहते है। इसमें पांच तार होते हैं। उसमें बाज तार केवल एक ही रहता है। इस प्रकार की वीणा में दो तूंबे होते हैं। इसे बजाने का एक स्वतंत्र तरीका होता है।

रुद्रवीणा में पोले बांस की दांडी होती है। जिस पर दो तूंबे लगाये जाते है। दंड के उपर २२ श्रुतिओं को बनाने वाली १४ सारिका (परदे) रहती हैं। इस प्रकार की बीन कांकरोली में और कुछ अन्य मंदिरों में बजाई जाती हैं।

श्री गुसांईजी वीणावादन में पारंगत थे। लेकिन वीणा बजाने से उंगलिओं में ठेक पड जाती थीं। इस ठेक के कारण, सेवा में श्री ठकुरजी के श्री अंग में चुभन होती थी इसलिए श्री गुसांईजी ने वीणा वादन का त्याग कर दिया था।

सितार : प्रायः चौदहवीं शताब्दी में अलाउदीन खिलजी के दरबार में हजरत अमीर खुशरो एक प्रसिद्ध कवि और संगीतज्ञ थे। आपने वीणा में परिवर्तन करके सहतार अर्थात् सितार की रचना की। वीणा में दो तूंबे होते हैं जबकी सितार में केवल एक ही तूंबा रहता है। सितार में वीणा की तरह ही परदे रहते है।

आजकल यह वाद्य अधिक प्रचार में है।

सितार का उल्लेख अष्टछाप के पदो में दिखाई नहीं देता, किन्तु अष्टछाप की परंपरा के भक्त कवि मुरारिदासजी ने राग अड़ाने की धमार में इस प्रकार का उल्लेख किया है।

"गावत धमार आई व्रज की नार ------

संख सृंग चंग उपंग महुवर बंसी सुहतार"

यहां सुहतार शब्द से सितार का ही बोध होता है। आज के समय में यह वाद्य काफी प्रचलित है।

सारंगी : सारंगी भी अति प्राचीन वाद्य है। गायन में संगति के लिये यह सर्वोत्तम वाद्य है। इसे "सौरंगी" भी कहा जाता है। अर्थात इसमें संगीत के सौ रंगो का आनंद मिलता है । सम्प्रदाय में इस वाद्य को श्रीजी सन्मुख बजाने का आरंभ श्री हरिरायजी के समय में माना जाता है।

सारंगी में उपर की ओर तार के स्थान पर, तीन तांत की डोर लगाई जाती है। नीचे की तरफ "तुरुपें" लगी हुई रहती हैं। बाँये हाथ की उंगलियों के नाखून से तांत के तार पर, धर्षण करके, दाहिने हाथ से, गज से बजाई जाती है। यह गज धोडे के बाल का या नाईलोन के महीन तारों से बना होता है ।

किन्नरी : किन्नरी का प्रयोग ताल वाद्यों के साथ किया जाता है। किन्नरी को "कर्करी" भी कहते है। पक्के लोहे की छड को त्रिकोणात्मक मोड़कर किन्नरी बनाई जाती है। लोहे की एक छोटी सी छड से उसे बजाई जाती है। संम्प्रदाय में होली के दिनो में धमार गान में झांझ वगैरे अन्य वाद्यों के साथ बजाई जाती है ।

डफ या ढफ : हमारे सम्प्रदाय में डफ का प्रयोग होली के त्यौहारो में अर्थात् माध शुक्ल से डोल तक किया जाता है। यह वाद्य भी स्वतंत्र वाद्य नहीं है। उसे झांझ, मृदंग के साथ बजाया जाता है ।

डफ एक हाथ से डेढ़ हाथ तक का होता है। पतली लकडी का गोल घेरा बनाकर उसे पतले चमडे से मढ़ दिया जाता है। बांये हाथ से पकडकर, दाहिने हाथ से मृदंग के तालों के आधार पर बजाया जाता है। बजाते समय उसे हृदय के नजदीक रखकर, मृदंग के तालों के आधार पर बजाया जाता है ।

उपंग : यह वाद्य डमरू आकार का होता है। वह काष्ट या धातु का १६ से लेकर २० अंगुल तक का होता है। एक ओर पतले चमड़े से मढ़ा हुआ होता है।

तांतकी डोरी से वह बजाया जाता है। हमारे सम्प्रदाय में होलीके दिनों में डफ के साथ यह वाद्य बजाया जाता है।

खंजरी : इसे ढफका छोटा भाई कह सकते हैं। लकडे के घेरे पर पतला चमड़ा लगाया जाता है। इसमें छोटे छोटे मंजीरे लगे रहते हैं। चमड़े पर थाप मारने पर वे स्वतः ही बजते है। हमारे यहां होली के दिनों में डफ और उपंग के साथ खंजरी का भी उपयोग किया जाता है।

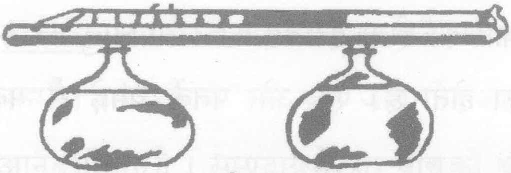

रुद्रवीणा

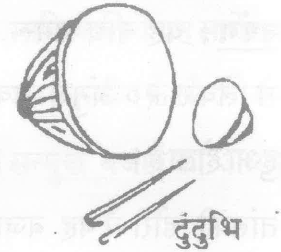

दुंदुभि

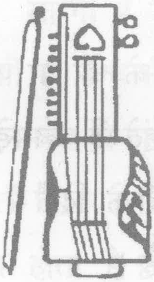

सारंगी

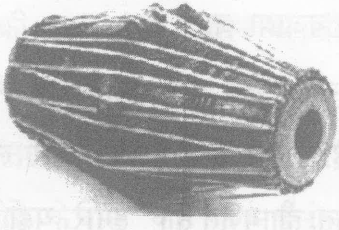

मृदंग

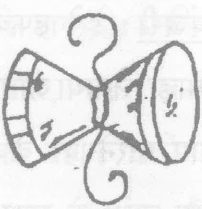

डिमडिमी

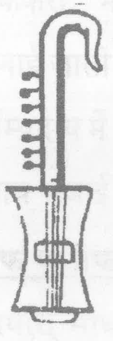

रबाब

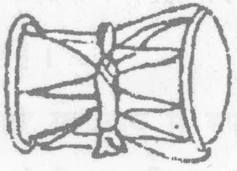

डमरू

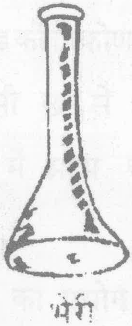

भेरी

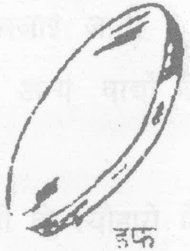

डफ

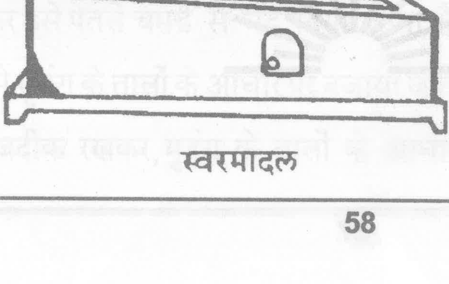

स्वरमादल

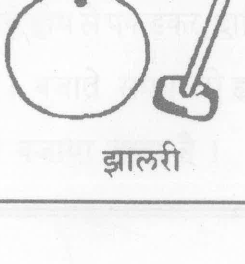

झालरी

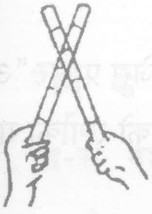

कठताल

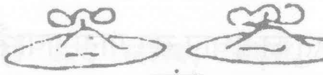

झांझ

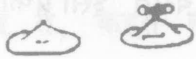

मंजीरा

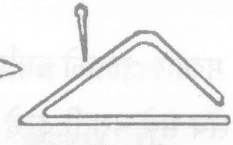

किन्नरी

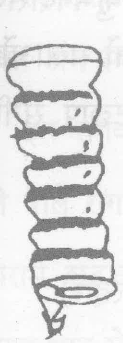

नादे

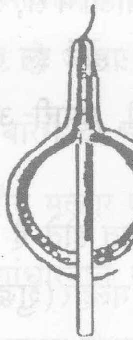

मुखचंग

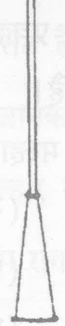

तुरही

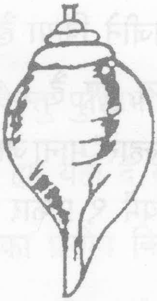

वादनशंख

बांसुरी

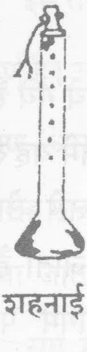

शहनाई

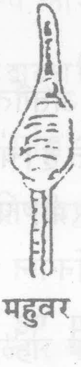

महुवर

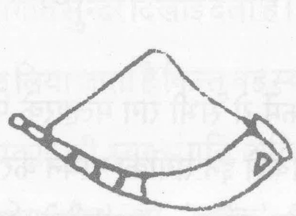

निशान

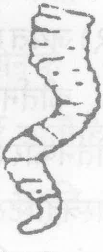

सिंगी

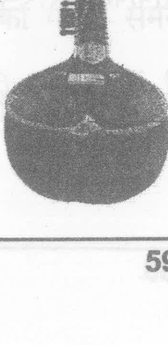

तानपूरा

राग : मल्हार

मल्हार रागको वर्षाऋतुका प्रधान राग माना गया है। जिस प्रकार "और राग सब भये बराती दूल्हे राग बसंत" इसी प्रकार मल्हार रागको रागोंका राजा कहा गया है।

ग्रंथोमें जो मेघ-मल्हारका वर्णन है, वह आजकल इतना प्रचलित नहीं है। इस प्रकारके मेघ-मल्हारका उल्लेख हमारे अष्टसखाओ में से, श्री कुंभनदासजी और श्री कृष्णदासजीने किया है। प्राचीन पदसंग्रहोंमें इन दोनों सखाओंके एक एक पद प्राप्त हुए है। इस प्रकारको ही, हमारी अष्टछाप संगीत परंपराका "शुद्ध-मल्हार" माना जाता है।

पुष्टि संप्रदायमें ९ प्रकार के मल्हार द्रष्टिगत होते है।

(१) गौड़ मल्हार
(२) मेघ मल्हार (शुद्ध मल्हार)
(३) सोरठ मल्हार
(४) धूलिया मल्हार
(५) सूर मल्हार
(६) मीयाँ मल्हार
(७) नट मल्हार
(८) रामदासी मल्हार
(९) जयंत मल्हार

कीर्तनकी पुस्तकमें ये सभी राग मल्हारके पदके अंतर्गत ही दीये गये है। कीर्तनकार अपने विवेकसे इन रागोंका गायन कर सकते है। वर्षाकालमें यह राग शास्त्रद्रष्टिसे भी और पुष्टि - प्रणालीके अनुसारभी, प्रातःकालसे लेकर सायंकालकी प्रत्येक सेवामें, मल्हार रागमें ही कीर्तनगान किया जाता है। श्रीजीको जगायवेसे लेकर - पोढ़ायवे तकके, असंख्य पद, इस रागमें पाये जाते हैं।

आषाढ़ शुक्ल द्वितीया से - श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के बाद, हिंडोला विजय तक, यह राग गाया जाता है।

राग : गौड़ मल्हार

"नि के दोनों रूप लखि, चढ़ते अल्प सम्हार ।
म-स वादी संवादी तें, कहत गौड़ मल्हार ।।"

राग गौड़ - मल्हार "गौड़" और 'मल्हार' रागोंके मिश्रण से बना है । "रेग, रेमग, रेसा" यह गौड़ रागका अंग है। "मरे, प, मपधसां, धपम" यहाँ मल्हार रागका अंग स्पष्ट हो जाता है।

इस रागके बारेमें दो मत प्रवर्तित हैं किन्तु पुष्टिभक्ति संगीतमें गाये जाने वाले राग गौड़ मल्हार की ही जानकारी हम यहाँ दे रहे हैं । अष्टछाप परंपरामें शुद्ध गांधारवाले गौड़ मल्हार रागका प्रयोग किया जाता है जो खमाज थाट से उत्पन्न होता है । इस रागका वादी स्वर 'मध्यम' और संवादी स्वर 'षड़ज' है ।

इस रागमें 'रे-प' की स्वर संगति सुन्दर दिखाई देती है। इस रागकी जाती संपूर्ण है। आरोह में शुद्ध निषाद लिया जाता है किन्तु वह स्वर दुर्बल होने के कारण 'धसां' या 'सांध' इस प्रकार की स्वर संगति अधिकतर पाई जाती है । अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग 'नीप' या 'धनीप' इस स्वर संगति से किया जाता है ।

राग गौड़ मल्हार का गायन समय रात्रीका दूसरा प्रहर है । यह एक ऋतु प्रधान राग होने से वर्षाकालमें किसीभी समय गाया जाता है । यह राग वक्र जाती का राग है ।

आरोह : सा, रेग, रेम गरेसा, रेप, मप, धसां

अवरोह : सांध नीप, मपमग, मरेसा

पकड़ : रेगरेमगरेसा, मपधसां, धपम

आलाप : रेगरेमग, मरेसा, मपधनीसां, धनीप, मपमग, मरेसा, मपनीध
नीसां, नीसांरेंसा, गंमंरें सां, धनीप, मपमगरे, मरेसा

राग गौड़ मल्हार

हिंडोरा कौ पद — ताल : ध्रुवपद — मात्रा -१२

तैसोई वृंदाबन, तैसीयै हरित भूमि,
तैसीयै वीर वधू, चलत सुहाई माई ॥

तैसीयै कोकिला कल, कूहू कूहू कूजत,
तैसेई नाचत मोर, निरखत नैना सुखदाई ॥ १ ॥

तैसोई नव रंग, नवरंगी बनी जोरी,
तैसेई गावत राग मल्हार, तान मन भाई ॥

गोविंद प्रभु पिय सुरंग, हिंडोरे झूले फूले आछे,
रंगभरे चहूं दिशते, घन घटा जुर आई ॥ २ ॥

स्थायी

x		०		२		०		३		४	
नी	**नी**	**ध**	**नी**	**नी**	**नी**	**सं**	**नी**	**सां**	**ध**	**नी**	**प**
तै	-	सौ	ई	-	वृं	दा	-	-	ब	-	न
म	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**धप**	**म**	**ग**	**रे**
तै	-	सी	ये	-	ह	रि	-	त-	भू	-	मि
रे	**रे**	**रे**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**स**	**सा**	**सा**
तै	-	सी	ये	-	-	वी	-	र	व	धू	-
म	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**धप**	**मप**	**ग**	**म**
च	ल	-	त	-	सु	हा	-	ई-	मा-	-	ई

अंतरा

म	**म**	**प**	**नी**	**ध**	**नी**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**सां**
तै	-	से	ई	-	को	कि	-	ला	क	-	ल
प	**प**	**प**	**नी**	**नी**	**सं**	**रें**	**नी**	**ध**	**नी**	**प**	**प**
कू	-	हू	कू	-	हू	कू	-	-	ज	-	त
प	**रें**	**रें**	**गं**	**मं**	**पं**	**गं**	**मं**	**रें**	**सां**	**सां**	**सां**
तै	-	-	से	-	ई	ना	च	त	मो	-	र
मम	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**धप**	**मप**	**ग**	**म**
निर	ख	त	नै	-	ना	सु	-	ख-	दा-	-	ई-

संचारी

म	**म**	**रे**	**प**	**प**	**प**	**ध**	**ध**	**नी**	**प**	**प**	**प**
तै	-	-	सो	-	ई	न	-	व	रं	-	ग
म	**म**	**म**	**प**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**धप**	**म**	**ग**	**रे**
न	-	व	रं	-	गी	ब	-	नी-	जो	-	री

रे	**रे**	**रे**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**सा**	**सा**	**सा**
तै	से	ई	गा	व	त	रा	ग	म	ल्हा	-	र
म	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**धप**	**मप**	**ग**	**म**
ता	-	न	म	-	न	भा	-	ई-	मा-	-	ई

आभोग

म	**म**	**प**	**नी**	**ध**	**नी**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**सां**
गो	विं	द	प्र	-	भू	पि	य	सु	रं	-	ग
प	**प**	**प**	**नी**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**ध**	**नी**	**प**	**प**
हिं	डो	रे	झू	-	लें	फू	-	लें	आ	-	छे
प	**रें**	**रें**	**गं**	**मं**	**पं**	**गं**	**मं**	**रें**	**रें**	**सां**	**सां**
रं	-	ग	भ	-	रे	च	हुं	दि	श	ते	-
म	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**धप**	**मप**	**ग**	**म**
घ	न	घ	टा	जु	र	आ	-	ई-	मा-	-	ई

राग : मेघ - मल्हार या शुद्ध मल्हार

"जब काफी के ठाठ सों धग सुर दीने टार ।
दोनों नी संवाद स प, औड़व मेघ मल्हार ।।"

(एक धारणा के अनुसार बादशाह अकबर के काल में संगीत सम्राट तानसेन द्वारा अकबर बादशाह की बीमार पुत्री के स्वास्थ्य लाभ के लिंये राग दीपक का गाना और उस राग के गाने से उत्पन्न असहय अग्नि को शांत करने के लिये, गुजरात की दो बहनों ताना रीरी द्वारा राग मेघ का गायन करना, इस दुःखद घटना घटने के बाद से ही शायद पुष्टिमार्ग में राग मेघ और दीपक राग को नहीं गाया गया । तभी से मेघ राग को मल्हार के नाम से ही संबोधित किया गया है ।)

इस राग का थाट काफी है । इस राग का वादी स्वर "सा" और संवादी स्वर "प" है। 'गांधार' और 'धैवत' स्वर वर्ज्य होने से इस राग की जाति औड़व है। दोनो निषाद का यहाँ साथ साथ में प्रयोग होता है। कोमल निषाद स्वर पर धैवत का कण इस राग में आवश्यक है, क्योंकि किसी स्वर के दोनों स्वरूप एक साथ नहीं गाये जाते। उचित स्थान पर मींड और गमकका प्रयोग किया जाता है। ऐसे तो इस राग का गायन समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है किन्तु ये ऋतु प्रधान राग होने से किसी भी समय इसे गा सकते है।

आरोह : सा, रे म, रे प, म प, $\underline{\text{नी}}$ $^{\text{ध}}$,नी सां
अवरोह : सां, $\underline{\text{नी}}$ प, म रे प, म रे, रे सा
मुख्यांग : म रे प, म प $\underline{\text{नी}}$ $^{\text{ध}}$,नी सां, $\underline{\text{नी}}$ म प, म रे सा
आलाप : सा, म रे प, म रे, ऩी सा, म, रे प, $\underline{\text{नी}}$ $^{\text{ध}}$, नी सां, नी सां रें, मं रें सां, $\underline{\text{नी}}$ प, म प म रे ऩी सा

राग मेघ मल्हार

मल्हार का पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

जहां तहां बोलत मोर सुहाये ॥

सावन रमन भवन वृंदावन, घोर घोर घन छाये ॥१॥

नेन्ही नेन्ही बूंदन बरषन लाग्यौ, बृजमंडल पै छाये ॥

"नंददास" प्रभू संग सखा लिये, कुंजन मुरली बजाये ॥२॥

मुखड़ा

०				३				x				२			
सं	**सं**	**नी**	**प**	**म**	**रे**	**ऩी**	**सा**	**रे**	**रे**	**म**	**प**	**नी$^{\text{ध}}$नी**		**सं**	**सं**
बो	-	ल	त	मो	-	र	सु	हा	-	ये	-	ज	हां	त	हां

अंतरा

म	**प**	**नी$^{\text{ध}}$नी**		**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**रें**	**रें**	**मं**	**रें**	**सां**	**सां**
सा	-	व	न	र	म	न	भ	व	न	वृं	-	दा	-	व	न
सां	**सां**	**नी**	**प**	**म**	**रे**	**ऩी**	**सा**	**रे**	**रे**	**म**	**प**	**नी$^{\text{ध}}$नी**		**सां**	**सां**
घो	-	र	घो	-	र	घ	न	छा	-	ये	-	ज	हां	त	हां

स्थायी

०				३				x				२			
म	**रे**	**म**	**म**	**प**	**प**	**प**	**प**	**नी**	**नी**	**प**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
न्हैं	नी	न्हैं	नी	बूं	-	द	न	ब	र	ष	न	ला	-	ग्यो	-
नी	**नी**	**प**	**म**	**रे**	**रे**	**ऩी**	**सा**	**रे**	**रे**	**म**	**प**	**नी$^{\text{ध}}$नी**		**सां**	**सां**
बृ	ज	मं	-	ड	ल	पै	-	छा	-	-	-	ये	-	-	-

अंतरा

०				३				x				२			
म	**प**	**नी$^{\text{ध}}$नी**		**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**रें**	**रें**	**मं**	**रें**	**सां**	**सां**
नं	-	द	दा	-	स	प्र	भु	सं	-	ग	स	खा	-	लि	ये
सां	**सां**	**नी**	**प**	**म**	**रे**	**ऩी**	**सा**	**रे**	**रे**	**म**	**प**	**नी$^{\text{ध}}$नी**		**सां**	**सां**
कुं	-	ज	न	मु	र	ली	ब	जा	-	ये	-	ज	हां	त	हां

राग : सोरठ मल्हार

"ग वर्जित आरोह में, रि ध संवाद अनूप,
दोनों नी नीके लगे, सोरठ मल्हार कौ रुप ।।"

राग सोरठ मल्हार, सोरठ और मल्हार के संयोग से बना हुआ राग है। पुष्टि संप्रदायकी कीर्तन प्रणाली में, सोरठ-मल्हार और गौड-मल्हार में ही अधिकतर पद गाये जाते है । यह राग सोरठ और मल्हार के मिश्रण से बना है।

इसका थाट खमाज है। आरोह में शुद्ध तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है। वादी स्वर "ऋषभ" है और संवादी स्वर "धैवत" है। ऐसे तो गांधार स्वर वर्ज्य है इसलिये इसकी जाति षाड़व संपूर्ण मानी जाती है। अवरोह में मींड में गांधार स्वर का प्रयोग किया जाता है । जैसे **म - रे**

आरोह : सा, रे, म, प, नी, मप, नीसां
अवरोह : सां, धनीप, मप, गमरे, सा
पकड़ : मपनी, सां, रेंनी, धप, मप, मरे, ऩीसा
आलाप : सारेमगरे, मपनीधप, मपनीसां, रेंनीधप, धमगरे, मरेऩीसा

राग : सोरठ मल्हार

मल्हार हरीघटा का पद ताल : अर्ध आड़ा चौताल मात्रा : ७

देखौ माई हरियारौ सावन आयौ ।।
हरयौ टिपारौ शीश बिराजत, काछ हरी मन भायौ ।।१।।
हरी मुरली है, हरी संग राधा, हरी भूमि सुखदाई ।।
हरी हरी बन राजत द्रुम बेली, नृत्यत कुंवर कन्हाई ।।२।।
हरी हरी सारी सखीजन पहेरें, चोली हरी रंग भीनी ।।
रसिक प्रीतम मन हरित भयौ है, सर्वस्व न्यौछावर कीनी ।।३।।

मुखड़ा

x	२		३		४		x	२		३		४	
नीनी	**सां**	**रें**	**नीध**	**पध**	**मग**	**रेग**	**म**	**प**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म**
हरि	या	रो	सा-	--	व-	न-	आ	यौ	-	-	-	-	दे
पध	**नीसां**	**धप**	**ग**	**प**	**म**	**ग**	**रेग**	**सा**	**सा**	**रे**	**प**	**मग**	**रेग**
खौ-	--	--	मा	-	ई	-	हरि	या	रौ	सा	-	व-	न-
प	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**सा**	**सा**							
आ	यौ	--	--	--	--	--							

अंतरा

मप	**नीध**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**पप**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**ध**	**प**
ह-	रयौ	टि	पा	-	रौ	-	शी-	श	बि	रा	-	ज	त
परें	**रें**	**रें**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**	**धनी**	**प**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म**
ह	री	-	का	छ	म	न	भा-	यौ	-	-	-	-	दे
पध	**नीसां**	**धप**	**ग**	**प**	**म**	**ग**	**रेग**	**सा**	**सा**	**रे**	**प**	**मग**	**रेग**
खौ	--	--	मा	--	ई	-	हरि	या	रौ	सा	-	व-	न-
प	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**सा**	**सा**							
आ	यौ	-	--	-	--	-							

स्थायी

मरे	**प**	**म**	**प**	**प**	**म**	**प**	**धसां**	**ध**	**प**	**ग**	**प**	**म**	**ग**
हरि	मु	र	ली	-	है	-	हरि	सं	ग	रा	-	धे	-
रेग	**सा**	**सा**	**रे**	**प**	**मग**	**रेग**	**प**	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**सा**	**सा**
ह-	री	भू	-	मी	सु-	ख-	दा	यी	-	--	-	-	-

अंतरा

मप	**नीध**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**पप**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**ध**	**प**
हरि	ह-	री	ब	न	रा	-	जत	ब	न	बे	-	ली	-
परें	**रें**	**रें**	**नी**	**नी**	**सं**	**सं**	**धनी**	**प**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म**
नृ	त्य	त	कुं	व	र	क	न्हा	ई	-	-	-	-	दे
पध	**नीसां**	**धप**	**ग**	**प**	**म**	**ग**	**रेग**	**सा**	**सा**	**रे**	**प**	**मग**	**रेग**
खौ	--	--	मा	-	ई	-	हरि	या	रौ	सा	-	व-	न-
प	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**सा**	**सा**							
आ	यौ	-	--	-	-	-							

स्थायी

मरे	**प**	**म**	**प**	**प**	**म**	**प**	**धसं**	**ध**	**प**	**ग**	**प**	**म**	**ग**
हरी	ह	री	सा	-	री	-	सखी	ज	न	प	हे	रें	-
रेग	**स**	**स**	**रे**	**प**	**मग**	**रेग**	**प**	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**स**	**स**
चो-	ली	ह	री	-	रं-	ग-	भी	नी	-	--	-	-	-

अंतरा

मप	**नीध**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**पप**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**ध**	**प**
रसि	क-	प्री	त	म	म	न	हरि	त	भ	यौ	-	हे	-
परें	**रें**	**रें**	**नी**	**नी**	**सं**	**सं**	**धनी**	**प**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म**
सर्व	स्व	न्यो	छा	-	व	र	की	नी	-	-	-	-	दे
पध	**नीसां**	**धप**	**ग**	**प**	**म**	**ग**	**रेग**	**सा**	**सा**	**रे**	**प**	**मग**	**रेग**
खौ-	--	--	मा	ई	-	-	हरि	या	रौ	सा	-	व-	न-
प	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**सा**	**सा**							
आ	यौ	-	--	-	-	-							

राग : धूलिया मल्हार

"ग वर्जित आरोह में, रे प संवाद बनाय ।
ग नी के दो रुप लै, धूलिया राग कहाय ।।"

पुष्टिमार्गीय कीर्तनप्रणाली में भक्त कवि धोंधी का नाम सुप्रसिद्ध है ही। यह राग उन्हिकी देन हो ऐसा लगता है । इस राग को "धूंडिया मल्हार के नाम से भी पहचाना जाता है। जैसे धोंधी का धोंदी, धूंडी नाम अपभ्रंश हुआ है, इसी प्रकार राग धूंडिया - मल्हार का अपभ्रंश धूलिया मल्हार हुआ हो ऐसा लगता है। इससे ऐसा प्रतीत होता है की यह राग भक्तकवि धोंधी की ही देन है ।

यह राग काफी थाट से है। आरोह में गांधार स्वर वर्ज्य है। और अवरोह में सातों स्वर लगने से इसकी जाती षाड़व-संपूर्ण है। इसमें दोनों गांधार तथा दोनो निषाद का प्रयोगकिया जाता है। (सोरठ - मल्हार से यह राग काफी मिलता है। फर्क है तो सिर्फ इतना की सोरठ-मल्हार में गांधार स्वर का प्रयोग मींड में किया जाता है, जबकी यहां गांधार स्पष्ट रूप से लिया जाता है। दोनो गांधारका प्रयोग, "गरेग̲रेसा" तथा "रेग̲रेसा" - इस प्रकार किया जाता है। इसी कारण यह सोरठ-मल्हार से अलग दिखाई देता है। इस राग का वादी स्वर "रे" और संवादी स्वर "प" है।)

प्रसिद्ध कीर्तनकार चन्दनजी तथा लछमनजी चौबे सम्प्रदायकी प्रणाली के अनुसार इसी प्रकारको धूलिया - मल्हार मानते है ।

इसराग में सोरठ-मल्हार और देश - तीनों रागों का मिश्रण हुआ है।

आरोह : सा, रे प, म प ध नी सां
अवरोह : रें सां नी̲ ध प, म ग रे, ग̲ रे ऩीसा
आलाप : सा, म रे प, म प ध नी सां, ध प म ग रे, ग̲ रे ऩी सा, रे म प, नी̲ ध प, नी सां रें, मं रें सां, नी̲ ध प, म ग रे, ग̲ रे ऩी सा.

रथयात्रा का पद ताल : आडा चौताल मात्रा - ७

वा पट पीत की फहरान ॥
कर गहि चक्र चरन की धावन, नहिं विसरत वह बान ॥ १ ॥
रथ ते उतर अवनी आतुर व्हे, कचरज की लपटान ॥
मानौं सिंह सैलते उतर्यौ, महा मत्त गज जान ॥ २ ॥
धन्य गोपाल मेरौ प्रण राख्यौ, मेंटी वेद कुल कान ॥
सोई अब सूर सहाय हमारे, प्रगट भये हरि आन ॥ ३ ॥

मुखड़ा

नी	**सां**	**रें**	**नीध**	**पध**	**मग**	**रेग**
पी	-	त	की-	--	फ-	ह-
म	**प**	**प**	**सं**	**सं**	**धप**	**मग**
रा	-	न	वा	-	प-	ट-
रेग	**स**	**स**	**रे**	**प**	**मग**	**रेग**
पी	-	त	की	-	फ-	ह-
प	**म**	**म**	**रे**	**ग**	**रे**	**सा**
रा	-	-	-	-	न	-
X	२		३		४	

अंतरा

मप	**नीध**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**
कर	ग-	ही	च	-	क्र	च
पप	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**ध**	**प**
रन	की	-	धा	-	व	न
रेरें	**रें**	**रें**	**गं**	**रें**	**नी**	**सां**
नहिं	बि	स	र	त	व	ह
नी	**ध**	**प**	**रे**	**ग**	**रे**	**सा**
बा	-	न	वा	-	प	ट

स्थायी

X	२		३		४	
मरे	प	म	प	प	म	प
रथ	ते	-	उ	त	ऽ	अ
रेम	प	ध	म	ग	रे	रे
व-	नी	आ	तु	र	व्है	-
रेप	म	म	गरे	ग	सा	ऩी
कच	र	ज	की-	-	ल	प
सा	सा	सा	रे	ग	रे	सा
टा	-	न	वा	-	प	ट

स्थायी

मप	नीध	नी	सं	नी	सं	सं
मा-	नों	-	सिं	-	ह	-
पप	नी	सं	रें	नी	ध	प
सै-	ल	ते	उ	त	रयौ	-
रेंरें	रें	रें	गं	रें	नी	सं
म-	हा	-	म	त्त	ग	ज
नी	ध	प	रे	ग	रे	स
जा	-	न	वा	-	प	ट

स्थायी

मरे	प	म	प	प	म	प
ध-	न्य	गो	पा	-	ल	मे
रेम	प	ध	म	ग	रे	रे
रौ-	प्र	ण	रा	-	ख्यौ	-
रेप	म	म	गरे	ग	स	ऩी
मे-	टी	-	वे-	द	कु	ल
स	स	स	रे	ग	रे	स
का	-	न	वा	-	प	ट

अन्तरा

मप	**नीध**	**नी**	**सं**	**नी**	**सं**	**सं**
सोई	अ-	ब	सू	-	र	स
पप	**नी**	**सं**	**रें**	**नी**	**ध**	**प**
हा-	य	ह	मा	-	रे	-
रेंरें	**रें**	**रें**	**गं**	**रें**	**नि**	**सं**
प्रग	ट	भ	ये	-	ह	रि
नी	**ध**	**प**	**रे**	**ग**	**रे**	**स**
आ-	-	न	वा	-	प	ट

राग : सूर मल्हार

"आरोहन गध नही, अवरोहन ग टार ।
स प वादी संवादी ते, जानत सूर मल्हार ॥"

यह राग, अष्टसरवाओं में से एक भक्तशिरोमणी, श्रीसूरदासजी की हमें देन है । आपके ही नाम से इस राग का नाम "सूर·मल्हार" अंकित हुआ है। मधुमाद सारंग और मल्हार के संयोग से इस राग का निर्माण हुआ है । इसका थाट है "काफी" इसके आरोह में "धैवत" और "गांधार" वर्ज्य है । अवरोह में धैवत का प्रयोग किया जाता है । केवल "गांधार" वर्ज्य है इसलिये इस राग की जाति ओडव - षाडव है । यहां दोनो निषादों का प्रयोग होता है । "नीमप" और "नीधप" जैसे स्वर से, सूर मल्हार स्पष्ट होता है ।

वर्षाकालीन ऋतुप्रधान राग होने से, अन्य मल्हारों की तरह ही गाया जाता है ।

आरोह : सा, रे, मप, नी, सां

अवरोह : सां, नी, धप, मरे ऩी सा

मुख्यांग : मपनीसांरें, नीसांनीधप, मप, मरेसा

आलाप : ऩी सारे, मरेसा, रेमप, मपनीसां, रें, सां, रेंमंरें, सां,
नीसांनीधप, मप, मरेऩीसा

मल्हार को पद ताल : तीनताल मात्रा - १६

देखो माई ये बडभागी मोर ॥
जिनकी पंखकौ मुकुट बनत है, सिर धरे माखनचोर ॥ १ ॥
ये बडभागी नंद यशोदा, पुन्य किये भरझौर ॥
वृन्दावन हम क्यों न भई हैं, लागत पगकी ओर ॥ २ ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, ठाडे हैं कर जोर ॥
सूरदास संतनको सर्वस्व देखियत माखनचोर ॥ ३ ॥

मुखड़ा

०				३				X				२			
नी	ध	प	म	रे	रे	ऩी	सा	सां	सां	सां	सां	धसां	नीध	पम	प
ये	-	ब	ड	भा	-	गी	-	मो	-	-	र	दे-	खो-	मा-	ई

अंतरा

०				३				X				२			
म	प	नीपनी		सां	नी	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	ध	म	प
जि	न	की	-	पं	ख	कौ	-	मु	कु	ट	ब	न	त	है	-
नी	ध	प	म	रे	रे	ऩी	सा	सां	सां	सां	सां	धसां	नीध	पम	प
सि	र	ध	रे	मा	-	ख	न	चो	-	-	र	दे-	खो-	मा-	ई

स्थायी

म	रे	म	म	प	प	म	प	नी	ध	प	म	रे	रे	सा	सा
ये	-	ब	ड	भा	-	गी	-	नं	-	द	य	शो	-	दा	-
नी	ध	प	म	रे	रे	ऩी	सा	सां	सां	सां	सां	धसां	नीध	पम	प
पु	-	न्य	कि	ये	-	भ	र	झौ	-	-	र	दे-	खो-	मा-	ई

इसी प्रकार पूरा पद गाया या बजाया जाएगा ।

राग : मीयाँ की मल्हार

"गा कोमल, संवाद म - स, उतरत धैवत टार।
दोऊ निषाद के रूप लै, होत मियाँ मल्हार ॥"

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है । इस राग का वादी स्वर 'मध्यम' और संवादी स्वर 'षड़ज' है । इस राग में कोमल गांधार एवं दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है। इस राग के अवरोह में 'धैवत' स्वर वर्जित है। इसलिए इस राग की जाती संपूर्ण-षाड़व है ।

यह राग कान्हड़ा और मल्हार के संयोग से बना है। इस राग का आलाप विलंबित लय में करके जब उसका विस्तार मंद्र सप्रक में होता है तब बड़ा सुन्दर और कर्णप्रिय लगता है । कहते हैं कि यह राग तानसेनजी के द्वारा बनाया गया है ।

इस राग का गायन समय मध्यरात्रि है किन्तु यह राग ऋतुप्रधान होने के कारण वर्षाकाल में सभी समय गाया जाता है । इस राग के आरोह, अवरोह, पकड़ और आलाप इस प्रकार हैं।

आरोह : सा, रेमरेसा, मरे, प, नी̲ध, नीसां
अवरोह : सांनी̲प, मप, ग̲म, रेसा
पकड़ : रेमरेसा, नी̲̣ प̣म̣प̣, नी̲̣ ध̣नी̣सा̲, ग̲मरेसा
आलाप : सानी̲̣ म̣प̣नी̲̣ ध̣नी̣सा, नी̣सामरेप, ग̲मरेसा, मपनी̲ध,
नीसां, नीसांरेंसां, नीसांमंरेंपं, ग̲मंरेंसां, नी̲धनीसां,
धनी̲̣ प, मपग̲मरेसा, नी̲ध̣नी̣सा

मल्हार को पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

काहेको ब्रज पर दौरी बदीरया तू ॥
चमकत बीज महाघनओल्हर, दुःख पावत है किशोरी ॥ १ ॥
भीजत गोपी सघन कुँजतर, चूवत चुन्दरी मोरी ॥
सूरदास प्रभु तुम बहुनायक, राधा मोहन जोरी ॥ २ ॥

मुखड़ा

०				३				X				२			
ग̲	म	रे	सा	नी़̲	नी़̲	म़	प़	नी़̲	ध़	नी़	सा	रे	रे	सा	सा
का	-	हे	को	ब्र	ज	प	र	दौ	-	री	ब	द	रि	या	तू

अंतरा

०				३				X				२			
म	प	नी̲	ध	नी	नी	सां	सां	नी	सां	रें	सां	ध	नी̲	प	प
च	म	क	त	बी	-	ज	म	हा	-	घ	न	ओ	-	ल्ह	र
ग̲ं	ग̲ं	ग̲ं	मं	रें	रें	सां	सां	ग̲	ग̲	ग̲	म	रे	रे	सा	सा
दुः	ख	पा	-	व	त	हे	कि	शो	-	री	ब	द	रि	या	तू

स्थायी

सा	सा	म	रे	प	प	म	प	ग̲	ग̲	ग̲	म	रे	रे	सा	सा
भी	-	ज	त	गो	-	पी	-	स	ध	न	कुँ	-	ज	त	र
ग̲	म	रे	सा	नी़̲	नी़̲	म़	प़	नी़̲	ध़	नी़	सा	रे	रे	सा	सा
चू	-	व	त	चू	न्द	री	-	मो	-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

म	प	नी̲	ध	नी	नी	सां	सां	नी	सां	रें	सां	ध	नी̲	प	प
सू	-	र	दा	-	स	प्र	भु	तु	म	ब	हु	ना	-	य	क
ग̲ं	ग̲ं	ग̲ं	मं	रें	रें	सां	सां	ग̲	ग̲	ग̲	म	रे	रे	सा	सा
रा	-	धा	-	मो	-	ह	न	जो	-	री	ब	द	रि	या	तू

बोल आलाप

सा	**सा**	**म**	**रे**	**प**	**प**	**म**	**प**	**नी̲**	**ध**	**नी**	**सां**	**रें**	**रें**	**सां**	**सां**
का	-	हे	को	ब्र	ज	प	र	दौ	-	री	ब	द	रि	या	तू
गं̲	**मं**	**रें**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी̲**	**प**	**ग̲**	**म**	**रे**	**सा**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
दौ	-	री	ब	द	रि	या	-	दौ	-	री	ब	द	रि	या	तू

तान मात्रा - ८ काहे को ब्रज पर

१) मप नी̲ध नीसं रेंसं,धनी̲ पप ग̲म रेसा

२) गंमं रेसं नीसं रेसं,धनी̲ पप ग̲म रेसा

* * *

राग : नट मल्हार

"ग नी के दोनों रूप ले काफी ठाठ संभार ।
म - स वादी संवादी सों गावत नट मल्हार ।।"

राग नट और राग मल्हार के संयोग से यह राग निर्माण हुआ है । काफी थाट से यह राग उत्पन्न हुआ है । इस राग का वादी स्वर "मध्यम" और संवादी स्वर "षड़ज" है । आरोह अवरोह में सभी स्वर लगने से इस राग की जाति संपूर्ण है ।दोनो "ग-नि" का प्रयोग होता है ।

सम्प्रदाय में वर्षाऋतु से अन्नकूट तक यह राग गाया जाता है ।

यह राग वर्षाऋतु में किसी भी समय गाया जाता है ।

आरोह : सारेग, मरे, गमप, नीधनीसां
अवरोह : सांध, नीप, मग, मरेसा
पकड़ : सरेग, मपग, नीध, परे, गमरेसा
आलाप : सारेसा, रेगम, रेप, मपधनीसां, नीरेंसां, संधनीप,
परे गमप, गमरेसा

राग नट मल्हार

मल्हार लाल घटा का पद ताल : झपताल मात्रा - १०

लालही लालके, लालही लोचन
लालही के मुख, लालही बीरा ।।
लाल पिछोरा, बन्यो अति सुन्दर
लाल बैठे, जमुना के तट तीरा ।। १ ।।
लालही पाग, सोहे अति सुन्दर

लालही साज, मनोहर धीरा ॥
गोविन्द प्रभुकी, लीला निरखत
लालके कंठ, बिराजत हीरा ॥ २ ॥

मुखड़ा

नी	**ध**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**सां**	**ध**	**नी**	**प**
ला	-	ल	-	ही	ला	-	ल	-	के
प	**रे**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**
ला	-	ल	-	ही	लो	-	च	-	न
सा	**सा**	**म**	**म**	**रे**	**प**	**प**	**प**	**म**	**प**
ला	-	लो	-	ही	के	-	मु	-	ख
नी	**ध**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**सां**	**धनी**	**पम**	**प**
ला	-	ल	-	ही	बी	-	रा	-	-
X		२			०		३		

अंतरा

म	**प**	**नी**	**ध**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**सां**
ला	-	ल	-	पि	छो	-	रा	-	ब
प	**प**	**नी**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**ध**	**प**	**प**
न्यो	-	अ	-	ति	सुं	-	द	-	र
प	**रें**	**रें**	**रें**	**रें**	**नी**	**सां**	**ध**	**नी**	**प**
ला	-	ल	-	बै	ठे	-	ज	-	मु
प	**रे**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**
ना	के	त	-	ट	ती	-	रा	-	-
X		२			०		३		

स्थायी

सा	**सा**	**म**	**म**	**रे**	**प**	**प**	**प**	**म**	**प**
ला	-	ल	-	ही	पा	-	ग	-	सो
ध	**सां**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**प**	**म**	**ग**	**रे**
हे	-	अ	-	ति	सुं	-	द	-	र
रे	**रे**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**
ला	-	ल	-	ही	सा	-	ज	-	म
रे	**ग**	**म**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**
नो	-	ह	-	र	धी	-	रा	-	-

अंतरा

म	**प**	**नी**	**ध**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**सां**
गो	-	वि	-	न्द	प्र	भु	की	-	-
प	**प**	**नी**	**नी**	**सां**	**रें**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**
ली	-	ला	-	-	नि	र	ख	-	त
प	**रें**	**रें**	**रें**	**रें**	**नी**	**सां**	**ध**	**नी**	**प**
ला	-	ल	-	के	कं	-	ठ	-	-
प	**रे**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**
बि	रा	ज	-	त	ही	-	रा	-	-

राग रामदासी मल्हार

"म स वादी संवादी कर, दोऊ ग - नी सम्हार ।
बरखामें नीकौ लगै, रामदासी मल्हार ॥"

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। इस रागकी जाती सम्पूर्ण है क्योंकि इसके आरोह-अवरोह दोनों में ७ स्वर लगते है। इस राग का वादी स्वर 'मध्यम' और संवादी स्वर 'षड़ज' है। इस राग में दोनों गांधार और दोनों निषाद का प्रयोग होता है।

यह राग भी ऋतुप्रधान होने से वर्षाकाल में किसी भी समय गाया जाता है।

आरोह : ऩीसरेगमप, मगम, नीधनीसां
अवरोह : सांधनीमप, गमरेसा
पकड़ : मरेप, मपनीधनीसां, गंमंरेंसां, गमरेसा
आलाप : सा, मरेप, मप, गम, रेसा, मरेप, मप, नीधनीसां, धनीप, मप, गमरेसा।

मल्हार का पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

लालमाई भीजत आये गेह ॥
हाथ लकुटीया गायन पाछे,
खूंदत कीच सनेह ॥ १ ॥
निश अंधियारी हाथ नहीं सूझत,
पवन झकोरत मेह ॥
सूरदास दामिनी के दमके,
लखी साँवरी देह ॥ २ ॥

मल्हार कौ पद तीन ताल

मुखड़ा

म	**रे**	**प**	**म**	**प**	**प**	**म**	**प**	**धनी**	**सां**	**ध**	**प**	**ग**	**प**	**म**	**ग**
भी	-	ज	त	आ	-	ये	-	गे-	-	-	ह	ला	ल	मा	ई
प	**नी**	**ध**	**प**	**ग**	**प**	**म**	**म**	**ग**	**रे**	**ग**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
भी	-	ज	त	आ	-	ये	-	गे	-	-	ह	ला	ल	मा	ई
०				३				X				२			

अंतरा

नी	**ध**	**नी**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**निसं**	**रें**	**सां**	**सां**	**ध**	**नी**	**प**	**प**
हा	-	थ	ल	कु	टि	या	-	गा-	-	य	न	पा	-	छे	-
म	**रे**	**प**	**म**	**प**	**प**	**म**	**प**	**धनी**	**सां**	**ध**	**प**	**ग**	**प**	**म**	**म**
खूं	-	द	त	की	-	च	स	ने-	-	-	ह	ला	ल	मा	ई

स्थायी

सां	**सां**	**नी**	**सां**	**ध**	**नी**	**प**	**प**	**म**	**म**	**प**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**स**
नि	श	अं	धि	या	-	री	-	हा	थ	न	हीं	सू	-	झ	त
सा	**सा**	**म**	**रे**	**प**	**प**	**म**	**प**	**ग**	**ग**	**ग**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
प	व	न	झ	को	-	र	त	मे	-	-	ह	-	-	-	-

अंतरा

नी	**ध**	**नी**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**	**नीसां**	**रें**	**सां**	**सां**	**ध**	**नी**	**प**	**प**
सू	-	र	दा	-	स	दा	-	मि-	नी	के	-	द	म	के	-
म	**रे**	**प**	**म**	**प**	**प**	**म**	**प**	**धनी**	**सां**	**ध**	**प**	**ग**	**प**	**म**	**म**
ल	खी	-	सां	-	व	री	-	दे	-	-	ह	ला	ल	मा	ई

तान : आ - ये

१) मरे पम पप मप । धसं धप गप मग

२) मप नीध निसां रेंसां । धनी पप गम रेसा

लालमाईः रेंरे सांसां धनी पप। मम पप गम रेसा। नीसा मरे प नीसा। मरे प, नीसा मरे

राग जयंत मल्हार

"नी" के दोऊ रूप लै, काफी थाट सम्हार ।
रे - प वादी संवादी से, गावत जयंत मल्हार ॥"

यह राग मल्हार और जैजैवंती के स्वरो का मिश्रण है। इस राग का वादी स्वर है 'ऋषभ' और संवादी स्वर है 'पंचम'। यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है और वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

आरोह : ऩीसाध़ऩी रे, सा रे, प, मपनीधनीसां
अवरोह : सांधनीप, मपगमरेसा, ध़ऩी रेसा
पकड़ : सध़ऩी रेप, गमरेसा,
आलाप : सा, रेमरेसा, ऩीसाध़ऩी रेसा, रेप, मपनीधनीसां, धनीरें,
गंरेंसां, धनीप, मपगम, रेसा, ध़ऩी रेसा।

हिंडोरे को पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

झूलत बने हैं बिहारी हिंडोरे माई ॥
आनंद घन दोऊ गान करत है संग सकल ब्रजनारी ॥ १ ॥
कुंजकुंज में बन्यौ हिंडोरो केलि करत सुखकारी ॥
झोंटा देत झुलावत सुन्दरी रीझ रीझ तृण डारी ॥ २ ॥
कहा कहो यह सुख की सीमा जोरी बनी अति प्यारी ॥
सुरनरमुनीजन थकित भये है मोहन सुत बलिहारी ॥ ३ ॥

मुखड़ा

०				३				x				२			
ग	**म**	**रे**	**सा**	**ऩी**	**सा**	**ध़**	**ऩी**	**रे**	**रे**	**प**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**सा**
झू	-	ल	त	ब	ने	है	बि	हा	-	री	हिं	डो	रे	मा	ई

अंतरा

म	**प**	**नी**	**ध**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**	**ध**	**नी**	**रें**	**रें**	**गं**	**रें**	**सां**	**सां**
आ	-	नं	द	घ	न	दो	ऊ	गा	-	न	क	र	त	है	-

नी	**सां**	**नी॒**	**प**	**म**	**प**	**ग॒**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**	**ऩीसा**	**मरे**	**प**	**प**
सं	-	ग	स	क	ल	ब्र	ज	ना	-	री	हिं	डो-	रे-	मा	ई

स्थायी

सा	**सा**	**म**	**रे**	**प**	**प**	**म**	**प**	**ग॒**	**ग॒**	**ग॒**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
कु	-	ज	कुं	-	ज	में	-	ब	न्यो	-	हिं	डो	-	रो	-
ऩी॒	**सा**	**ध़**	**ऩी॒**	**रे**	**रे**	**प**	**प**	**ग॒**	**म**	**रे**	**सा**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
के	-	लि	क	र	त	सु	ख	का	-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

म	**प**	**नी॒**	**ध**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**	**ध**	**नी॒**	**रें**	**रें**	**गं॒**	**रें**	**सां**	**सां**
झों	-	टा	-	दे	-	त	झु	ला	-	व	त	सु	-	न्द	री
नी	**सां**	**नी॒**	**प**	**म**	**प**	**ग॒**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**	**ऩीसा**	**मरे**	**प**	**प**
री	-	झ	री	-	झ	तृ	ण	डा	-	री	हिं	डो-	रे-	मा	ई

स्थायी

सा	**सा**	**म**	**रे**	**प**	**प**	**म**	**प**	**ग॒**	**ग॒**	**ग॒**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
क	हा	-	क	हो	-	य	ह	सु	ख	की	-	सी	-	मा	-
नि़	**सा**	**ध़**	**ऩी॒**	**रे**	**रे**	**प**	**प**	**ग॒**	**म**	**रे**	**सा**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
जो	-	री	ब	नी	-	अ	ति	प्या	-	-	-	री	-	-	-

अंतरा

म	**प**	**नी॒**	**ध**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**	**ध**	**नी॒**	**रें**	**रें**	**गं॒**	**रें**	**नी**	**सां**
सु	र	न	र	मु	नी	ज	न	थ	कि	त	भ	ये	-	है	-
नी	**सां**	**नी॒**	**प**	**म**	**प**	**ग॒**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**	**ऩीसा**	**मरे**	**प**	**प**
मो	-	ह	न	सु	त	ब	लि	हा	-	री	हिं	डो-	रे-	मा	ई

राग : मारू

"मध्यम दोनों सुर लिये, चढते रे को त्याग ।
प-स वादी - संवादी सों, गावत मारू राग ॥

यह राग अतिप्राचीन है । अष्टछाप भक्तकविओं की रचनाओंमें यह राग दृष्टिगोचर होता है। हमारे पुष्टिसंगीत में आज भी परंपरानुसार यह राग गाया जाता है।

इस राग का थाट पूर्वी है। वादी स्वर 'पंचम' और संवादी स्वर 'षड्ज' है। सातों स्वर लगने से इस राग की जाति संपूर्ण है। कोई कोई संगीतज्ञ इसे मारवा थाट का मानते है।

पुष्टिमार्गीय कीर्तन संगीतमें यह राग, हिंडोरा के पदो में, जन्माष्टमी पर ढांढी लीलाके पदों में तथा अश्विन शुक्ल सप्तमी से दशहरा तक, भोगसंध्या दर्शन समय में गाये जानेवाले करखा के पदों में पाया जाता है।

पुष्टिमार्ग को ही इस राग की परम्परा सुरक्षित रखने का श्रेय दिया जाय तो यह उचित ही है।

आरोह : सागमप, म॑ पध॒नीसां

अवरोह : सांनीध॒प, ध॒नीध॒प, म॑ गरे॒सा

आलाप : सागमप, ध॒म॑ प, म॑ ध॒नीध॒प, म॑ गरे॒सा, म॑ध॒नीसां,
गंम॑ं गंरें॒, सां, रें॒नीध॒प, म॑ गरे॒सा

राग मारु

करखा का पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

सीता कौन हरी हो लक्षमण ॥
यह जु मढी बैरिन भइ हमकों । कंचन मृग जो छरी ॥ १ ॥
जोपै सीता होय मढी में, झांकत द्वार खडी ॥
सूनी मढी देख रघुनंदन, आवत नयन भरी ॥ २ ॥
एक दुःख हतो पिता दशरथ कौ, दूजौ सीय करी ॥
सूरदास प्रभु कहत भ्रातसों, वनमें विपत परी ॥ ३ ॥

मुखड़ा

०				३				X				२			
सा	**सा**	**ग**	**म**	**प**	**प**	**प**	**ध̲**	**सं**	**नी**	**ध̲**	**प**	**प**	**ग**	**म**	**ग**
सी	-	ता	-	कौ	-	न	ह	री-	-	-	हो	ल	क्ष	म	ण
नी	**ध̲**	**प**	**म**	**ग**	**रे̲**	**ग**	**म**	**रे̲**	**रे̲**	**सा**	**सा**	**ग**	**म**	**प**	**प**
सी	-	ता	-	कौ	-	न	ह	री-	-	-	हो	ल	क्ष	म	ण

अंतरा

प	**ध̲**	**प**	**ध̲**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**	**सां**	**रें̲**	**सां**	**रें̲**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**
य	ह	जु	म	ढी	-	बै	-	रि	न	भ	इ	ह	म	कों	-
ध̲	**सां**	**नी**	**ध̲**	**प**	**म॑**	**प**	**ध̲**	**नी**	**ध̲**	**प**	**म**	**ग**	**म**	**प**	**प**
कं	-	च	न	मृ	ग	जो	छ	री	-	-	हो	ल	क्ष	म	ण

स्थायी

सा	**सा**	**ग**	**म**	**प**	**प**	**म॑**	**प**	**ध̲**	**ध̲**	**प**	**ध̲**	**नी**	**ध̲**	**प**	**प**
जो	-	पै	-	सी	-	ता	-	हो	-	य	म	ढी	-	में	-
प	**ध̲**	**प**	**म**	**ग**	**रे̲**	**ग**	**म**	**ग**	**रे̲**	**सा**	**सा**	**ग**	**म**	**प**	**प**
झां	-	क	त	द्वा	-	र	ख	डी	-	-	-	-	-	-	-

अंतरा

प	**ध॒**	**प**	**ध॒**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**	**सां**	**रें॒**	**सां**	**रें॒**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**
सू	-	नी	-	म	ढी	-	दे	-	ख	र	घु	नं	-	द	न
ध॒	**सां**	**नी**	**ध॒**	**प**	**म॑**	**प**	**ध॒**	**नी**	**ध॒**	**प**	**म**	**ग**	**म**	**प**	**प**
आ	-	व	त	न	य	न	भ	री	-	-	हो	ल	क्ष	म	ण

स्थायी

सा	**सा**	**ग**	**म**	**प**	**प**	**म॑**	**प**	**ध॒**	**ध॒**	**प**	**ध॒**	**नी**	**ध॒**	**प**	**प**
ए	क	दुः	ख	ह	तो	-	पि	ता	-	द	श	र	थ	कौ	-
प	**ध॒**	**प**	**म**	**ग**	**रे॒**	**ग**	**म**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**	**ग**	**म**	**प**	**प**
दू	-	जौ	-	सी	-	य	क	री	-	-	-	-	-	-	-

अंतरा

प	**ध॒**	**प**	**ध॒**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**	**सां**	**रें॒**	**सां**	**रें॒**	**नी**	**नी**	**सां**	**सां**
सू	-	र	दा	-	स	प्र	भु	क	ह	त	भ्रा	-	त	सों	-
ध॒	**सां**	**नी॒**	**ध॒**	**प**	**म॑**	**प**	**ध॒**	**नी**	**ध॒**	**प**	**म**	**ग**	**म**	**प**	**प**
व	न	में	-	वि	प	त	प	री	-	-	हो	ल	क्ष	म	ण

राग - पंचम

इस रागका थाट है मारवा। इस रागका वादी स्वर है 'मध्यम' एवं संवादी स्वर है 'षड़ज'। इस रागकी जाती है औड़व - षाड़व। इस राग का नाम पंचम है लेकिन इस राग में पंचम स्वर ही वर्ज्य है। यह राग शीतकाल में मंगला - श्रृंगार में तथा होरी के दिनों में गाया जाता है। इस राग में दोनों मध्यम का प्रयोग होता है।

आरोह : साग, मग, म॑धनी, म॑धसां
अवरोह : सांनीध, म॑गरे॒सा
पकड़ : म॑ग, म॑धनीसां, नीधम॑ग, रे॒सा
आलाप : ऩीसागसा, म॑ग, म॑धनीसां, रेंसांनीध, म॑ग, म॑गरे॒सा

राग - पंचम

ताल : धमार मात्रा - १४

माई मोहे मोहन लागे प्यारो।
जब देखौ तब नैनन निरखो,
इन नयनन्न कौ तारो ॥ १ ॥
काँपत तन थरथरात अतिध्रूजत।
शीत लगत तन भारौ ॥
परमानंद प्रभु या जाडे कौ,
कीजिये मुँह कारौ ॥ २ ॥

मुखड़ा

x					२		०			३			
सांसां	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**ग**	**ग**	**म**	**ध**	**नी**	**सां**
मो	ह	न	ला	-	गे	-	प्या	रो	-	मा	ई	मो	हे
नीरें॒	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**
मो	ह	न	ला	-	गे	-	प्या-	-	-	रो	-	-	-

अन्तरा

धध	**म॑**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**नीरें॒**	**गं**	**गं**	**मं॑**	**गं**	**रें॒**	**सां**
जब	दे	-	खो	-	त	ब	नय	न	न	नि	र	खों	-
सांसां	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**
इन	न	य	न	न	कौ	-	ता-	-	-	रो	-	-	-

स्थायी

सासा	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**मम**	**ग**	**गग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**सां**
काँ	प	त	त	न	थ	र	थरा	त	अति	धू	-	ज	त
नीरें॒	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**
शी-	त	ल	ग	त	त	न	भा-	-	-	रो	-	-	-

अन्तरा

धध	**म॑**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**नीरें॒**	**गं**	**गं**	**मं॑**	**गं**	**रें॒**	**सां**
पर	मा	-	नं	द	प्र	भु	या	-	जा	डे	-	कौ	-
सांसां	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**
की-	जि	-	ये	-	मुँ	ह	का-	-	-	रौ	-	-	-

राग - शुद्ध बसंत

"थाट बिलावल से उपज, शुद्ध स्वरन संग गाय
म-स वादी संवादीते, शुद्ध बसंत कहाय ।"

राग शुद्ध बसंत बिलावल थाट से उत्पन्न होता है । इस रागके आरोह में ऋषभ और पंचम स्वर वर्जित है । इसलिए इस राग की जाति औड़व-सम्पूर्ण है ।

इस रागमें सभी स्वर शुद्ध हैं । इस राग का वादी स्वर "षड़ज" और संवादी स्वर "मध्यम" है । पुष्टिमार्गमें बसंत ऋतुमें यह राग किसी भी समय गाया जाता है ।

आरोह :- सा, गम, धनीसां
अवरोह :- सां, नीध, पमग, रेसा
पकड़ :- मग, मधनीसां, रेंसांनीधपम
आलाप :- सा, मग, मधनीसां, मधसां, रेंसां, नीधप, मगरेसा

राग - शुद्ध बसंत

बसंत खेलको पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

खेलत बसंत गिरिधरनलाल ।
जहाँ लाग्यो अबीर गुलाल भाल ॥१॥
केसर रंग छिरकत नवल बाल ॥
लपटावत चोवा अति रसाल ॥२॥
रही पाग ढरक आई अर्ध भाल ॥
देखत मनमथ अति भयौ बिहाल ॥३॥
चंदन लाग्यो है दुहूँ गाल ॥
तब मुरलीधर रिझवत गोपाल ॥४॥
श्रीगोवर्धनधर रसिक राय, चत्रभुजदास बलिहारी जाई ॥५॥

मुखड़ा

म ग
खे -

म	**ध**	**नी**	**सां**	**रें**	**सां**	**नी**	**ध**	**म**	**ध**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**सं**	**नी**
ल	त	ब	सं	-	त	गि	र	ध	र	न	ला	-	ल	ज	हाँ
x				२				०				३			

अन्तरा

सां	**रें**	**रें**	**रें**	**गं**	**रें**	**सां**	**सां**	**नी**	**ध**	**म**	**ध**	**सां**	**सां**	**म**	**ग**
ला	-	ग्यो	-	अ	बी	र	गु	ला	-	ल	भा	-	ल	खे	-

स्थाई

ध नी
के -

सां	**सां**	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**म**	**ग**	**म**	**ध**	**ध**	**नी**	**सां**	**सां**	**सं**	**नी**
स	र	रं	ग	छि	र	क	त	न	व	ल	बा	-	ल	ल	प

अन्तरा

सां	**रें**	**रें**	**रें**	**गं**	**रें**	**सां**	**सां**	**नी**	**ध**	**म**	**ध**	**सां**	**सां**	**म**	**ग**
टा	-	व	त	चो	-	वा	-	अ	ति	र	सा	-	ल	खे	-
x				२				०				३			

इसी प्रकार पूरा पद गाया या बजाया जायेगा ।

राग - ललित बसंत (ललित अंग)

“रे॒ कोमल, मध्यम युगल, पचंम वर्जित होय ।
ललित बसंत, मधुर स्वर, म-स संवादी संजोय ॥”

राग ललित बसंत मारवा थाट से उत्पन्न होता है । इस रागमें “ऋषभ” स्वर कोमल है और दोनों मध्यम का प्रयोग होता है । इस रागमें “पंचम” स्वर वजर्ति है । इस रागमें ललित रागकी छाया पड़ती है । जैसे -ध़नी़साम, म॑ मग, म॑ गरे॒सा ।

इस रागकी ज्ञाति षाड़व - षाड़व है । इस राग का वादी स्वर “मध्यम” और संवादी स्वर “षड़ज” है । पुष्टिमार्गमें यह राग बसंत ऋतुमें किसी भी समय गाया जाता है ।

आरोह : साम, म॑ मग, म॑ धसं
अवरोह : रे॒ं सां नीध, म॑ ध, म॑ मग, म॑ ग, रे॒सा
पकड़ : म॑ धनीसां, नीध, म॑ मग, म॑ गरे॒सा
आलाप : नी़रे॒गम, धम॑ मग, म॑ गरे॒सा, म॑ धसां, नीरे॒ं नीध, म॑ मग, म॑ गरे॒सा ।

राग - ललित बसंत

जगायवे को पद ताल : धमार मात्रा - १४

खेलत बसंत निस पिय संग जागी ॥
सखी वृन्द गोकुल की सीमा,
गिरिवरधर पद रज अनुरागी ॥१॥
नवलकुंजमें गुंजत मधुपपिक,
विविध सुगंध छींटत तन लागी ॥
कृष्णदास स्वामिनी जुवति-जूथ,
रिझवत प्राण पति राधा बड़भागी ॥२॥

मुखड़ा

धऩी	**सा**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म॑म**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**सां**
खेल	त	ब	सं	त	नि	स	पिय	सं	ग	जा	-	गी	-
नीरें	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**सा**
खेल	त	ब	सं	त	नि	स	पिय	सं	ग	जा	-	गी	-
X					२		०			३			

अन्तरा

धध	**म॑**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**नीरें॒**	**गं**	**गं**	**मं॑**	**गं**	**रें॒**	**सां**
सखी	-	-	वृं	द	गो	-	कुल	की	-	सी	-	मा	-
नीरें	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**सा**
गिर	व	र	ध	र	प	द	रज	अ	नु	रा	-	गी	-

स्थायी

धऩी	**स**	**स**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म॑म**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**सां**
नव	ल	कुं	-	ज	में	-	गुंज	त	म	धु	प	पि	क
नीरें	**सं**	**सं**	**नी**	**सं**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**सा**
विवि	ध	सु	गं	-	ध	छीं	टत	त	न	ला	-	गी	-

अन्तरा

धध	**म॑**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**निरें॒**	**गं**	**गं**	**मं**	**गं**	**रें॒**	**सां**
कृ-	ष्ण	दा	-	स	स्वा	-	मिनी	जु	व	ति	-	जू	थ
सांसांसां		**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**म॑ग**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**स**
रिझि	व	त	प्रा	ण	प	ति	राधा	ब	ड़	भा	-	गी	-

राग - हिंडोल बसंत

"रे॒ कोमल, संवादी स-म, म के दोनों रुप ।
पंचम स्वरको बरजकर, हिंडोल बसंत अनूप ॥"

राग ललित बसंत की ही तरह इस रागमें हिंडोल रागकी छाया स्पष्ट दिखाई देती है । इस रागके आरोह में 'ऋषभ' और 'पंचम' स्वर वर्जित हैं। और अवरोह में पंचम स्वर वर्जित होने से इस रागकी जाति औड़व-षाड़व है। इस रागका वादी स्वर 'षड़ज' और संवादी स्वर "मध्यम" है । इस रागका थाट है मारवा । पुष्टिमार्ग में यह राग बसंत ऋतु के दिनों में कभी भी गाया जायेगा । इस राग को कुछ गुणीजन "कृष्ण वसंत" नामसे भी पहचानते हैं ।

आरोह : सा म, म ग, म॑ ध नी सां
अवरोह : सां नी ध, म॑ ध, म॑ ग, म॑ ग रे॒ सा
पकड़ : म॑ ध नी सां रें॒ सां, नी ध, म॑ ग, नी ध म॑ ग, रे॒ सा
आलाप : ध़नी़सा, ग म॑ ग, रे॒ सा, म॑ ध नी सां, रें॒ सा नी सां, नी ध, म॑ ध,
म॑ ग, म॑ ग, रे॒ सा ।

राग - हिंडोल बसंत

बसंत खंडिता को पद ताल : झपताल मात्रा - १०

साँची कहो मनमोहन मोसों, तो खेलो तुम संग होरी ॥
आज की रेन, कहाँ रहे मोहन, कहाँ करी बरजोरी ॥१॥
मुखपर पीक, पीठ पर कंकण, हिये हार बिन डोरी ॥
जियमें और, ऊपर कछु औरें चाल चलत कछु औरी ॥२॥
मोहि बनावत मोहन नागर, कहा मोहे जानत भोरी ॥
भोर भये आये हौ मोहन, बात कहत कछु जौरी ॥३॥
सूरदास प्रभु ऐसी न कीजै, आय मिलौ कहा चोरी ॥
मन मानै त्यों करत नंदसुत, अब आई है होरी ॥४॥

मखड़ा

x		२			०		३		
सा	**सा**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**
साँ	-	ची	-	क	हो	-	म	-	न
म॑	**ग**	**ग**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**सां**	**सां**
मो	-	ह	-	न	मों	-	सो	-	-
नी	**रें**	**सां**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**प**
तो	-	खे	-	-	लो	-	-	-	-
म॑	**ग**	**म॑**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**
तु	म	सं	-	ग	हो	-	री	-	-

अन्तरा

ध	**ध**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सां**	**नी**	**रें॒**	**सां**	**सां**
आ	-	ज	-	की	रे	-	-	-	न
नी	**रें**	**गं**	**गं**	**गं**	**म॑ं**	**गं**	**रें॒**	**रें॒**	**सां**
क	हाँ	र	हे	-	मो	-	ह	-	न
सां	**नी**	**रें॒**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**ध**
क	हाँ	-	-	-	क	री	ब	-	र
म॑	**ग**	**म॑**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**
जो	-	-	-	-	री	-	-	-	- ।।१।।

स्थाई

ध़	**ऩी**	**सा**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**	**म**
मु	ख	प	-	र	पी	-	क	-	-
म॑	**ग**	**ग**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**सां**	**सां**
पी	ठ	प	-	र	कं	-	क	-	ण

नी	**रें॒**	**सां**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**ध**
हि	-	ये	-	-	हा	-	र	-	-
म॑	**ग**	**म॑**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**
बि	न	डो	-	-	री	-	-	-	-

अन्तरा

ध	**ध**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सां**	**नी**	**रें॒**	**सां**	**सां**	
जि	य	में	-	-	औ	-	र	-	ऊ	
नी	**रें॒**	**गं**	**गं**	**गं**	**म॑**	**गं**	**रें॒**	**सां**	**सां**	
प	र	क	-	छु	औ	-	रैं	-	-	
सां	**नी**	**रें॒**	**सां**	**सां**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**ध**	
चा	-	ल	-	च	ल	त	क	-	छु	
म॑	**ग**	**म॑**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**	
औ	-	-	-	-	री	-	-	-	-	॥२॥

इसी प्रकार नीचेकी लाईने गाई जायेगी ।

स्थाई

मोहि बनावत मोहन नागर कहाँ मोहे जानत भोरी ॥

अन्तरा

भोर भये आये हो मोहन, बात कहत कछु जौरी ॥३॥

स्थाई

सूरदास प्रभु ऐसी न कीजै, आय मिलौ कहा चोरी ॥

अन्तरा

मन मानै त्यों करत नंदसुत अब आई है होरी ॥४॥

राग : हिंडोल

"रि - प वर्जित सुर मानकर, मध्यम तीवर बोल ।
ध - ग वादी- संवादि तें औडुव राग हिंडोल ॥"

यह राग अति प्राचीन राग है। मूल छः रागों में इसका समावेश है।

राग हिंडोल का थाट कल्याण है। वादी स्वर "धैवत" एवं संवादी स्वर "गांधार" है। इस राग में 'प - रे' स्वर वर्जित है। इसलिये इस राग की जाति ओड़व है। इसमें तीव्र मध्यमका प्रयोग किया जाता है। शेष सभी स्वर शुद्ध है। इस राग के आरोह में "नि" का प्रयोग कम किया जाता है। वह भी वक्र रूप में होता है। यदि हिंडोल राग में निषाद का प्रयोग अधिक किया जाय, तो सोहनी राग की छाया पड़ सकती है। उत्तम गायक इसमें गमक का सुंदर प्रयोग करते हैं।

अष्टसखाओं में से एक भवतकवि श्रीकृष्णदासजी के एक पद में राग हिंडोल का लगभग ऐसा ही वर्णन मिलता है।

अष्टछाप परंपरा में बसंत धमार के पद इस रागमें गाये जाते हैं। होरी - डोल के पदों के अलावा कुछ पद हिंडोले में भी दिये गये है। संप्रदाय में प्रातःकालीन एवं खंडिताकी भावना इत्यादि पद राग हिंडोल में गाये जाते है। इस राग का गायन समय वैसे तो दिन का प्रथम प्रहर है, किन्तु पुष्टिमार्ग में हिंडोला इत्यादि के पद इस राग में पाये जाते हैं जो कि संध्याकालीन है।

आरोह : सा ग म॑ धनी ध सां

अवरोह : सां नी ध म॑ ग सा

मुख्यांग : सा ग म॑ ध नी ध म॑ ग सा

आलाप : सा, ऩीसागसा, गम॑ ध, म॑ ग, सा, ग म॑ ध, नीधसां,
नीसांगंसां, गंमं॑ गंसां, नीधम॑ ग, म॑ ध म॑ ग सा

राग हिंडोल

रास का पद ताल : झपताल मात्रा - १०

रास विलास रंग भरे निर्तत ॥
एक ही वेश एक रूप गुण, गिरधर श्याम राधिका गोरी ॥१॥
नव पटपीत और नव भूषण, नव किंकणी कटि युग थोरी ॥
दुहूँ दिश सकल सिंगार बिराजत,
मानों त्रिभुवन की सुभगता चोरी ॥२॥
तान बंधान वेणु रव सों मिल, विधना रची सरस यह जोरी ॥
कुंभनदास प्रभू गोवरधनधर, सुरत केलि में कंचुकी छोरी ॥३॥

स्थायी

सं	**सं**	**ध**	**नी**	**ध**	**म॑**	**म॑**	**ग**	**ग**	**ग**
रा	-	स	-	वि	ला	-	स	-	-
म॑	**म॑**	**ग**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**म॑**	**ध**
रं	ग -	भ	रे	-	नि	र	त	-	त

अंतरा

ध	**ध**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**
ए	-	क	-	ही	वे	श	ए	-	क
ध	**ध**	**सं**	**गं**	**गं**	**म॑**	**गं**	**सं**	**सं**	**सं**
रू	प	गु	-	ण	गि	र	ध	-	र
सं	**सं**	**ध**	**नी**	**ध**	**म॑**	**म॑**	**ग**	**ग**	**ग**
श्या	-	म	-	-	रा	धि	का	-	-
म॑	**म॑**	**ग**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**म॑**	**ध**
गो	-	-	-	-	री	-	-	-	-
X		२			०		३		

संचारी

सं	**सं**	**ध**	**ध**	**ध**	**नी**	**ध**	**म॑**	**म॑**	**ग**
न	व	प	-	ट	पी	त	औ	-	र
ग	**ग**	**म॑**	**ध**	**म॑**	**ग**	**ग**	**स**	**स**	**स**
न	व	आ	-	-	भू	-	ष	-	ण
स	**ध़**	**स**	**स**	**स**	**ग**	**म॑**	**ग**	**ग**	**स**
न	व	किं	-	-	क	णी	-	-	-
सं	**सं**	**ध**	**नी**	**ध**	**म॑**	**ग**	**स**	**स**	**स**
क	टि	यु	-	ग	थो	-	री	-	-

आभोग

ध	**ध**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**
दु	हूँ	दि	-	श	स	क	ल	-	सिं
ध	**ध**	**सं**	**गं**	**गं**	**म॑**	**गं**	**सं**	**सं**	**सं**
गा	-	र	-	बि	रा	-	ज	-	त
सं	**सं**	**ध**	**नी**	**ध**	**म॑**	**म॑**	**ग**	**ग**	**ग**
मा	नों	त्रि	-	भु	व	न	की	-	सु
म॑	**म॑**	**ग**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ध**	**नी**	**म॑**	**ध**
भ	ग	ता	-	-	चो	-	री	-	-

स्थायी

ता	-	न	-	बं	धा	-	न	-	-
वे	णु	र	-	व	सों	-	मि	-	ल
वि	ध	ना	-	-	र	ची	-	-	-
स	र	स	य	ह	जो	-	री	-	-

अंतरा

कुं	-	भ	-	न	दा	स	प्र	-	भु
गो	-	व	-	र	ध	न	ध	-	र
सु	र	त	-	-	के	लि	में	-	-
कं	-	चु	-	की	छो	-	री	-	-

राग : सिन्दूरा (कान्हरा)

“ग. नि आरोहन त्यागकर, कोमल ग - नि बखान ।
स. प संवाद बनायकर, सुघर सिंदूरा जान ।।”

राग सिन्दूरा कान्हराको, राग ‘सिंधुडा’ या ‘सैन्धवी’ भी कहते हैं ।

यह एक प्राचीन राग है। यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। यह राग शास्त्रीय संगीत के राग दुर्गा एंव काफी के मिश्रण से बना है। इस राग के आरोह में ‘गांधार’ और ‘निषाद’ स्वर वर्ज्य होने से, इस राग की जाति औड़व - संपूर्ण मानी जाती है। अवरोह में कोमल ग - नि का प्रयोग होता है ।

इस राग का वादी स्वर “षडज” और संवादी स्वर “पंचम” है। इस राग को पुष्टिमार्ग में सायंकालीन राग माना जाता है। इसमें करखाके और होरी धमार के पद गाये जाते है। यह राग दुर्गा एवं काफी राग के मिश्रण से बना है ।

इस राग की प्रकृति वीर एवं अद्‌भुत रसकी होने से कररवा व होरी जैसे पदो में यह राग अधिक खिल उठता है ।

आरोह : सा रे म प ध सां

अवरोह : सां नी̲ ध प, म ग̲ रे सा

पकड़ : रे म प ध, सां नी̲ ध प म ग̲ रे सा

आलाप : सा रे म ग̲ रे सा, रे म प ध सां, नी ध प ध म, ग̲ रे सा, रे म प ध सां,
रें ग̲ रें सां, नी̲ ध प म ग̲, रे ग̲ रे सा

राग सिन्दूरा (कान्हरा)

होरी खेल का पद ताल : तेवरा मात्रा - ७

मो सो होरी खेलन आयौ ।

लटपटी पाग अटपटे पेचन, नयनन बीच सुहायौ ॥१॥

डगर डगर में बगर बगर में, सब हिन के मन भायो ॥

आनंद धन प्रभु कर, दृग मींडत, हँस हँस कंठ लगायौ ॥२॥

मुखडा

२		३		X			२		३		X	२	
रे	म	प	ध	नी	ध	प	ध	म	प	म	ग	रे	सा
मो	सों	हो	री	रे	-	-	ल	-	न	-	आ	-	यो

अंतरा

रे	म	प	ध	धम	प	ध	सं	सं	सं	सं	रेंगं	रें	सं
मो	सों	हो	री	लट	प	टी	पा	-	-	ग	अट	प	टे
नी	ध	सं	सं	संसं	सं	सं	नी	ध	म	प	ग	रे	स
पे	-	च	न	नय	न	न	बी	-	च	सु	हा	-	यो

स्थायी

रे	म	प	ध	सरे	म	म	प	प	म	प	संनी	ध	प
मो	सो	हो	री	डग	र	ड	ग	र	में	-	बग	र	व
म	ग	रे	स	सरे	म	प	ध	नी	प	ध	सं	-	सं
ग	र	में	-	सब	हि	न	के	-	म	न	भा	-	-

अंतरा

नी	ध	म	प	धम	प	ध	सं	सं	सं	सं	रेंगं	रें	सं
यो	-	-	-	आ	नं	द	घ	न	प्र	भु	कर	दृ	ग
नी	ध	सं	सं	संसं	सं	सं	नी	ध	म	प	ग	रे	स
मीं	-	ड	त	हँस	हँ	स	कं	-	ठ	ल	गा	-	यो

राग मारवा

"रि-ध वादी - संवादी कर, पंचम वर्जित कीन्ह ।
रे कोमल, मध्यम कड़ी, राग मारवा चीन्ह ॥"

राग मारवा का वादी स्वर है "कोमल ऋषभ" और संवादी स्वर है "धैवत" । यह राग मारवा थाट से उत्पन्न होता है । इस राग में पंचम स्वर वर्जित होने से यह षाड़व - षाड़व जाति का राग है । इस रागमें ऋषभ कोमल है और मध्यम तीव्र । इस रागके आरोह में निषाद कई स्थानों पर वक्र गति से प्रयुक्त होता है । रे̱ ग ध इन स्वरों पर इस रागकी विचित्रता निर्भर है । अवरोह में जब ऋषभ वक्र होता है तब यह राग अधिक चमकता है । इस रागका गायन समय दिन का अंतिम प्रहर है ।

पुष्टिभक्ति संगीत में इस रागके कीर्तन कमही पाये जाते हैं, किन्तु यह राग अपने आपमेंही एक थाट होने से इस पाठयक्रममें इसका उल्लेख किया गया है ।

आरोह :- सा रे̱ ग, म॑ ध, नीध, सां
अवरोह :- सां नी ध, म॑ ग रे̱ सा
पकड़ :- ध म॑ ग रे̱, ग म॑ ग, रे̱, सा
आलाप :- सा, म॑ ध नी सां, रे̱ सा, रे̱ ग म॑ ग रे̱ सा,
ग म॑ ध, म॑ ध नी सां, नी सां रें̱ सां, ध नी सां गं मं॑ गं रें̱ सां,
नीध, म॑ ध, म॑ ग, रे̱ ग म॑ ग रे̱ सा, ऩीध़ सा ऩी रे̱ सा

राग मारवा

ताल : तीनताल मात्रा - १६

नैना तेरे अति रसमाते ।।
इनमहि अरुन डोरे कछु, लागत अधिक सुहाते ।।१।।
कबहुँक, इकटक देख रहत हैं, कबहुँक मुरमुसकाते ।।
रसिकप्रीतम संग निशदिन विलसत, नेंक नहीं सकुचाते ।।२।।

मुखड़ा

०				३				x				२			
गम॑	ध	म॑	ग	रे॒	रे॒	सा	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	रे॒	रे॒	सा	सा
ने-	-	ना	-	ते	-	रे	-	अ	ति	र	स	मा	-	ते	-

अन्तरा

ध	ध	म॑	ध	सां	सां	सां	सां	नी	रें॒	गं	गं	म॑	गं	रें॒	सां
इ	न	म	हि	अ	रु	न	अ	रु	न	डो	-	रे	-	क	छु
सां	सां	सां	सां	नी	सां	नी	ध	म॑	ग	नी	ध	म॑	ग	रे॒	सा
ला	-	ग	त	अ	धि	क	सु	हा	-	-	-	ते	-	-	-

स्थायी

ध़	ऩी	सा	ग	ग	ग	ग	ग	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	रे॒	सा	सा
क	ब	हुँ	क	इ	क	ट	क	दे	-	ख	र	ह	त	हैं	-
गम॑	ध	म॑	ग	रे॒	रे॒	सा	सा	ऩी	ध़	ऩी	सा	रे॒	रे॒	सा	सा
क-	ब	हुँ	क	मु	र	मु	स	का	-	-	-	ते	-	-	-

अन्तरा

ध	ध	म॑	ध	सां	सां	सां	सां	नी	रें॒	गं	गं	म॑	गं	रें॒	सां
र	सि	क	प्री	त	म	सं	ग	नि	श	दि	न	वि	ल	स	त
सां	सां	सां	सां	नी	सां	नी	ध	म॑	ग	नी	ध	म॑	ग	रे॒	सा
ने	-	क	न	हीं	-	स	कु	चा	-	-	-	ते	-	-	-
०				३				x				२			

राग जैतश्री

"रि-ध कोमल मध्यम करी, ग-नि संवाद बनाय ।
आरोही रि-ध बरजकर, राग जैतश्री भाय ॥

प्राचीन रागों में से एक राग जैतश्री है। सम्प्रदायकी प्रणाली में होली - हिंडोला, आदि के त्यौहारों में इस राग में पद गाये जाते हैं। यह राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है। इस राग का वादी स्वर 'गांधार' और संवादी स्वर 'निषाद' है। कुछ गुणीजन इस राग का वादी स्वर 'पंचम' और संवादी स्वर 'षड़ज' मानते है। कुछ गुणीजन इस राग को मारवा थाटका राग भी मानते हैं। किन्तु हमारी संगीत परंपरा और सम्प्रदायकी प्रणाली में इसराग को पूर्वी थाटका ही मानते है।

इस राग में रे॒ - ध॒ स्वर कोमल लिये जाते हैं । 'म॑' तीव्र लिया जाता है। आरोह में रे॒ - ध॒ स्वर वर्ज्य होने से इस राग की जाती औड़व - सम्पूर्ण मानी जाती है। इस राग का गायन समय सायंकाल का है ।

आरोह : सा ग, म॑ प, नी सां
अवरोह : सां नी ध॒ प, म॑ ग रे॒ सा
पकड़ : ऩी सा ग म॑ प, म॑ ध॒ प, म॑ ग म॑ ग रे॒ सा
आलाप : सा रे॒ सा, ग, प म॑ ध॒ प, म॑ ग रे॒ सा, म॑ प नी सां रें॒ सां, नी सां नी ध॒ प,
म॑ ग म॑ ग रे॒ सा, म॑ ध॒ नी सां रें सां, रें॒ नी ध॒ प, म॑ ग, म॑ ध॒,
म॑ ग रे॒ सा ।

डोल का पद **ताल : धमार** **मात्रा - १४**

झूलत डोल राधिका के संग ॥
गोवर्धन पर्वत के ऊपर खेलत अतिरस रंग ॥१॥
प्रथम खेल राधे मन हुलस्यो, केसर लपटत अंग ॥

दूजौ खेल रच्यौ चंद्रवलि, अबीर गुलाल सुरंग ।।२।।
तीजौ खेल कियौ ललितदिक, अग्नि कुमारी संग ।।
चौथौ खेल कियौ ब्रन्दावन, मोहे रसिक अनंग ।।३।।

मुखड़ा

X					२		०			३			
सस	**ग**	**म॑**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म॑ध**	**प**	**म॑**	**ग**	**म॑**	**ग**	**ग**
झू	ल	त	डो	-	ल	श्री	रा-	धि	का	के	-	सं	ग
पसं	**नी**	**ध॒**	**प**	**प**	**म॑**	**ग**	**म॑ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**स**	**स**
झू	ल	त	डो	-	ल	श्री	रा-	धि	का	के	-	सं	ग

अंतरा

ध॒ध॒	**म॑**	**ध॒**	**नी**	**नी**	**सं**	**सं**	**नीरें॒**	**गं**	**गं**	**म॑ं**	**गं**	**रें॒**	**सं**
गो	व	र	ध	न	प	र	वत	के	-	उ	-	प	र
ध॒सं	**नी**	**ध॒**	**प**	**प**	**म॑**	**ग**	**म॑ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**स**	**स**
खे	ल	त	अ	ति	र	सा	रं-	-	-	ग	-	-	-

स्थायी

नी़स	**ग**	**म॑**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म॑ध॒**	**नी**	**ध॒**	**नी**	**ध॒**	**प**	**प**
प्रथ	म	खे	-	ल	रा	-	धे-	म	न	हु	ल	श्यो	-
पप	**म॑**	**प**	**म॑**	**ग**	**ग**	**म॑**	**गरे॒**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**स**	**स**
के-	श	र	ल	प	ट	त	अं-	-	-	ग	-	-	-

अंतरा

ध॒ध॒	**म॑**	**ध॒**	**नी**	**नी**	**सं**	**सं**	**नीरें॒**	**गं**	**गं**	**म॑ं**	**गं**	**रें॒**	**सं**
दू-	जो	-	खे	-	ल	र	च्यो-	चं	-	द्रा	-	व	लि
ध॒सं	**नी**	**ध॒**	**प**	**प**	**म॑**	**ग**	**म॑ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे॒**	**स**	**स**
अबी	र	गु	ला	-	ल	सु	रं	-	-	गं	ग	-	-

स्थायी

ती	जो	-	खे	-	ल	कि	यो	ल	लि	ता	-	दि	क
अ	ग्नि	कु	मा	-	से	-	सं	-	-	ग	-	-	-

अंतरा

चो	थौ	-	खे	-	ल	कि	यो	बृ	-	न्दा	-	ब	न
मो	हे	-	र	सि	र	अ	हि	त	अ	नं	-	-	ग

इसी प्रकार पूरा पद गाया जायेगा ।

राग : जंगला

"नी के दोऊ रूप लै, थाट खमाज सुहाय ।
संपूरण संवाद स-प, गुनी जंगला गाय ॥"

राग जंगला को, जंगुला नाम से भी पहचाना जाता है। इस राग के पद बहुत कम संख्या में है। श्री हरिरायजी के समय के उत्तरार्ध में, रासधारियों के द्वारा इस राग का प्रचार शायद हुआ था, ऐसा माना जाता है ।

पं. भातखंडेजी ने जंगला राग का जो उल्लेख किया है वह हमारे सम्प्रदाय के राग से भिन्न है। पं. भातखंडेजी ने इस राग का थाट, आसावरी और भैरव बताया है। यह राग अधिकतर दादरा - ठुमरी आदि गायनशैली में देखा जाता है।

हमारे यहाँ जंगला राग का थाट खमाज माना जाता है। यह संपूर्ण जाति का राग है। इस राग का वादी स्वर "स" तथा संवादी स्वर "प" है। पुष्टि संप्रदाय के मन्दिरों में इस राग के पद प्रायः सांझी, हिंडोला के तथा अन्य उत्सवों के पाये जाते हैं। सम्प्रदाय में यह राग भोग तथा संध्या समय में गाया जाता है ।

इस राग को नूर सारंग की तरह, मध्यमको षड्ज मानकर गाने की प्रथा है ।

आरोह : सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह : सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ : म ग रे, नी़ सा, प़ नी़ सा रे ग, सा

आलाप : नी़ सा, रे सा, रे ग म प, म ग रे सा, प नी सां, रें गं सां, नी ध प म ग,
ग रे सा, प़ नी़ सा

राग जंगला

साझी कौ पद ताल : रूपक मात्रा - ७

अरी तुम कौन हो री या बन में फुलवा बीनन हारी ॥
नेह लगन को बन्यो है बगीचा, फूलरही फुलवारी ॥ १ ॥
कृष्णचंद बनवारी आये मुख, क्यों न बोलत सुकुमारी ॥
तुमतो नंदमहरके ढोटा, हम वृषभानदुलारी ॥ २ ॥
या बनमें हम सदा बसत हैं, हमही करत रखवारी ॥
बिन बूझे बीनत हो फुलवा, जोबन मद्‌मतवारी ॥ ३ ॥
तब ललित एक मतो उपायो, सेन बताई प्यारी ॥
सूरदासप्रभु रसबसकीने, बिरह वेदना टारी ॥ ४ ॥

मुखड़ा

X		२		०			X		२		०		
गरे	गरे	नि़	सा	ग	रे	रे	रे	ग	म	प	म	ग	रे
अ-	री-	तु	म	कौ	-	न	हो	-	-	-	री	-	या
नि़	सा	नी़	प़	प़	नी़	सा	गरे	ग	सा	नि़	सा	सा	म
ब	न	में	-	फु	ल	वा	बी-	-	न	न	हा	-	री

अंतरा

०			X		२		०			X		२	
रेरे	म	म	प	प	प	प	पप	प	म	मध	पध	मग	रे
ने-	ह	ल	ग	न	को	-	बन्यो	है	ब	गी-	--	चा	--
नी	नी	सां	नी	ध	प	प	मम	ग	रे	गरे	गरे	नि़	सा
फु	ल	र	ही	-	फु	ल	वा-	-	री	अ-	री-	तु	म

स्थायी

०			X		२		०			X		२	
प़प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	नि़	सा	रे	नी़	ध़	प़	प़
कृ-	ष्ण	चं	-	द	ब	न	वा	-	री	आ	ये	मु	ख
रे	सा	नि़	नि़	सा	रे	सा	म	ग	रे	रे	रे	रे	रे
क्यों	न	बो	ल	त	सु	कु	मा	-	री	-	-	-	-

अंतरा

०			X		२		०			X		२	
रेरे	म	म	प	प	प	प	पप	प	म	मध	पध	मग	रे
तु	म	तो-	नं	-	द	म	हर	के	-	ढो-	--	टा	--
नी	नी	सां	नी	ध	प	प	मम	ग	रे	गरे	गरे	नि़	सा
हम	वृ	ष	भा	-	न	दु	ला	-	री	अ-	री-	तु	म

स्थायी

०			X		२		०			X		२	
प़प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	नि़	सा	रे	नी़	ध़	प़	प़
या-	ब	न	में	-	ह	म	स	दा	ब	स	त	है	-
रे	सा	नि़	नि़	सा	रे	सा	म	ग	रे	रे	रे	रे	रे
हम	ही	क	र	त	र	ख	वा	-	री	-	-	-	-

अंतरा

०			X		२		०			X		२	
रेरे	म	म	प	प	प	प	पप	प	म	मध	पध	मग	रे
बिन	बू	-	झे	-	बीं	-	नत	हो	-	फु-	ल	वा	--
नी	नी	सां	नी	ध	प	प	मम	ग	रे	गरे	गरे	नि़	सा
जो	ब	न	म	द	म	त	वा-	री	-	अ-	री-	तु	म

स्थायी

०			X		२		०			X		२	
प़प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	नि़	सा	रे	नी़	ध़	प़	प़
तब	ल	लि	ता	-	ए	क	म	तो	उ	पा	-	यो	-
रे	सा	नि़	नि़	सा	रे	सा	म	ग	रे	रे	रे	रे	रे
से	न	ब	ता	-	ई	-	प्या	-	री	-	-	-	-

अंतरा

०			X		२		०			X		२	
रेरे	म	म	प	प	प	प	पप	प	म	मध	पध	मग	रे
सू	-	र	दा	स	प्र	भु	रस	ब	स	की	--	ने-	-
नी	नी	सां	नी	ध	प	प	म	ग	रे	गरे	गरे	नि़	सा
बिर	ह	वे	-	ना	-	टा	-	री	-	अ-	री-	तु	म

राग नट नारायणी

"आरोही ग - नि बरज, अवरोही लै गांधार ।
रे - प वादी संवादी कर, नट नारायणी संभार ॥"

राग नट नरायणी बिलावल थाट का राग है । इस राग में सभी स्वर शुद्ध लगते है । इस राग का वादी स्वर 'रिषभ' और संवादी स्वर पंचम है। इस राग में निषाद वर्ज्य होने से इस राग की जाति औड़व - षाड़व है । पुष्टिभक्तिसंगीत में इस राग का केवल एक ही पद प्राप्त होता है जो इस प्रकार है ।

आरोह : सारे, म प, ध सां

अवरोह : सां ध प, रे ग म प, ग म रे सा

आलाप : सा, रेसा, रेगम, प, गम, रेसा, पप सां, रेंसां, गंमंरेंसा,
सां ध प, रे ग म प, ग म रे सा ।

रास को पद ताल : चर्चरी मात्रा - १०

नागर नट नारायण गायौ ॥
तान बंधान सप्त स्वर सों मिल, राग सों राग मिलायौ ॥१॥
चरण धूंधरू जंत्र भुजनपर, नीकौ झमक झमायौ
तत थेई तत थेई, लेत गति में गति, पति ब्रजराज, रिझियौ ॥२॥
सकल त्रियन में, सहज चातुरी, अंग सुधंग, दिखायौ ॥
व्यास स्वामिनी, धन्य धन्य राधिका, रासमें रंग, मचायौ ॥३॥

मुखड़ा

X २ ० ३
स रे | स ध प | ग म | रे रे स
ना - | ग - र | न ट | ना - -
रे रे | ग म प | ग म | रे रे स
रा - | य - ण | गा - | यौ - -
सं सं | ध ध प | रे रे | ग म प
ना - | ग - र | न ट | ना - -
ग म | रे रे स | रे रे | स स स
रा - | य - ण | गा - | यौ - -

अंतरा

प प | सं सं सं | सं सं | रें रें सं
तां - | न - बं | धा - | - - न
ध ध | सं सं रें | सं सं | ध ध प
स प्त | स्व - र | सों - | मि - ल
स रे | स ध प | ग म | रे रे स
रा - | ग - सों | रा - | ग - मि
रे रे | ग म प | ग म | रे रे स
ला - | - - - | यौ - | - - -

स्थायी

सं सं | ध ध प | प प | प प प
च र | ण - - | घूं घं | रू - -
प रे | ग म प | ग म | रे रे स
जं - | त्र - भु | ज न | प - र

स स । रे रे स । रे ग । म म प

नी - । कौ - - । झ म । क - ज

ग म । रे रे स । रें रे । सासासा

मा - । - - - । यो - । - - -

अंतरा

प प । सं सं सं । सं सं । रें रें सं

ता ता । थे - ई । ता ता । थे - -

ध ध । सं सं रें । सं सं । ध ध प

ले त । ग - ति । मे - । ग - ति

स रे । स ध प । ग म । रे रे स

प ति । ब्र - ज । रा - । ज - रि

रे रे । ग म प । ग म । रे रे स

झा - । - - - । यो - । - - -

स्थायी

स क । ल - त्रि । य न । मे - -

स ह । ज - - । चा तु । री - -

अं - । ग - सु । ध - । ग - दि

खा - । - - - । यो - । - - -

व्या - । स - - । स्वा मि । नी - -

ध न्य । ध - न्य । रा धि । का - -

रा - । स - मे । रं - । ग - ज

मा - । - - - । यो - । - - -

पूरा पद इसी नोटेशन पर गाया जायेगा ।

राग कल्याण

"कल्याण ही के थाट में, चढते मनी हटाय ।
यही राग कल्याण है, गध संवादी सुहाय ।।"

यह राग शीतल और गंभीर है इस लिये इसे उष्णकाल में अधिक गाय जाता है परन्तु बधाई में इसे किसी भी ऋतु में गा सकते हैं।

यह राग कल्यान थाट से उत्पन होता है और इसकी जाती है औडव संपूर्ण इसका वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर धैवत है यह राग शयन दर्शन और उसके बाद के कीर्तनोमें गाया जाता हैं । इसके आरोह और अवरोह इस प्रकार हैं ।

आरोह : स, रे ग ,प ध सं,
अवरोह : सं नी ध प , म॑ ग रे स,
पकड : सं ध सं रें गं रें सं नी ध प म॑ ग रे स,
आलाप : स ध़ स रे ग, रे ग प म॑ ग रे
ग रे स, ग प म॑ ग म॑ ध सं,
नि रें गं रें सं , नी ध प, म॑ ग रे स

राग ईमन और कल्याणके समान स्वर हैं लेकिन चलन अलग अलग है । जैसे इमनमें आरोह में म और नी की प्रधानता है जब कि कल्याण में आरोह में म नी वर्ज्य हैं, इमनका चलन इस प्रकार हैं,

धनीसंनीधप, म॑ प, म॑ गरे, गरेस,

जबकि कल्याणमें **प ग प ध नी ध प**

संधसंरेंगंरेंसं, नीधप, गरे, गप, गरेस,

राग कल्याण

ताल ः धमार   मात्रा - १४

शयन दर्शन के दिप दान और गाय......खिलायवे का पद

देखौ इन दिप को सुंदराई ॥
मनो धनमें, विधुमंडल राजत, तम निश, परम सुहाई ॥१॥
नंदराय (अनगिनत) पाँतरची अद्‌भुत युक्ति बनाई ॥
विविध सुगंध, कपूर आदि दिये , धृतपरिपूरण ताई ॥२॥
घर घर मंगल, होत सबनके, उर आनंद न समाई ॥
कुँभनदास प्रभु धैनु खिलावत, गिरधर सब सुखदाई ॥३॥

मुखड़ा

सं	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**नी**	**रें**	**गरें**	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**प**
दी	प	न	की	-	सुं	द	रा-	ई	-	दे	खौ	इ	न
नी	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**ग**	**गरे**	**ग**	**प**	**ग**	**रे**	**स**	**स**
दी	प	न	की	-	सुं	द	री-	-	-	ई	-	-	-

अंतरा

पग	**म॑**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**नीध**	**नी**	**रें**	**गं**	**रें**	**सां**	**सां**
मा-	नों	ध	न	में	वि	धु	मं-	ड	ल	रा	-	ज	त
नीरें	**गं**	**रें**	**सां**	**नी**	**ध**	**प**	**गरे**	**ग**	**प**	**ग**	**रे**	**सा**	**सा**
तम	नि	श	प	र	म	सु	हा-	-	-	ई	-	-	-

स्थायी

पग	**प**	**प**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म॑म॑**	**ध**	**ध**	**नी**	**ध**	**प**	**प**
नं-	द	रा	-	य	अ	न	गिन	त	पाँ	-	ति	र	ची
पध	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**ग**	**गरे**	**ग**	**प**	**ग**	**रे**	**स**	**स**
अद्	भु	त	यु	-	क्ति	ब	ना-	-	-	ई	-	-	-

अंतरा

पग	**म॑**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**नीध**	**नी**	**रें**	**गं**	**रें**	**सां**	**सां**
विवि	ध	सु	गं	-	ध	क	पू-	र	आ	-	दि	दि	ये
नीरें	**गं**	**रें**	**सां**	**नी**	**ध**	**प**	**गरे**	**ग**	**प**	**ग**	**रे**	**सा**	**सा**
धृत	प	रि	पू	-	र	न	ता-	-	-	ई	-	-	-

इसी प्रकार शेष कडीयाँ गाई जायेगी ।

राग श्याम कल्याण

"चढ़ते धैवत त्यागकर, दोनों मध्यम मान ।
स-म वादी संवादी सों, कहत श्याम कल्याण ॥"

यह राग कल्याण थाट का ही एक प्रकार है । इस रागमें दोनों मध्यम का प्रयोग होता है । इस रागका वादी स्वर "षड़ज" है और संवादी स्वर 'मध्यम' है । इस रागके आरोहमें धैवत स्वर वर्जित है । इस रागकी जाती औड़व–सम्पूर्ण है और इस रागका गायन समय है रात्रिका प्रथम प्रहर।

पुष्टिभक्तिमार्गमें हिंडोरा के कुछ पद राग श्याम कल्याण में पाये जाते हैं ।

आरोह :- ऩीसा, रे, म॑ प, धप, नी सां
अवरोह :- सां नी ध, म॑ प ग म रे, ऩीसा
पकड़ :- म रे, ऩी सा, रे, म॑ प, धप, मरे, ऩी सा
आलाप :- रे म॑ प, ध प, म रे, ऩी सा, रे म॑ प, नी सां, रें सा,
गं मं रें सां, नी ध प, म॑ प ध प, म रे ऩी सा

शयन समय का पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

कंदबवन बीथिन करत विहार ॥
अति रसभरे मदनमोहन पिय
तोरयो प्रिया उर हार ॥१॥
कनकभूमि बिखरे गज मोती, कुंज कुटीके द्वार ॥
गोविन्दप्रभु श्री हस्तकर पोवत
सुंदर व्रज राजकुमार ॥२॥

मुखड़ा

०				३				X				२			
गम	पध	म॑प	गम	रे	रे	ऩी	स	रे	रे	म॑	म॑	प	म॑	प	प
बी-	--	थि-	न-	क	र	त	वि	हा	-	र	क	दं	ब	व	न

अन्तरा

प	प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	प	नी	सं	रें	नी	सं	ध	प
अ	ति	र	स	भ	रे	-	म	द	न	मो	-	ह	न	पि	य
म॑	म॑	म॑	म॑	प	प	म॑	प	ध	ध	प	प	ग	म	रे	स
तो	-	र्यो	प्रि	या	-	उ	र	हा	-	र	क	दं	ब	व	न

स्थायी

रे	रे	म॑	म॑	प	म॑	प	प	ग	म	रे	स	रे	रे	स	स
क	न	क	भू	-	मि	बि	ख	रे	-	ग	ज	मो	-	ती	-
गम	पध	म॑प	गम	रे	रे	ऩी	स	रे	रे	म॑	म॑	प	म॑	प	प
कुं-	--	ज-	कु-	टी	-	के	-	द्वा	-	-	-	र	-	-	-

अन्तरा

प	प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	प	नी	सां	रें	नी	सं	ध	प
गो	-	वि	न्द	प्र	भु	श्री	-	ह	स्त	क	र	पो	-	व	त
म॑	म॑	म॑	म॑	प	प	म॑	प	ध	ध	प	प	ग	म	रे	स
सुं	दर	ब्र	ज	रा	-	ज	कु	मा	-	र	क	दं	ब	व	न

राग झिंझोटी

"गा वादी, संवादी नी, कोमल लियो निषाद ।
राग झिंझोटी गाइए, प्रथम रात्रिके बाद ॥"

राग झिंझोटी खमाज ठाठ का आश्रय राग है । इस रागका विस्तार मंद्र व मध्य सप्तकोंमें विशेष रुप से रहता है । "ध़सा, रे, मग" यह स्वर-समुदाय रागवाचक है ।

इस रागकी जाति संपूर्ण है । इस रागका वादी स्वर "गांधार" और संवादी स्वर "निषाद" है। इस रागमें निषाद स्वर कोमल लगता है, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं । इस रागका गायन समय रात्रिका दूसरा प्रहर है ।

आरोह :- सा रे ग म, प ध नी सां
अवरोह :- सां नी ध प, म ग रे सा
पकड़ :- ध़ सा, रे म, ग, प म ग रे, सा ऩी ध़ प़
आलाप :- सारेसा, ऩीध़प़, ध़रेस, मगरेसा, ध़सा, रेमग, प, मग,
रेसा, ऩीध़प़, ध़सा, रेमग, रेगमपमग, धपमग, सारेग,
सा, ऩीध़प़, ध़सा

बाललीला कौ पद ताल - तीनताल मात्रा - १६

खेलत झुनझुनियाँ ते श्याम ।
रतन जटित पलना में पौढे, नंद सुवन सुख धाम ॥१॥
कटि किंकनी कलित कंकन कर, गल मोतियन की माल,
उर बघ नखा बाहु बाजूबंद, तिलक सुशोभित भाल ॥२॥
लोल कपोल अधर अरुनारे, घन घुंघराले केश ।
मंजु मधुर दृग कंज हरत मन, मोहन बाल सुबेस ॥३॥
मुकुट मयूर पिच्छ राजत सिर, मुक्ता गूंथे ललाम ॥
परम अकिंचन के धन दुर्लभ जसुधा मन विश्राम ॥४॥

बाललीला का पद

मुखड़ा

२				०				३				४			
ग	**रे**	**म**	**ग**	**रे**	**सा**	**नी़॒**	**प़**	**ध़**	**सा**	**रे**	**म**	**ग**	**ग**	**ग**	**रे**
खे	ऽ	ल	त	झु	न	झु	नि	याँ	ऽ	ते	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	म

अन्तरा

०				३				x				२			
म	**म**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**सं**	**रें**	**गं**	**नी॒**	**ध**	**सां**	**सां**
र	त	न	ज	टि	त	प	ल	ना	ऽ	में	ऽ	पौ	ऽ	ढे	ऽ
सां	**सां**	**नी॒**	**नी॒**	**ध**	**ध**	**म**	**प**	**ग**	**ग**	**रे**	**सा**	**ग**	**रे**	**म**	**ग**
नं	ऽ	द	सु	व	न	सु	ख	धा	ऽ	ऽ	म	खे	ऽ	ल	त

स्थायी

०				३				x				२			
सा	**रे**	**म**	**म**	**प**	**प**	**म**	**प**	**सां**	**नी॒**	**ध**	**प**	**म**	**ग**	**रे**	**सा**
क	टि	किं	ऽ	कि	नी	ऽ	क	लि	त	कं	ऽ	क	न	क	र
नी़॒	**नी़॒**	**ध़**	**प़**	**ध़**	**सा**	**रे**	**म**	**ग**	**ग**	**ग**	**रे**	**ग**	**रे**	**म**	**ग**
ग	ल	मो	ति	य	न	की	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल

अन्तरा

म	**म**	**प**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**रें**	**गं**	**नी॒**	**ध**	**सां**	**सां**
उ	र	ब	घ	न	खा	ऽ	बा	ऽ	हु	बा	ऽ	जू	ऽ	बं	द
सां	**सां**	**नी॒**	**नी॒**	**ध**	**ध**	**म**	**प**	**ग**	**ग**	**रे**	**स**	**ग**	**रे**	**म**	**ग**
ति	ल	क	सु	शो	ऽ	भि	त	भा	ऽ	ऽ	ल	खे	ऽ	ल	त

पूरा पद इसी नोटेशन पर गाया जायेगा ।

राग कुकुभ बिलावल

यह बिलावल थाट का ही राग है। वादी स्वर पंचम संवाद स्वर ऋषभ है। इसमें दोनों निषादों का प्रयोग होता है। यह राग झिंझोटी और बिलावल के योग से बनता है।

स्वर विस्तार

सा,गम,प,मगरेगसा

गम,धनीसां,धनीप,

सांनीधप,धमगसा,रेगम

उष्णकाल श्रृंगारदर्शन का पद ताल : झपताल मात्रा - १०

आज धरी गिरधर पिय धोती,

अतिझीनी अरगजा भीनी, पीतांबर घन दामिनी जोती

टेढी पाग भृकुटी छबि छाजत, श्याम अंग अद्‌भुत छबि छाई,

मुक्ता फलमाला अरुझाई परमानंद प्रभु सबसुख दाई।

मुखड़ा

X		२			०		३		
सां	**सां**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**ग**	**रे**	**ग**	**रे**
आ	-	ज	-	ध	रे	-	गि	-	र
म	**म**	**ग**	**रे**	**सा**	**रे**	**ग**	**म**	**म**	**प**
ध	र	पि	-	य	धो	-	ती	-	-

अंतरा

X		२			०		३		
प	प	नी	नी	नी	सां	रें	सां	सां	सां
अ	ति	झी	-	-	नी	-	-	-	-
सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	सां	सां
अ	र	ग	-	जा	भी	-	नी	-	-
सां	रें	सां	नी	सां	नी	ध	प	प	प
पी	-	तां	-	-	ब	र	घ	-	न
ध	म	ग	रे	ग	सा	रे	ग	म	प
दा	-	मि	-	नी	जो	-	ती	-	-

स्थायी

सा	रे	ग	ग	म	रे	ग	म	म	प
टे	-	ढी	-	-	पा	ग	भृ	-	कु
सां	नी	ध	प	म	ग	रे	ग	सा	सा
टी	-	छ	-	बि	रा	-	ज	-	त
रे	रे	ग	ग	म	रे	ग	म	म	प
श्या	-	म	-	-	अं	ग	अ	-	द्
सां	नी	ध	प	म	ग	रे	ग	सा	सा
भु	त	छ	-	बि	छा	-	ई	-	-

अंतरा

प	प	नी	नी	नी	सां	रें	सां	सां	सां
मु	-	क्ता	-	-	फ	ल	मा	-	-
सां	गं	गं	गं	मं	गं	रें	सां	सां	सां
ला	-	अ	-	रू	झा	-	ई	-	-
सां	रें	सां	नी	सां	नी	ध	प	प	म
प	र	मा	-	-	नं	द	प्र	-	भु
ध	म	ग	रे	ग	सा	रे	ग	म	प
स	ब	सु	-	ख	दा	-	ई	-	-

राग गौड़ बिलावल

इस राग का थाट बिलावल है, जाति संपूर्ण है वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गांधार है यह राग विशेषत : होरी के समय में गाया जाता है। इस राग को "बिलावल मल्हार" भी कह सकते हैं।

आरोह : सा रे ग म रे, ग प ध नी सां

अवरोह : सां ध नी ध प म ग म रे प, ग म रे सा

श्रृंगार सन्मुखकौ पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

काँकरी कान्हा मोहे मारे ॥
टेढी चितवन, मोतन चितवत ॥
लोट पोट कर डारै ॥ १ ॥
हों गुरजन की, लाज करत सखि,
निकसत निपट सवारे ॥
बरज्यौ न मानै निगड नंद कौ,
कोउ कहे पचि हारे ॥ २ ॥
कहा करुँ कित जाऊँ सखी री,
यह न्याव विचारे ॥
रसिक राय प्रीतम की बातें,
इतनी कौन सहारे ॥ ३ ॥

मुखड़ा

ग	प	ध	नी	सां	सां	सां	सां	ध	नी	ध	प	ध	म	ग	रे
काँ	-	क	री	का	-	न्हा	-	मो	-	हे	-	मा	-	रे	-

अंतरा

प	प	प	प	नी	ध	नी	नी	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
टे	-	ढी	-	चि	त	व	न	मो	-	त	न	चि	त	व	त
सं	गं	रें	सं	ध	नी	ध	प	ध	म	ग	रे	ग	प	ध	नी
लो	-	ट	पो	-	ट	क	र	डा	-	रे	-	कां	-	क	री
x				२				०				३			

स्थायी

म	रे	प	प	प	प	म	प	ध	नी	ध	प	ग	प	म	ग
हो	-	गु	र	ज	न	की	-	ला	-	ज	क	र	त	स	खि
ग	ग	ग	ग	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	म	रे	प	प
नि	क	स	त	नि	प	ट	त	वा	-	-	-	रे	-	-	-

इस प्रकार पूरा पद गाया जायेगा ।

(यह राग स्थानाभाव के कारण
कैसेट में नहीं दिया गया है ।)

राग - सामेरी बिलावल

"वादी मध्यम सुर कह्यौ, संवादी सा होय ।
आरोहन ग-नि बरजकर, राग सामेरी होय ।।"

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है । इस रागका वादी स्वर "मध्यम" तथा संवादी स्वर "षड़ज" है । इस रागके आरोहमें गांधार और निषाद स्वर वर्जित है । इस रागके अवरोहमें "नि" कोमल लगता है । यह राग औड़व-सम्पूर्ण जाति का है ।

पुष्टिभक्ति संगीतमें इन्द्रमानभंग के पदों में इस रागके पद प्राप्त है । संप्रदायमें चौकड़ा के पद भी इसी रागमें गाये जाते हैं ।

आरोह : सा, रे, म, प, ध, सां
अवरोह : सांनी, धपमगरेसा
पकड़ : मगरेगस, रेमप, नीधप
आलाप : सरेमगरे, मग, संनीधप, संरेंसंनीधपमगरेमरेनि़स

राग - सामेरी बिलावल

ब्याहकौ पद   ताल : अर्ध आडाचौताल   मात्रा - ७

बिलावलका चौकडा (शेहरा के भावका)

ढाल : अहो मेरी प्राण पियारी भोरही खेलन कहाँजू पधारी
कुंकुम भाल तिलक किन कीनों किन मृगमदकौ बेंदा दीनों ।।
चाल : बेंदाजू मृगमद दियो मस्तक, निरख शशि संशय पर्यो ।
शरद निशा को कलापूरण, मेंन नृपको मदहर्यो ।।
बिहसि के मुख कहत जननी, अलप बैनी किन गुही
सूरके प्रभु मोहि वे को, रची मनमथ ही तूही ।।

स्थायी (चाल)

X	२		३		४		X	२		३		४	
म	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**स**	**स**	**रे**	**म**	**म**	**पध**	**नीध**	**पम**	**प**
अ	हो	-	मे-	-	री	-	प्रा	ण	पि	या-	--	री-	-
सं	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**म**	**प**	**ध**	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**स**	**स**
भो	र	ही	खे	-	ल	न	कहाँ	जू	प	धा-	-	री	-
म	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**स**	**स**	**रे**	**म**	**म**	**पध**	**नीध**	**पम**	**प**
कुँ	कुँ	म	भा	-	ल	ति	लक	कि	न	की-	--	नों-	-
सं	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**म**	**प**	**ध**	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**स**	**स**
किन	मृ	ग	म	द	कौ	-	बें	दा	-	दी-	-	नो	बें

दुगुनमें

रें	**रें**	**रें**	**रें**	**रें**	**रें**	**रें**	**नी**	**नी**	**नी**	**सं**	**नी**	**सं**	**सं**
दा	-	जू	मृ	ग	म	द	दि	यो	-	म	-	स्त	क
नी	**नी**	**नी**	**ध**	**ध**	**म**	**प**	**नी**	**सं**	**नी**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**
नि	र	ख	श	शि	सं	-	श	य	प	र्यो	-	-	-
नी	**नी**	**नी**	**ध**	**नी**	**प**	**ध**	**नी**	**सं**	**नी**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**
श	र	द	नि	शा	को	-	क	ला	-	पू	-	र	ण
सं	**रें**	**सं**	**नी**	**ध**	**म**	**प**	**ध**	**म**	**म**	**गरे**	**ग**	**स**	**स**
में	-	न	नृ	प	कौ	-	म	द	ह	र्यो	-	-	-

रें	रें	रें	रें	रें	रें	रें	नी	नी	नी	सं	नी	सं	सं
बि	ह	सि	के	-	मु	ख	क	ह	त	ज	न	नी	-
नी	नी	नी	ध	ध	म	प	नी	सं	नी	सं	सं	सं	सं
ज	ल	प	बै	-	नी	-	कि	न	गु	ही	-	-	-
नी	नी	नी	ध	नी	प	ध	नी	सं	नी	सं	सं	सं	सं
सू	-	र	के	-	प्र	भु	मो	-	हि	वे	-	कूँ	-
सं	रें	सं	नी	ध	म	प	ध	म	म	गरे	ग	स	स
र	ची	-	म	न	म	थ	ही	-	तु	ही-	-	-	-

इसी प्रकार फिर ढाल के बाद दुगुन गाना ।

ढाल : नंद महरकी धरर्णी यसो है । मेरो बदन फिर फिर कें जोहै ।
खेलत डोलत डिंग बैठारी, कछु मनमें आनंद कियौ भारी ।।
छंद : आनंद मनमें भयो भारी निरख सुत विव्हल भई ।।
बावाजू कौ नाम लैलै, तोहि हँस गारी दई ।।
पाटीजु पार सँवार भूषण गोदमें मेवा भरी
सूर के प्रभु निरख मनमें बिधनासों बिनती करी ।।

(छंद भी ढाल के प्रकार से गाया जायेगा)

(इथानाभाव की वजह से पूरा कीतन यहां नहीं दिया गया)

राग देवगिरी बिलावल

"आरोहन म वर्जित किये, दोऊ लगें निषाद ।
देवगिरी वादी षड़ज, पंचम कौ संवाद ॥"

राग देवगिरी बिलावल, बिलावल थाटका राग है। यह राग बिलावल जैसा ही है, केवल इस राग का चलन भिन्न है। इस रागका वाद्दी स्वर 'षड़ज' है और संवादी स्वर 'पंचम' है। इस राग में दोनों निषाद का प्रयोग होता है । इस राग की जाति औड़व - सम्पूर्ण है। इस राग का गायन समय दिन का प्रथम प्रहर है।

सम्प्रदाय में दान वर्णन के कुछ भावात्मक पद इस राग में पाये जाते हैं । इस रागमें मध्यमको 'स' मानकर भी गाया जाता हैं ।

आरोह : सारेगम, गप, धनीधसां
अवरोह : सांनीध, नीप, मगरेसा
पकड़ : रेगमप, धनीसां, धनीप, मगमरेसा
आलाप : सा, नीधसा, रेगमग, रेगप, धनीप, धनीसां, धनीप, गपमग, मरेसा ।

राग - देवगिरी बिलावल

छोटी दानलीलाका पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

गढ़ते ग्वालिन उतरी, सीस दही को माँट ।
आडो कन्हैया व्है रह्यो रोकी व्रजवधु बाट "नागरी दान दे" ॥१॥
कहाँकी हो तुम ग्वालिनी, कहा तिहारो नाम ॥
बरसाने की ग्वालिनी प्यारी, राधा मेरो नाम "मोहन जान दे" ॥२॥
वृन्दावनकी कुंजमें अचरा पकरयौ दौर ॥
नाम दानकौ लेत हो लाला, चाहत हो कुछ और "मोहन जान दे" ॥३॥

तुम अकेले हम अकेली, बात नहीं कछु जोग ।
तुमतो चतुर प्रवीन हो, कहा कहेंगे लोग ।।४।।
सँगकी सखी सब दूर निकसि गईं, हम रोकी बन माँझ ।।
घरतौ दारून सास है, अब होन लगी है साँझ "मोहन जान दे"।।५।।
तुम ओढी है कामरी, हम पहेरयौ है चीर ।
उमड़ि घुमड़ि आई बादरी, अब कहा बरसावत नीर "मोहन जान दे"।।६।।
प्रेम मगन ग्वालिन भई, हरिको दर्शन पाय ।।
मुखते बचन न आवहीं, सो लगी ठगोरी जाय "मोहन दान लै"।।७।।
लै मटुकी आगें, धरी, परी श्यामके पाँय ।।
मन भावेसों लीजियें, बचे सो बेचन जायँ "मोहन दान लै"।।८।।
सुख बाढ़यो आनंद भयौ, रही श्याम गुन गाय ।
सुन्दर शोभा देखके, सूरदास बलि जाय "मोहन मान लै"।।९।।

छोटी दानलीला

स्थायी

X				२				०				३			
ऩी	**ऩी**	**ऩी**	**ऩी**	**स**	**स**	**स**	**स**	**स**	**स**	**ऩी**	**स**	**रेग**	**मग**	**रे**	**रे**
ग	ढ	ते	-	ग्वा	-	लि	न	उ	-	-	त	री-	-	-	-
म	**म**	**म**	**म**	**ग**	**रे**	**म**	**म**	**प**	**प**	**प**	**प**	**रेम**	**पसं**	**नीध**	**प**
सी	-	स	द	ही	-	कौ	-	मां	-	-	ट	--	--	--	--

अंतरा

म	**प**	**नी**	**नी**	**सं**	**नी**	**सं**	**सं**	**-**	**-**	**-**	**-**	**पनी**	**संरें**	**रें**	**सं**
आ	-	डौ	क	न्है	-	या	-	-	-	-	-	व्है	-	-	र
नी	**ध**	**प**	**प**	**रे**	**रे**	**म**	**प**	**ध**	**ध**	**म**	**म**	**ग**	**रे**	**रे**	**रे**
हयौ	-	-	-	रो	-	की	-	ब्र	ज	ब	धू	बा	-	-	ट
प	**प**	**म**	**ग**	**ग**	**स**	**स**	**ऩी**	**स**	**स**	**स**	**स**	**स**	-	-	-
ना	-	ग	री	-	दा	-	न	दै	-	-	-	-	-	-	-

इसी प्रकार पूरा कीर्तन इसी स्वरलीपि में गाया या बजाया जायेगा ।

राग नट बिलावल

"चढते ऋषभ वर्जित कियौ, दोउ निषाद सुर पेखि ।
म - स वादी - संवादीसों, नट - बिलावल देख ॥"

यह राग बिलावल थाट का राग है। राग बिलावल और नट, इन दोनों के मिश्रण से ही राग नट - बिलावल बनता है। पुष्टिभक्ति संगीत में राग बिलावल का यह प्रकार प्राचीन और परंपरागत माना जाता है। इस राग में प-रे की मींड ली जाती है। (पूर्वांग में - धप, रेगमय, मगमरे, सारेसा - इस प्रकार स्वर लेने से) छायानट का अंग भी दिखाई देता है। इस राग में गांधार और अवरोह में निषाद स्वर वक्र और सरल, दोनों तरह से लिया जाता है। (उदाहरणतया: "धनीधप, नीधप।")

"नट - बिलावल राग शंकराभरण (बिलावल) थाट से उत्पन्न होता है। इस राग का वादी स्वर 'मध्यम' है और संवादी स्वर 'षड़ज' है। इस राग में रे - ध की संगति विचित्र है। यह राग दिन के प्रथम प्रहर में गाया जाता है।"

सम्प्रदाय में इस राग को अन्नकूट, होली और अन्य बधाईयों में गाया जाता है। इस राग की जाति षाडव - सम्पूर्ण है। इस राग में दोनों निषाद का प्रयोग होता है।

आरोह : सागम, पमगम, पधनीसां
अवरोह : सांनी, धनीप, मगमरेसा
पकड़ : धसांनी, धनीप, रेगमप, गमरेसा
आलाप : सा, गमप, मगमरेसा, गमध, नीधप, मपमग, मरेग, मपमग, मरेसा, धनीसां, नीसांधप, धनीधप, मगमरेसा.

गोवर्धनलीला अन्नकूटका पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

गोद बैठे गोपाल कहत ब्रजराजसों ॥
अहो तात इक बात श्रवन दै, सुनो जो मेरी
भवन माँझ हौ गयौ, धरी जहाँ सोंझ घनेरी ॥
मैं हँसि मांग्यो मांय पै, भोजन दे री मोय
कर लकुटी लै यौं कह्यों, यह क्यों देहौं तोय ॥१॥
क्षुधितजानके नेह, रोहिनी निकट बुलायो ॥
दूध प्याई चुचकार शीखदे, कंठ लगायो ॥
यह बलि भुक्ते देवता, कह्यों हरें लगकान ॥
तातें रचि पचि करत हैं, शाक पाक पकवान ॥२॥
यह निश्चय कर कहौ, कौनसो देव तुम्हारो ॥
जो इतनी बलि खाय, काज कहा करे हमारो ॥
कहा देवको नाम है, कोन लोकको नाथ ॥
इकलोही भोजन करै, ले अपने गणसाथ ॥३॥

संपूर्ण पद ४० तुक्का होनेसे स्थानाभावके कारण यहाँ नहीं दिया गया है । वैष्णवों से विनती है कि कीर्तनकी अन्य पुस्तकों से यह पद देख लें ।

स्थायी

X				२				०				३			
ध	**ध**	**ध**	**प**	**ध**	**नी**	**सं**	**रें**	**नि**	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**ग**
गो	-	द	बै	-	ठ	गो	-	पा	-	ल	क	ह	त	ब्र	ज
ग	**म**	**नी**	**ध**	**प**	**रे**	**गम**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**स**	**रे**	**रे**	**स**	**स**
रा	-	-	ज	सों	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
ध	**ध**	**ध**	**प**	**ध**	**नी**	**सं**	**रें**	**नि**	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**ग**
अ	हो	-	ता	-	त	इ	क	बा	-	त	श्र	व	न	दै	-
ग	**म**	**नी**	**ध**	**प**	**रे**	**गम**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**स**	**रे**	**रे**	**स**	**स**
सु	नो	-	जो	मे	-	-	-	री	-	-	-	-	-	-	-
ध	**ध**	**ध**	**प**	**ध**	**नी**	**सं**	**रें**	**नि**	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**ग**
भ	ब	न	माँ	-	झ	हौं	-	ग	यौ	-	ध	री	-	ज	हाँ
ग	**म**	**नी**	**ध**	**प**	**रे**	**गम**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**स**	**रे**	**रे**	**स**	**स**
सों	-	झ	ध	ने	-	-	-	री	-	-	-	-	-	-	-

अंतरा

गं	**गं**	**गं**	**गं**	**गं**	**गं**	**गं**	**गं**	**गं**	**गं**	**रें**	**गं**	**मं**	**मं**	**गं**	**रें**
में	-	हँ	सि	मां	-	ग्यो	-	-	मां	-	य	पै	-	-	-
रें	**गं**	**गं**	**रें**	**सं**	**ध**	**नी**	**रें**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**
भो	-	ज	न	दै	-	री	-	मो	-	-	-	-	-	-	य
सं	**रें**	**रें**	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**ध**	**म**	**म**	**ग**	**म**	**प**	**ध**	**नी**	**सं**
क	र	ल	कु	टी	-	लै	-	यों	-	-	क	हयो	-	-	-
सं	**गं**	**रें**	**मं**	**गं**	**रें**	**सं**	**नी**	**सं**	**रें**	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**ग**
य	ह	क्यों	-	दे	-	हौं	-	तो	-	य	क	ह	त	बृ	ज
ग	**म**	**नी**	**ध**	**प**	**रे**	**गम**	**प**	**ग**	**म**	**रे**	**स**	**रे**	**रे**	**स**	**स**
रा	-	-	ज	सौं	-	--	-	-	-	-	-	-	-	-	-

इसी प्रकार पूरा कीर्तन गाया और बजाया जायेगा ।

राग अहीर भैरव

"रे, नी कोमल सुर भलें, म - स को है संवाद ।
भैरवके ही ठाठ सों, सुन अहीर कौ नाद ॥"

राग अहीर भेरव, भैरव थाट से उत्पन्न भैरव रागका ही एक प्रकार है। इस रागकी जाति संपूर्ण है। इस रागका वादी स्वर "मध्यम" और संवादी स्वर "षड़ज" है। इस रागमें "ऋषभ" और "निषाद" स्वर कोमल लगते हैं, शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इस रागका गायन समय प्रातःकाल है। यह राग प्रभुको अतिप्रिय है।

आरोह : सा रे ग म प ध नी सां
अवरोह : सां नी ध प म ग रे सा
पकड़ : सारेग मरेसा, पधनी धपम,
आलाप : सा, गमरेसा, मधनीसां, रेंसां, नीधपम, गमरेसा, धनी रेसा

जगायवेकौ पद ताल : एकताल मात्रा - १२

जागिये ब्रजराज कुँवर, कमल कोश फूले ॥
कुमुदिनी जिय सकुच रही, भृंगलता झूले ॥ १ ॥
तमचरखग करत रोर, बोलत बन राई ॥
रांभत गौ मधुर मधुर, बच्छ चपल ताई ॥ २ ॥
रविप्रकाश विधुमलीन, गावत ब्रजनारी ॥
सूरश्री गोपाल उठे, परम मंगलकारी ॥ ३ ॥

मुखड़ा

ध	प	म	ग	रे	सा	रे	रे	रे	सा	सा	सा
जा	-	गि	ये	ब्र	ज	रा	-	ज	कुँ	व	र
सा	सा	रे	म	म	म	मध	नीसां	रेंसां	नीध	पम	गम
क	म	ल	को	-	श	फू-	--	--	ले-	--	--
X		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म	ध	ध	नी	नी	रें	सां	सां	सां	सां	सां	नी
कु	मु	दि	नी	जि	य	स	कु	च	र	ही	-
रें	सां	नी	ध	प	म	गम	धप	मग	रेसा	नीसां	रेसा
भृं	-	ग	ल	ता	-	झू-	--	--	ले	--	--
X		०		२		०		३		४	

स्थायी

सा	रे	म	म	म	म	प	ध	प	म	म	म
त	म	च	र	ख	ग	क	र	त	रो	-	र
म	ध	ध	नी	नी	रें	सां	सां	सां	सां	सां	सां
बो	-	ल	त	व	न	रा	-	-	ई	-	-
X		०		२		०		३		४	

अन्तरा

रें	रें	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	सां	सां	सां
रां	-	भ	त	गौ	-	म	धु	र	म	धु	र

रें	सां	नी	ध	प	म	गम	धप	मग	रेसा	नी सा	रेसा
ब	-	छ	च	प	ल	ता	---	--	ई-	--	---

संचारी

सा	रे	म	म	म	म	प	ध	प	म	म	म
र--	वि	प्र	का	-	श	वि	धु	म	ली	-	न
म	ध	ध	नी	नी	रें	सां	सां	सां	सां	सां	सां
गा	-	व	त	व्र	ज	ना	-	-	री	-	-
X		०		२		०		३		४	

आभोग

रें	रें	रें	रें	रें	रें	गं	रें	सां	सां	सां	सां
सू	-	र	श्री	-	गौ	पा	-	ल	उ	ठे	-
रें	सां	नी	ध	प	म	गम	धप	मग	रेस	नी स	रेस
प	र	म	मं	ग	ल	का-	--	--	री-	--	--
X		०		२		०		३		४	

राग भटियार

"आरोही "नी" अल्प ले, मध्यम दोऊ सम्हार ।।
रे॒ कोमल, संवाद म - स, कहत राग भटियार ।।"

यह राग मारवा थाट से उत्पन्न होता है। इस रागकी जाति है संपूर्ण । इस रागमे "ऋषभ" स्वर कोमल लगता है और दोनों "मध्यम" के प्रयोगसे यह राग अति ही कर्णप्रिय लगता है । इस रागका वादी स्वर है "मध्यम" और संवादी स्वर है "षड़ज"। इस रागका गायन समय है रात्रिका अंतिम प्रहर ।

आरोह : साधप, धमपग, म॑धसां
अवरोह : रें॒नी, धपम, पग, रे॒सा
पकड़ : म॑धसां, नी रें॒नीधपम, पग, रे॒सा
आलाप : सारे॒सा, गरे॒सा, सारे॒सा, मगप, रे॒सा, म॑ध, सां,
सांनीरें॒सा, सांनीधपम, पधनी, धपम, पग, रे॒सा,

श्रृंगार सन्मुखकौ पद ताल : झपताल मात्रा - १०

ललन उठायदेहो मेरी गगरी ।।
बलबल जाऊँ छबीले ढोटा
ठाड़े देत अचगरी ।। १ ।।
यमुनातीर अकेली ठाडी
दूसरौ नाहीं न कोऊ ।।
जासों अबकहो श्यामधन सुन्दर
संगअबनाहिन कोऊ ।। २ ।।
नंदकुमार कहे नेक ठाडी रहे
कछुक बातकर लीजै ।।
परमानंदप्रभु संग मिलचलें
बातन के रसभीने ।। ३ ।।

मुखड़ा

सा	**सा**	**ध**	**ध**	**प**	**धनी**	**सांनी**	**ध**	**प**	**म**	
ल	ल	न	-	उ	ठा-	--	य	-	दे	
म	**ग**	**प**	**ग**	**रे॒**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**	**सा**	
हौ	-	मे	-	री	ग	ग	री	-	-	
सा	**सा**	**म**	**म**	**म**	**प**	**प**	**ध**	**प**	**ध**	
ल	ल	न	-	उ	ठा	-	य	-	दे	
नी	**रें॒**	**नी**	**ध**	**म**	**प**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**	
हौ	-	मे	-	री	ग	ग	री	-	-	||
X		२			०			३		

अन्तरा

ध	**ध**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सां**	**नी**	**रें॒**	**सां**	**सां**	
ब	ल	ब	-	ल	जा	-	ऊं	-	-	
नी	**रें**	**नी**	**ध**	**ध**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**म**	
छ	बी	ले	-	-	ढो	-	टा	-	-	
म	**म**	**म**	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**ध**	**नी**	
ठा	-	डे	-	-	दे	-	-	-	त	
ध	**प**	**म**	**म**	**म**	**प**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**	
अ	च	ग	-	-	री	-	-	-	-	||१||
X		२			०		३			

स्थायी

सा	**सा**	**ध**	**ध**	**प**	**ध**	**प**	**म**	**म**	**म**
य	मु	ना	-	-	ती	-	र	-	-
म	**ग**	**प**	**ग**	**रे॒**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**	**सा**
अ	के	ली	-	-	ठा	-	डी	-	-
सा	**सा**	**म**	**म**	**म**	**प**	**प**	**ध**	**ध**	**नी**
दू	स	रौ	-	-	ना	-	हि	-	न
ध	**प**	**म**	**म**	**म**	**प**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**
को	-	-	-	-	ऊ	-	-	-	-
X		२			०			३	

अन्तरा

ध	**ध**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सां**	**नी**	**रें॒**	**सां**	**सं**
जा	-	सों	-	-	अ	ब	क	हों	-
नी	**रें॒**	**नी**	**ध**	**ध**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**म**
श्या	म	घ	-	न	सु	-	न्द	-	र
म	**म**	**म**	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**ध**	**नी**
सं	ग	अ	-	ब	ना	-	हि	-	न
ध	**प**	**म**	**म**	**म**	**प**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**
को	-	-	-	-	ऊ	-	-	-	-
X		२			०			३	

स्थायी

सा	**सा**	**ध**	**ध**	**प**	**ध**	**प**	**म**	**म**	**म**
नं	-	द	-	कु	मा	-	र	-	-
म	**ग**	**प**	**ग**	**रे॒**	**ग**	**रे॒**	**सा**	**सा**	**सा**
क	है	ने	-	क	ठा	डी	र	-	हे
सा	**सा**	**म**	**म**	**म**	**प**	**प**	**ध**	**ध**	**नी**
क	छु	क	-	-	बा	त	क	-	र
ध	**प**	**म**	**म**	**म**	**प**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**
ली	-	-	-	-	ने	-	-	-	-
X		२			०		३		

अन्तरा

ध	**ध**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सां**	**नी**	**रें॒**	**सां**	**सां**
प	र	मा	-	-	नं	द	प्र	-	भु
नी	**रें॒**	**नी**	**ध**	**ध**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**म**
सं	-	ग	-	-	मि	ल	च	-	ल
म	**म**	**म**	**म**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**ध**	**नी**
बा	-	त	-	न	के	-	र	-	स
ध	**प**	**म**	**म**	**म**	**प**	**ग**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**
भी	-	-	-	-	ने	-	-	-	-
X		२			०			३	

राग - गुणकली

"जब भैरव के ठाठ सों ग-नी सुर दिये हटाय ।
ध रे वादी संवादी ते राग गुणकली गाय ॥"

इस रागका ठाठ भैरव है । इस राग का वादी स्वर है । "धैवत" तथा संवादी स्वर "ऋषभ" है । यह ओड़व जाति का प्रातःकालीन राग है। शास्त्रीय संगीत में इसे गुणक्रिया गुणकरी कहते हैं। यह राग जोगिया राग से थोड़ा मिलता है । इस रागके आरोह अवरोह दोनोंमें गांधार और निषाद स्वर वर्जित हैं ।

आरोह : स रेम प ध, सं

अवरोह : सं ध प म रे स

पकड़ : स, रे रे स, म रे, म ध प, म रे रे स

आलाप : स रे ध़ स, रे स, म प, म रे स, स ध प, म प म, रे स

राग - गुणकली

जगायवे कौ पद ताल - रूपक मात्रा - ७

मुख देखनकौ आई लालकौ ॥ मुख देखनकौ आई लालकौ ॥
काल मुख देख गई दधि बेचन, जबही गयौ बिकाई ॥१॥
नितते दूनो लाभ भयौ घर, काजर बछिया जाई ॥
आई हो धाय थंभाय सासकौ । मोहन देहु जगाई ॥२॥
सुन तिय वचन बिहँस उठ बैठे । नागरी निकट बुलाई ॥
परमानंद सयानी ग्वालिन, सेन संकेत बताई ॥३॥

स्थायी

०			x		२		०			x		२	
सां	**सां**	**सां**	**ध**	**ध**	**म**	**म**	**मप**	**ध**	**प**	**म**	**रे**	**सा**	**सा**
मु	ख	दे	ख	न	कौ	-	आ	-	ई	ला	ल	कौ	-
सां	**सां**	**रे**	**म**	**म**	**प**	**प**	**ध**	**प**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
मु	ख	दे	ख	न	कौ	-	आ	-	ई	ला	ल	कौ	-

स्थायी

०			x		२		०			x		२	
प	**प**	**प**	**ध॒**	**ध॒**	**ध॒**	**ध॒**	**सांसां**	**सां**	**सां**	**रें॒**	**रें॒**	**सां**	**सां**
का	-	ल	मु	ख	दे	ख	गई	द	धि	बे	-	च	न
सां	**सां**	**सां**	**ध॒**	**ध॒**	**म**	**म**	**मप**	**ध॒**	**प**	**म**	**रे॒**	**सा**	**सा**
ज	ब	ही	ग	यौ	-	बि	का-	-	ई	ला	ल	कौ	-

स्थायी

रे॒	**रे॒**	**रे॒**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**	**सा**	**ध़॒**	**ध़॒**	**ध़॒**	**सा**	**सा**	**सा**	**सा**
नि	त	ते	दू	-	नो	-	ला	भ	भ	यौ	-	घ	र
सा	**ध॒**	**ध॒**	**प**	**प**	**म**	**म**	**रे॒म**	**प**	**म**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**	**सा**
का	ज	र	ब	छि	या	-	जा	-	-	ई	-	-	-

अंतरा

प	**प**	**प**	**ध॒**	**ध॒**	**ध॒**	**ध॒**	**सांसां**	**सां**	**सां**	**रें॒**	**रें॒**	**सां**	**सां**
आ	ई	हो	धा	-	य	थं	भा	-	य	सा	स	कों	-
सां	**सां**	**सां**	**ध॒**	**ध॒**	**म**	**म**	**मप**	**ध॒**	**प**	**म**	**रे॒**	**सा**	**सा**
मो	ह	न	दे	-	हु	ज	गा-	-	ई	ला	ल	कौ	-

स्थायी

रे॒	**रे॒**	**रे॒**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**	**सा**	**ध़॒**	**ध़॒**	**ध़॒**	**सा**	**सा**	**सा**	**सा**
सुन	ति	य	व	च	न	बि	हँस	उ	ठ	बै	-	ठे	-
सा	**ध॒**	**ध॒**	**प**	**प**	**म**	**म**	**रे॒म**	**प**	**म**	**रे॒**	**रे॒**	**सा**	**सा**
ना	ग	री	नि	क	ट	बु	ला-	-	-	ई	-	-	-

अंतरा

०			x		२		०			x		२	
प	**प**	**प**	**ध॒**	**ध॒**	**ध॒**	**ध॒**	**सांसां**	**सां**	**सां**	**रें॒**	**रें॒**	**सां**	**सां**
प	र	मा	नं	-	द	स	या	-	नी	ग्वा	-	लि	न
सां	**सां**	**सां**	**ध॒**	**ध॒**	**म**	**म**	**मप**	**ध॒**	**प**	**म**	**रे॒**	**सा**	**सा**
से	न	सं	के	-	त	ब	ता	-	ई	ला	ल	कौ	-

राग कलावती

"रे-म स्वर वर्जित किये, कोमल लेत निषाद ।
कलावती को गाईये, प-स को है संवाद ।।"

राग कलावती एक आधुनिक राग है। यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है । इस राग का वादी स्वर है "पंचम" और संवादी स्वर है "षड्ज"। इस रागमें "निषाद" स्वर कोमल है ।

इस रागमें "ऋषभ" और "मध्यम" स्वर वर्जित होनेसे इस रागकी जाति औड़व है । इस रागका गायन समय है मध्यरात्रि ।

आरोह : सा, गपध, नीधप, धसां
अवरोह : सांनीधप, गप, धप, गसा
पकड़ : गप, धनीधप, गप, धप, गसा
आलाप : सा, गपध, नीधप, गपधप, गसा
गपधनीसां, गंसानीसां, धप, गपधप, गसा

शयन सन्मुख कौ पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

नैना मेरे बरज्यो न माने ।।
घूंघट पट गढ तोर निकसे
लैप्रिया प्रेमअरुझाने ।। १ ।।
कहारी कहों गुरुजन भये बैरी
बेर कियो मोसो रहत रिसाने ।।
गोविन्दप्रभु पिय बिनक्यों जीवै
गिरिधर मुख बिधु पाने ।। २ ।।

मुखड़ा

ग	**प**	**ध**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**प**	**ध**	**प**	**ग**	**ग**	**सा**	**सा**
नै	-	ना	-	मे	-	रे	-	ब	र	ज्यो	न	मा	-	ने	-
ग	**प**	**नी**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**प**
घूं	-	घ	ट	प	ट	ग	ढ	तो	-	-	र	नि	क	से	-
ग	**सा**	**ग**	**ग**	**प**	**प**	**ध**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**पप**	**गप**	**धप**	**ग**	**सा**
लै	-	प्रि	या	प्रे	म	अ	रु	झा	-	ने	अरु	झा-	--	ने	-
३				x				२				०			

स्थायी

सा	**ग**	**प**	**ग**	**प**	**प**	**प**	**प**	**ग**	**प**	**ध**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**प**
क	हा	री	क	हो	-	गु	रु	ज	न	भ	ये	बै	-	री	-
ग	**प**	**ध**	**प**	**ग**	**ग**	**सा**	**नी**	**सा**	**सा**	**सा**	**सा**	**गप**	**धप**	**ग**	**स**
बै	-	र	कि	यो	-	मो	सों	र	ह	त	रि	सा-	--	ने	-

अन्तरा

ग	**प**	**नी**	**ध**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**गं**	**गं**	**पं**	**गं**	**गं**	**सां**	**सां**
गो	-	वि	न्द	प्र	भु	पि	य	बि	न	क्यों	-	जी	-	वै	-
नी	**नी**	**नी**	**नी**	**ध**	**ध**	**ध**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**प**	**गप**	**धप**	**ग**	**सा**
गि	रि	ध	र	मु	ख	बि	धु	पा	-	नं	-	पा-	--	-	ने

राग श्री

“आरोहन ग - ध बरजकर, रि - ध कोमल, म॑ तीव्र
रि - प वादी - संवादी तें, श्री राग को सीख ॥”

यह लोकप्रिय राग अतिप्राचीन, ग्रंथोक्त राग है। यह राग मूल छः रागों में से एक राग है जो राग गौरी से बहुत मिलता जुलता है, किंतु इस राग के आरोह में धैवत वर्ज्य होने से यह राग गौरी से अलग हो जाता है। इसकी प्रकृति बहुत गंभीर है इस राग का गायन समय सायंकाल है। इसलिए इसे **संधिप्रकाश** राग भी कहा जाता है। अष्टछापीय संगीत प्रणालि में भी इस राग के पद संध्यार्ति के समय गाये जाते हैं। इस राग में अधिकांश रास के पद पाये जाते हैं। अन्य उत्सवों के पद भी इस राग में गाये जाते हैं।

यह राग पूर्वी थाट का राग है। इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है क्योंकि इस राग के आरोह में गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य हैं। अवरोह सम्पूर्ण है। इस रागमें **रे॒**, **ध॒** कोमल और तीव्र **‘म॑’** का प्रयोग किया जाता है। अन्य सभी स्वर शुद्ध है। इस राग का वादी स्वर ऋषभ है और संवादी स्वर पंचम है।

आरोह : सा रे॒ सा, रे॒ म॑ प, नी सां
अवरोह : सां नी ध॒ प, म॑ ग रे॒, ग रे॒ सा
पकड़ : सा रे॒, सा, प, म॑ ग, ग रे॒ सा
आलाप : सारे॒, रे॒सा, पम॑ध॒प, म॑पनीध॒प, म॑पनीनीसां, रें॒रें॒सां,
नीसांरें॒, म॑ंगरें॒सां, नीध॒प, म॑गरे॒सा

रास का पद ताल: चौताल मात्रा - १२

सरे गमे पध नीसं सप्त सुर अलंकृत श्री राग गावत ब्रज भामिनी ॥
कोकिला कलरव वर सुंदर सकल मानिनी मैं वर कामिनी ॥१॥
रिझवत ता ता थेई तान बंधान, शरद विमल शशि राका यामिनी ॥
कृष्णदास प्रभु श्री गोवर्धनधारी लाल रीझ्यौही चाहत संग स्वामिनी ॥२॥

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
सा	रे̱	रे̱	ग	म॑	म॑	प	ध	ध	नी	नी	सं
सं	सं	नी	ध̱	प	प	प	प	म॑	ग	म॑	ग
स	-	प्त	सु	र	अ	लं	-	-	कृ	-	त
ग	ग	रे̱	म॑	ग	ग	म॑	ग	रे̱	रे̱	स	स
श्री	-	-	रा	-	ग	गा	-	-	व	-	त
नी़̱	नी़̱	रे̱	म॑	ग	ग	गम॑	पनी	संनी	ध̱प	म॑ग	रे̱स
ब्र	-	ज	भा	-	मि	नी-	--	--	--	--	--

अंतरा

म॑	ग	म॑	ध̱	म॑	ध̱	सं	सं	नी	रे̱ं	सं	सं
को	-	कि	ला	-	-	क	-	ल	र	-	व
नी	नी	रे̱ं	म॑	गं	गं	म॑	गं	रे̱ं	रे̱ं	सं	सं
व	-	र	सुं	-	-	द	र	स	क	-	ल
सं	सं	नी	ध̱	प	प	म॑	ग	ग	म॑	ग	ग
मा	-	नि	नी	-	-	मैं	-	-	व	-	र
नी़̱	नी़̱	रे̱	म॑	ग	ग	गम॑	पनी	संनी	धप	म॑ग	रेसा
का	-	-	मि	-	-	नी-	--	--	--	--	--

संचारी

X		०		२		०		३		४	
नी̲̣	**नी̲̣**	**सा**	**ग**	**रे̲**	**ग**	**प**	**प**	**म॑**	**ध̲**	**प**	**प**
रि	-	झ	व	-	त	ता	-	ता	थे	-	ई
म॑	**म॑**	**ध̲**	**नी**	**नी**	**नी**	**रें̲**	**नी**	**ध̲**	**प**	**प**	**प**
ता	-	-	न	-	बं	धा	-	-	न	-	-
प	**प**	**म॑**	**ध**	**प**	**प**	**म॑**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**ग**
श	-	र	द	-	वि	म	-	ल	श	-	शि
नी̲̣	**नी̲̣**	**रे**	**म॑**	**ग**	**ग**	**म॑**	**ग**	**रे**	**सा**	**सा**	**सा**
रा	-	का	या	-	मि	नि	-	-	-	-	-

अंतरा

म॑	**ग**	**म॑**	**ध**	**म॑**	**ध**	**सां**	**सां**	**नी**	**रें**	**सां**	**सां**
कृ	-	ष्ण	दा	-	स	प्र	-	भु	श्री	-	-
नी	**नी**	**रें**	**म॑ं**	**गं**	**गं**	**म॑ं**	**गं**	**रें̲**	**रें̲**	**सां**	**सां**
गो	व	र	ध	-	न	धा	-	री	ला	-	ल
सां	**सां**	**नी**	**ध̲**	**प**	**प**	**म॑**	**ग**	**ग**	**म**	**ग**	**ग**
री	-	-	झ्यौ	-	ही	चा	-	-	ह	-	त
नी̲̣	**नी̲̣**	**रे**	**म**	**ग**	**ग**	**गम**	**पनी**	**सांनी**	**धप**	**मग**	**रेसा**
सं	-	ग	स्वा	-	मि	नी-	--	--	--	--	--

राग बिहागड़ा या बिहागरा

"आरोही रे वर्जकर, दोऊ निषाद लै गान ।
गनी वादी संवादी ते, बिहागड़ा पहचान ।।"

(राग बिहागड़ा और बिहाग को एक ही मान लेने की भूल कई लोग करते हैं । लेकिन यह राग बिहाग से भिन्न हैं । बिहाग की अपेक्षा बिहागरा प्राचीन राग माना जाता है।

अष्टसखा में से सभी भक्तकविओं ने राग बिहागड़ा में ही पदगान किया है । केवल छीतस्वामी और चत्रभुजदासजी की रचनाओं में कहीं कहीं राग बिहाग का उल्लेख प्राप्त होता है।)

राग बिहागड़ा, बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। इसका वादी स्वर 'गांधार' और संवादी स्वर 'निषाद' है। आरोह में ऋषभ स्वर वर्ज्य है और अवरोह में सभी स्वर लगने से इसकी जाति षाड़व-संपूर्ण है। आरोह में धैवत दुर्बल रहता है और वक्र रूप से **"पधनीप"** इस प्रकार लिया जाता है। कोमल निषाद का प्रयोग अवरोह में ही किया जाता है। राग बिहागड़ा में, बिहागकी अपेक्षा मध्यम स्वरका अधिक महत्व होता है । तीव्र मध्यम का अल्प प्रयोग इस राग की सुन्दरता बढाता है ।

(इस राग का चलन, बिलकुल बिहाग के समान है किन्तु उसमें बिहाग की तरह तीव्र मध्यम न होने तथा कोमल निषाद लगने तथा आरोह में धैवत का प्रयोग होने से, भिन्नता स्पष्ट हो जाती है ।)

ऐसे इस राग का गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है किन्तु पुष्टिमार्गीय कीर्तनों में शयन दर्शन, मानके, पौढवे के तथा आश्रय के पद, इस राग में गाये जाते हैं ।

आरोह : सा ग म प, नी सां

अवरोह : सां नी ध प, म ग रे सा

मुख्यांग : ग म प नी सां, नी धप, मगरे मप, ग म रे, सा,

आलाप : सा ग म प, ग म ग रे सा, ग म पनी ध प, म॑ प ग म ग,
रे सा, ग म प नी सां, नी सां रेंसां, नी सां गं मं गं रें सां,
नी सां रें सां, नी ध प, म॑ प, म ग रे सा.

राग बिहागडा या बिहागरा

शीतकाल पोढने का पद ताल : त्रिताल मात्रा - १६

पोढे हरि राधिका के संग,
रंग महल मे ललित तिबारी,
परदापरे सुरंग ॥१॥
झलमलात पायन अंगीठी,
रतन जटित बहु रंग ॥
कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर,
मोहे कोटि अनंग ॥२॥

मुखड़ा

स	**स**	**म**	**ग**	**प**	**प**	**नीध**	**नी**	**सं**	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**म**	**ग**
रा	-	-	धि	का	-	के-	-	सं	-	-	ग	पो	ढे	मा	ई
सं	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**म**	**ग**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**रे**	**ऩी**	**स**
रा	-	-	धि	का	-	के	-	सं	-	-	-	ग	-	-	-
०				३				X				२			

अन्तरा

X				२				०				३			
प	**प**	**नी**	**नी**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**नी**	**सं**	**गं**	**मं**	**गं**	**रें**	**नी**	**सं**
रं	-	ग	म	ह	ल	में	-	ल	लि	त	ति	बा	-	री	-
सं	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**म**	**ग**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**रे**	**ऩी**	**स**
प	र	दा	-	प	रे	-	सु	रं	-	-	ग	पो	ढे	मा	ई

स्थायी

स	**स**	**म**	**ग**	**प**	**प**	**प**	**प**	**म॑**	**प**	**ध**	**नी**	**ध**	**प**	**म**	**ग**
झ	ल	म	ला	-	त	पा	-	य	न	अं	-	गी	-	ठी	-
सं	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**म**	**ग**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**रे**	**ऩी**	**स**
र	त	न	ज	टि	त	ब	हु	रं	-	-	-	ग	-	-	-
X				२				०				३			

स्थायी

प	**प**	**नी**	**नी**	**सं**	**सं**	**सं**	**सं**	**नी**	**सं**	**गं**	**मं**	**गं**	**रें**	**नी**	**सं**
कुँ	-	भ	न	दा	स	प्र	भु	गो	-	व	र	ध	न	ध	र
सं	**सं**	**नी**	**ध**	**प**	**प**	**ग**	**म**	**ग**	**ग**	**म**	**प**	**ग**	**रे**	**ऩी**	**स**
मो	-	हे	-	को	-	टि	अं	नं	-	-	ग	पो	ढे	मा	ई
X				२				०				३			

राग - भैरवी

“कोमल सबही सुर मिलें मध्यम वादी बखान ।
षड़ज जहाँ संवादी है, ताहि भैरवी जान ॥”

राग भैरवी, भैरवी थाट से उत्पन्न होनेवाला राग है । श्री गोविंदस्वामी जब यह राग अपने ठाकुरजीके सन्मुख गा रहे थे तब किसी यवन के मुँहसे अनायास ही “वाह” शब्द निकल गया। तब श्री गोविंदस्वामी के लिए यह राग छू गया था और तब से आज तक सम्प्रदायमें बहुतसे गुणीजन इस रागको नहीं गाते हैं । क्योंकि हमारे पाठचक्रममें दस थाटों का समावेश किया गया है, यह राग सदाबहार और कर्ण प्रिय राग है। इसलिए सीखने के हेतुसे इस रागमें एक पद दीयागया है।

इस राग का वादी स्वर है “म” और संवादी स्वर है “सा” । इस रागमें “रे, ग, ध और नी आरोह-अवरोह दोंनो में कोमल लगते हैं । इस रागकी जाति संपूर्ण है । कलावंत लोग इस रागमें सभी बारह स्वरों का प्रयोग करके इस रागकी मधुरता बढा देते हैं । इस रागका गायन समय प्रातःकाल है । वैसे शास्त्रीय संगीत के गायक इस रागको अपने कार्यक्रमके समापन में गाते हें । पुष्टिमार्ग में सेवा अविरत चलती रहती है इसका समापन नहीं होता शायद इसीलिए भी यह राग अपने यहाँ नहीं गाया जाता; परंतु इस राग में आश्रय एवं दीनता के पद गानें में किसी प्रकार का बंधन नहीं है ।

आरोह : सा रे ग, म प, ध, नीसां

अवरोह : सां नी ध प, म ग रे सा

पकड़ : सा, ग म प ध, प, म ग रे सा

आलाप : साध नी सारेसा, गमपप, धनीधप, धनीसां, रेंसां, रेंगरेंसां
धनीसां, नीधप, गमपधप, मगरेगरेसा, सारेगरेसा।

राग भैरवी

आश्रय का पद **ताल - त्रिताल** **मात्रा - १६**

श्री वल्लभ भले बुरे तोऊ तेरे ॥

तुम ही हमारी लाज बढाई, बिनती सुनो प्रभु मेरे ॥१॥

अन्य देव सब तुम सम नाही, देखे बहुत घनेरे ।

हरि प्रताप बल गिनत न काहु, निडर भये सब चेरे ॥२॥

सबतज तुम सरनागत आयौ, दृढ कर चरण गहेरे ॥

सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलन ते, पाये सुखजु धनेरे ॥३॥

मुखड़ा

प	**प**	**प**	**प**	**प**	**ध**	**नी**	**सां**	**ध**	**ध**	**प**	**ग**	**गम**	**गध**	**पम**	**ग**
भ	ले	-	बु	रे	-	तो	ऊ	ते	-	रे	श्री	व-	--	ल्ल-	भ
सा	**ग**	**मप**	**म**	**गरे**	**ग**	**रे**	**नी**	**सा**	**सा**	**सा**	**नी**	**सा**	**ग**	**रे**	**ग**
भ	ले	--	बु	रे	-	तो	ऊ	ते	-	रे	श्री	व	-	ल्ल	भ
०				३				X				२			

अंतरा

ग म ध नी	सां रें सां सां	नी नी सां नी	रें सां ध प
तु म ही ह	मा - री -	ला - ज ब	ढा - ई -
प प प प	प ध नी सां	ध ध प ग	गम गध पम ग
बि न ती सु	नो - प्र भु	मे - रे श्री	व- -- ल्ल भ
०	३	X	२

स्थायी

म ग प प	प प प प	प ध नी सां	ध ध प ग
अ - न्य दे	- व स ब	तु म स म	ना - हीं -
सा ग प म	रे ग सा रे	सा सा सा ऩी	सा ग रे ग
दे - खे -	ब हु त घ	ने - रे श्री	व - ल्ल भ
०	३	X	२

अंतरा

ग म ध नी	सां रें सां सां	नी नी सां नी	रें सां ध प
ह रि - प्र	ता प ब ल	गि न त न	का - हू -
प प प प	प ध नी सां	ध ध प ग	गम गध पम ग
नि ड र भ	ये - स ब	चे - रे श्री	व- -- ल्ल- भ
०	३	X	२

स्थायी

म ग प प	प प प प	प ध नी सां	ध ध प ग
स ब त ज	तु म स र	ना - ग त	आ - यौ -
सा ग प म	रे ग सा रे	सा सा सा ऩी	सा ग रे ग
दृ ढ क र	च र ण ग	हे - रे श्री	व - ल्ल भ
०	३	X	२

अंतरा

ग	**म**	**ध**	**नी**	**सां**	**रें**	**सां**	**सां**	**नी**	**नी**	**सां**	**नी**	**रें**	**सां**	**ध**	**प**
सू	-	र	दा	-	स	प्र	भु	तु	म्हा	रे	मि	ल	न	ते	-
प	**प**	**प**	**प**	**प**	**ध**	**नी**	**सां**	**ध**	**ध**	**प**	**ग**	**गम**	**गध**	**पम**	**ग**
पा	-	ये	-	सु	ख	जु	घ	ने	-	रे	श्री	व-	--	ल्ल	भ
०				३				X				२			

इसी प्रकार पूरा पद गाया जायेगा ।

* * *

राग दरबारी कान्हरा

"ग- ध- नी कोमल जानिए, उतरत धैवत नाहिं ।
सुन दरबारी कान्हड़ा, रि- प संवाद बताहिं ॥"

कहते हैं कि संगीत सम्राट तानसेनजीने इस रागकी रचना तैयार करके दरबारमें अकबर बादशाहको सुनाकर उसे प्रसन्न किया था । इस रागका चलन मंद्र और मध्य सप्तकमें अधिक किया जाता है । इसी रागसे मिलता राग है अड़ाना जो उत्तरांग प्रधान है ।

यह राग आसावरी थाट का है । इस रागके अवरोहमें "धवैत" स्वर वर्ज्य होनोसे इस रागकी जाति सम्पूर्ण - षाड़व है । इस रागमें "गांधार", "धवैत" और "निषाद" स्वर कोमल लगते हैं, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं । इस रागका वादी स्वर "ऋषभ" और संवादी स्वर "पंचम" है । इस रागका गायन समय है मध्यरात्रि ।

पुष्टिभक्ति संगीतमें बिनती आश्रयके पद इस रागमें प्रचलित हैं ।

आरोह : नी सा रे, ग म रे सा, म प, ध नी सां
अवरोह : सां धनी प, म प, ग, म, रे सा
पकड़ : ग, रेरे, सा, ध़ , नि़ सा, रे सा
आलाप : सा, ध़ नी़ सा रे ग, म रे सां, रे म प, म प, ग म रे सा, म प धनी प, म प धनी सां, धनी रें सां, गं मं रें सां, नी सां रें सा, धनी प, म प सां नी प, म प, ग म रे सा, ध़ नी़ सा रे ग, म रे सा

आश्रयकौ पद **ताल - त्रिताल**

बिन गोपाल नहीं कोई अपनो ॥
कौन पिता मातासुत घरनी
यह सब जगत रैनको सपनो ॥१॥
धनकारन निसदिन जग भटकत
वृथा जनमयोंही सब खपनो ॥
अन्तसहाय करे नहीं कोई
निश्चयकाल अग्नीमुख जपनो ॥२॥
सब तजि हरिभज युगलकमल पद
मोहरुपी बेडी चरणनते कटनो ॥
कहत दास श्री वल्लभ विठ्ठल
श्री गिरिधर रसनामुख जपनो ॥३॥

मुखड़ा

०				३				X				२			
रे	**रे**	**रे**	**रे**	**रे**	**सा**	**रे**	**प**	**ग॒**	**ग॒**	**ग॒**	**म**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
बि	न	गो	-	पा	-	ल	न	हीं	-	को	ई	अ	प	नो	-
सा	**नी़॒**	**रे**	**सा**	**ध़॒**	**ध़॒**	**नी़॒**	**नी़॒**	**सा**	**सा**	**सा**	**सा**	**रे**	**नी़॒**	**सा**	**सा**
बि	न	गो	-	पा	-	ल	न	हीं	-	को	ई	अ	प	नो	-

अन्तरा

X				२				०				३			
म	**म**	**प**	**प**	**ध॒**	**ध॒**	**नी॒**	**नी॒**	**सां**	**सां**	**सां**	**सां**	**रें**	**नी॒**	**सां**	**सां**
कौ	-	न	पि	ता	-	मा	-	ता	-	सु	त	घ	र	नी	-
प	**नी॒**	**नी॒**	**नी॒**	**सां**	**नीं॒**	**रें**	**सां**	**ध॒**	**नी॒**	**प**	**प**	**ग॒**	**म**	**रे**	**सा**
य	ह	स	ब	ज	ग	त	रै	-	न	को	-	स	प	नो	-

स्थायी

रे	रे	रे	रे	रे	सा	रे	प	ग	ग	ग	म	रे	रे	सा	सा
ध	न	का	-	र	न	नि	स	दि	न	ज	ग	भ	ट	क	त
सा	नी	रे	सा	ध	ध	नी	नी	सा	सा	सा	सा	रे	नी	सा	सा
वृ	था	-	ज	न	म	यों	-	ही	-	स	ब	ख	प	नो	-

अन्तरा

म	म	प	प	ध	ध	नी	नी	सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	सां
अ	-	न्त	स	हा	-	य	क	रे	-	न	हीं	को	-	ई	-
प	नी	नी	नी	सां	नीं	रें	सां	ध	नी	प	प	ग	म	रे	सा
नि	-	श्च	य	का	-	ल	अ	-	ग्नी	मु	ख	ज	प	नो	-

स्थायी

रे	रे	रे	रे	रे	सा	रे	प	ग	ग	ग	म	रे	रे	सा	सा
स	ब	त	जि	ह	रि	भ	ज	यु	ग	ल	क	म	ल	प	द
सा	नी	रे	सा	ध	ध	नी	नी	सा	सा	सा	सा	रे	नी	सा	सा
मो	-	ह	नि	ग	ड	च	र	ण	न	ते	-	क	ट	नो	-

अन्तरा

म	म	प	प	ध	ध	नी	नी	सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	सां
क	ह	त	दा	-	स	श्री	-	व	-	ल्ल	भ	वि	-	ठ्ठ	ल
प	नी	नी	नी	सां	नीं	रें	सां	ध	नी	प	प	ग	म	रे	सा
श्री	-	गि	रि	ध	र	र	स	ना	-	मु	ख	ज	प	नो	-

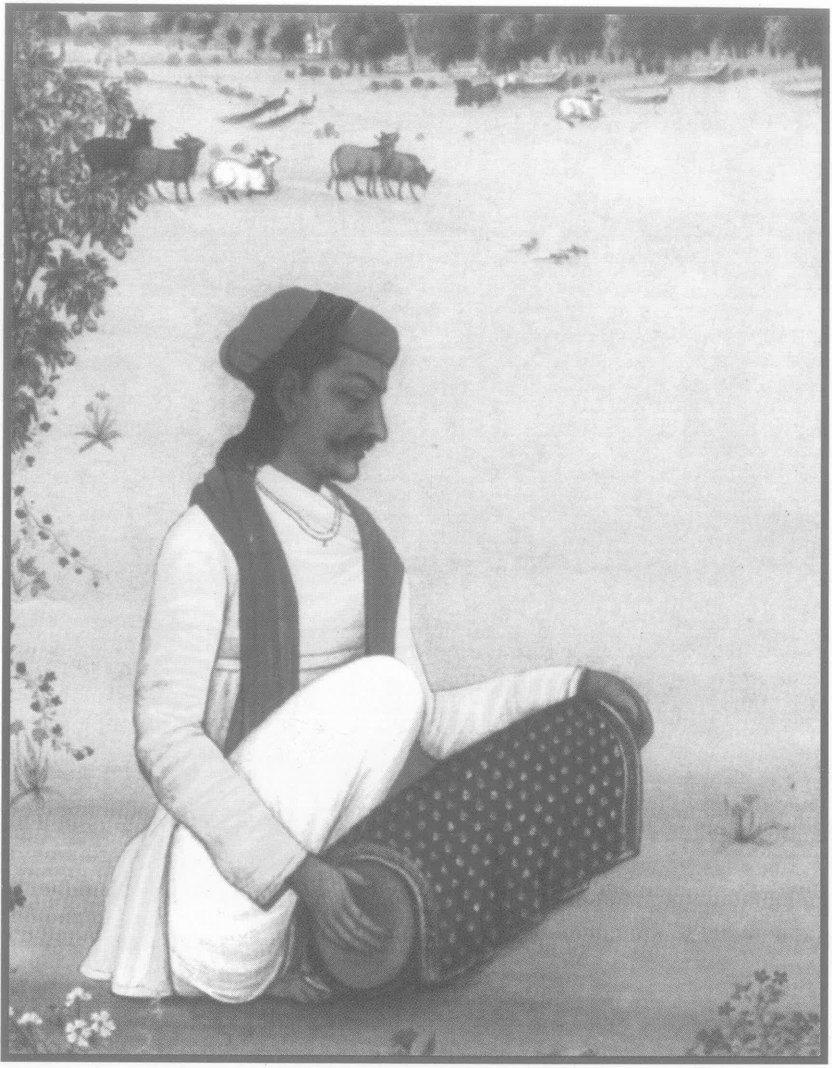

श्री कृष्णदासजी

जन्म : वि.सं.1554 नि.ली.प्र : वि.सं.1638

॥ श्री हरिः ॥

श्रीकृष्णदासजी

श्रीवल्लभ गुरु दत्त, भजन सागर, गुन आगर ।
कवित नोख निरदोष, नाथ सेवामें नागर ॥
वानी वंदित विदुष, सुजस गोपाल अलंकृत ।
ब्रज रज अति आराध्य, बहै धारा सर्वस चित ॥
सांनिध्य सदा हरिदासवर्य, गौरस्याम द्रढ व्रत लियौ ।
गिरिधरनरीझि "कृष्णदास" को, नाम माँझ साझो कियौ ।
नाभाजीकृत "भक्तमाल" से ।

श्री महाप्रभुजी के कृपापात्र, अष्टसखाओमें से एक, कृष्णदासजी के, गुणोंका परिचय देने के लिये, उपरका ये कवित्त ही पर्याप्त है। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है की, कृष्णादासजी एक सच्चे सेवाव्रती उच्चकोटीके भक्त और गुणी थे। ऐसे कृष्णदासजी कौन थे ? उनकी जीवनी क्या थी? ये जाननेकी हमे सहजही उत्सुकता होगी।

कृष्णदासजी अधिकारी नीत्यलीलाके दैवी जीव थे। नीत्यलीलामें वे ठाकोरजी के अंतरंग सखा "श्री ऋषभसखा" है। आप चार स्वरुपसे ठाकुरजीकी सेवामें सदाँही उपस्थित रहते है। (१) श्रीठाकोरजीकी दिनकी लीलाओमें वे ऋभषसखा है। (२) श्रीठाकोरजीकी रात्रीकी नीत्यलीलाओमें वे, श्रीठाकुरजी और श्रीस्वामिनीजीके, परस्परके मनोरथोकों पूर्ण करने, सदैव तत्पर रहते और युगल स्वरुपके प्रीतिपात्र श्रीललिता सखी है। (३) तीसरे स्वरुपसे, श्रीआचार्यचरण की सेवामें रत, श्रीदामोदरदास हरसानीजी के रुपमें है। और (४) चतुर्थ स्वरुप है श्रीकृष्णदास अधिकारीजीका ।

श्रीगिरिराजजीके अष्टद्वारोमें से एक है बिलछू कुंड। जहांसे श्रीठाकोरजी रासलीलामें पधारते हैं, वहांके आप मुखिया है, रक्षक है।

ऐसे श्रीकृष्णदासजी गुजरात राज्यके चिलोतरा गाँवके निवासी थे। आपका जन्मसमय विक्रम सं. 1554 लीलामें प्रवेश 1638 माना जाता है। ज्ञातिसे आप कणबी पटेल थे। पिताश्री गाँवके मुखी होने से गाँवकी हाकिमी करते थे। कृष्णदासजीका जन्म होते ही आपके पिताश्रीने ज्योतिषिओंको बुलाया। पंडितोंके कथन अनुसार आपका नाम रखा गया **कृष्णदास।**

पुत्रके लच्छन पलनेमें ही दिखते है। केवल पांच वर्षकी आयुसेही आप कथा-वार्तामें जाने लगें। पिता प्रपंचवृत्तिसे भरे थे और बालक भगवत् चरणोंका अनुरागी, सत्यप्रिय और सेवाप्रेमीथा। कृष्णदासजी बारह-तेरह सालके हुए, उस छोटीसी आयुमें आपकी सत्यनिष्ठाका प्रमाण देनेवाला एक प्रसंग उपस्थित हुआ।

अपना माल बेचने आये हुए एक व्यापारी वणजारेका धन, कृष्णदासजीके प्रपंची पिताने हडप लिया। कृष्णदासजीने अपने पिताको समझानेकी कोशिषकी, पर जब नहीं माने तब, आपने अपने पिता के विरुध साक्षी देकर, उस वणजारेका साथ दिया और उसका सारा धन उसे वापस दिलादिया। परिणाम स्वरुप कृष्णदासको अपना घर छोडना पडा।

घर छोडने के बाद सीधे वे व्रजमें आये, वहां अनेक तीर्थोके दर्शन करते करते वे गिरिराजजीमें प्रगट हुए देवदमनके दर्शन करने पहोंचे। वहां ही श्रीमहाप्रभुजी से, आपकी भेट हुई। श्रीआचार्यचरणने कृष्णदासजीको नाम समर्पण करवाया और तभीसे कृष्णदासजी श्रीजीकी सेवामें लग गये।

कुछ समयके बाद श्रीनाथजीका नया मंदिर सिद्ध हुआ, तब श्रीआचार्यजीने श्रीजीकी सेवामें बंगाली सेवकों को नियुक्त किया और कृष्णदासजीको भेटलानेकी सेवा सौंपी। कृष्णदासजी तो श्रीवल्लभके अनन्य सेवक थेही । एक निष्ठासे वे भेटियाजीकी सेवा करने लगे ।

श्रीमहाप्रभुजीकी आसुरव्यामोहलीलाके बाद, आपश्रीके द्वितीय पुत्र, श्रीविठ्ठलनाथजी ने आपके कार्यकी बागडोर संभाली। श्रीगोवर्धनधरकी सेवाका विकास विस्तार आपश्रीने ही किया। अष्टसरवामंडलकी स्थापना की और कृष्णदासजीको अधिकारीकी पदवी देकर, श्रीनाथजीकी सेवाका पूरा कार्यभार उन्हे सौंप दिया।

ऐसे ही कुछ समय बीता । समयके साथ साथ बंगाली सेवकों की निष्ठामें खोट आने लगी। प्रभूकी इच्छा अब बंगालीओंसे सेवा लेनेकी नहीं थी। सक्षम अधिकारी-साम, दाम, दंड, भेदकी नीति अपनाकर जिस कुनेहसे अपना प्रश्न हल करता है - बिलकुल वैसेही कृष्णदासजीने बंगालीसेवकोंका प्रश्न हल किया। बडी कुनेहसे बंगालीओंको हठाकर, व्रजवासीओंको श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवामें लगा दिया। बंगालीओंने काफी विरोध किया, देशाधिपति तक फरियाद की, किन्तु कृष्णदासजीके आगे बंगालीसेवकोंकी एक न चली । इस पूरे प्रसंगमें हमें एक कार्यदक्ष, उच्चकोटिके अधिकारीकाही दर्शन होता है। बंगालीओंको निकालनेके कारण श्रीगुसांईजीभी कृष्णदासजीपर अत्याधिक प्रसन्न हुओ।

आप जितने समर्थ अधिकारी थे, उतनेही उच्चकोटीके संगीत कार भी थे। श्रीगोवर्धनधरणने पारासोलीमें वृषभाननंदिनीके साथ रास खेलकी इच्छा कृष्णदासजी समक्ष प्रगटकी। ईसमें ध्यानप्रद बात ये है कि, श्रीठाकुरजीने आज्ञादीकि उस समय पखावजवादन श्यामकुंभार करेंगे और कीर्तनगान करनेकी आज्ञा श्रीकृष्णदासजीको दी। रास खेलके समय, श्रीकृष्णददासजी ने राग केदारमें रासका ये पद गाया---

पखावजवादन श्यामकुंभार करेंगे और कीर्तनगान करनेकी आज्ञा श्रीकृष्णदासजी को दी। रास खेलके समय, श्रीकृष्णददासजी ने राग केदारमें रासका ये पद गाया ---

"श्रीवृषभाननंदिनीनाचत लाल गिरिधरन संग ।
लाग डाट उरप तिरप रास रंग राख्यो...."

ये पद सुनतेही श्रीगोवर्धनधर ने प्रसन्न होकर अपने गलेमें पहनी कुंदपुष्पकी प्रसादी माला, श्रीकृष्णदासजीके गलेमें डाल दी। कृष्णदासजीका रोम रोम भाव विभोर होकर आनंदसे खिल उठा। एक अच्छे संगीतज्ञ, अच्छे कवि औरएक अच्छे कीर्तन कार होने का इससें अच्छा प्रमाण और क्या हो सकता है। उत्तम जीवकी परख करनाभी आप खूब जानते थे। एक बार आप आगरा गये वहां एक वेश्याका नृत्य देखा, उसका संगीत सुना, उस बालीकाकी रुपमाधुरीका दर्शन किया और आप मुग्ध होकर सोचने लगे कि मेरे ठाकुरजी उत्तम वस्तुके भोक्ता है, ये है वेश्या किंतु दैवी जीव है, इसे ठाकुरजीकी सेवामें अवश्य समर्पित करना चाहीये। वे उस वेश्याको आगरासे अपने साथ लाये, उसे कीर्तन गान भी सिखाया। श्रीजीके सन्मुख कीर्तन गान सहित, वह वैश्या नृत्य करने लगी,

"मेरो मन गिरिधर छबी पर अटक्यो"
"कृष्णदास" कियो प्राण न्योछावर यह तन जन सिर पटक्यो ।

यह अंतिम पंक्ति गाते गाते तो उस वेश्या के प्राण छूट गये। दैवीजीव आखिर प्रभुकी शरणमें पहुंच ही गया। यदी इसका श्रेय कीसीको भी जाता है, तो वह कृष्णदासजीको ही है।

ऐसा ही एक प्रसंग है गंगाबाई क्षत्राणीका। कुष्णदासजीके कहेने पर, श्री आचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजीने गंगाबाईको नाम निवेदन करवाया था।

कृष्णदासजीके संगसे गंगाक्षत्राणीका मन अलौकिक हुआ था और प्रभुसेवामें जुडा था।

एकबार श्रीगुसांईजी, श्रीगोवर्धननाथजीको राजभोग समर्पीत कर रहे थे। उस समय गंगाक्षत्राणीकी द्रष्टि राजभोगकी सामग्री पर पडी। राजभोग अपवित्र हो गया और ठाकुरजी राजभोग आरोगे बिना भूखे ही रहे। इस बातको लेकर गुसांईजी और कृष्णदासजी के बीचमें कुछ वार्तालापभी हुआ जिस के फल स्वरुप श्रीगुसांईजीको छे महीने तक श्रीनाथजीकी सेवा-दर्शनका विप्रयोग हुआ। कृष्णदासजी मंदिरके अधिकारी थे इस सत्तासे आपने श्रीगुसांईजीसे, श्रीगोवर्धनाथजीकी सेवा-दर्शनका सुख छीन लिया। श्रीगुसांईजी छे महीने तक, विप्रयोग दशामें केवल प्रभुका नामस्मरण करते पारासोलीमें रहे। अंतमें बिरबलनें बिचमें पड़कर इस समस्याका समाधान किया। तब कहीं जाकर, श्रीगुसांईजी पूर्ववत श्रीजीकी सेवा करने लगे और कृष्णदासजी अधिकारीका कार्यभार संभालने लगे।

एक बार एक वैष्णवने वहां कूँवा खुदवाने की इच्छा प्रगटकी और इसके खर्चके पैसेभी वो श्रीकृष्णदासजीको सौंप कर गया। कृष्णदासजीके मार्गदर्शनतले कूँवा पूंछरी गाँवके पास तैयार भी हो गया। एक दिन उस कूँवेंकी जांच करने कृष्णादासजी गये, आपका पैर फिसला, आप कूँवेंमें गिर गये और देहांत हो गया। संवत १६३८ के करीब इतनाही नही, वैष्णव साहित्यमें ये भी कथा प्राप्त है कि मृत्युके बाद आपने प्रेतयोनी प्राप्त की। इस प्रेतयोनीमें कुछ समय बिताने के बाद जब श्रीगुसांईजीकी कृपाद्रष्टि आप पर पडी, तब प्रेतयोनिसे आपका छुटकारा हुआ और आपका लीलाधाममें प्रवेश हुआ।

ऐसी अनेक कथाअें आपकी जीवनीके बारेमें प्राप्त है। जिसमें श्रीगुसांईजीके साथ आपका कठोर व्यवहार, आपश्रीकी प्रेतयोनि प्राप्त करना- ये बातें सत्य माननेको मन तैयार नहीं होता, फिरभी ठाकोरजीकी गूढ़ लीलाओंका रहस्य श्रीठाकुरजीही जाने। आप दैवी जीव थे - किसी अपराध वश पृथ्वी पर आये, भोग खत्म होने पर फिरसे लीलाधामको प्राप्त कर गये।

श्रीगुसांईजीके साथ आपका कठोर व्यवहार, आपश्रीकी प्रेतयोनि प्राप्त करना- ये बातें सत्य माननेको मन तैयार नहीं होता, फिरभी ठाकोरजीकी गूढ़ लीलाओंका

रहस्य श्रीठाकुरजीही जाने । आप दैवी जीव थे - किसी अपराध वश पृथ्वी पर आये, भोग खत्म होने पर फिरसे लीलाधामको प्राप्त कर गये ।

कुछभीहो, आपके जीवनकी तरह, आपका कथनभी वैविध्यमय है। आपश्री ने "जुगल मानचरित्र", "भ्रमरगीत ", "हिंडोरा-लीला", "दानलीला", "प्रेमरससरासि", "भक्तमालटीका", "वैष्णववंदन", "जैसे ग्रंथोंकी रचना की है, ऐसा माना जाता है।

आपकी रचनाओमें भाव और कलापक्ष दोनो ही सबल है। आपने भगवानकी प्रायः सभी लीलाओंका वर्णन अपने पदोमें किया है। किन्तु आपके रासलीलाके पद अद्‌भुत है। रासलीलाके वर्णन में तथा प्रिया - प्रियतमकी छबी वर्णनमें आपने अपना हदय उडेल दिया है। आपकी लीलाआसक्ति भी रासलीलामें ही है। आपको ललिता सखीका स्वरुप ही माना जाता है।

भगवानकी प्रायः सभी लीलाओंका वर्णन अपने पदोमें किया है। किन्तु आपके रासलीलाके पद अद्‌भुत है। रासलीलाके वर्णन में तथा प्रिया - प्रियतमकी छबी वर्णनमें आपने अपना हदय उडेल दिया है। आपकी लीलाआसक्ति भी रासलीलामें ही है। आपको ललिता सखीका स्वरुप ही माना जाता है।

आपकी रचनाओंको देखने पर एक बात निश्चित होती है की आप एक अच्छे कवि, अच्छे संगीतकार और अच्छे कीर्तनकार तो थे ही, साथमें गीत-वाद्य और नृत्य-संगीतके तीनो पहलुओका आपको विशद् ज्ञान था। विविध वेशभूषा, वस्त्रो और अलंकारोंका वर्णनभी आपके पदोंसे प्राप्त होता है।

केवल कृष्णदासजी नहीं, कोई भी भक्तकवि अपना सबकुछ भूलकर, अपने आराध्य देवपर, निजको निछावर कर देता है, वहां वह सारे बंधनोसे मुक्त हो जाता है। और एक अनिर्वचनिय आनंदमें सराबोर हो जाता है । हमने अष्टछापके आठों कविओंके जीवन-कथनमें गोता लगानेका प्रयत्न किया है उसमेंसे एकही बात प्रतीत होती है की ये सब भक्तकवि जब भाव विभोर होकर श्रीनाथजीके सामने कीर्तन करते होंगे तब सारा चराचर जगत् किसी अवर्णनीय आनंद में डूब जाता होगा।

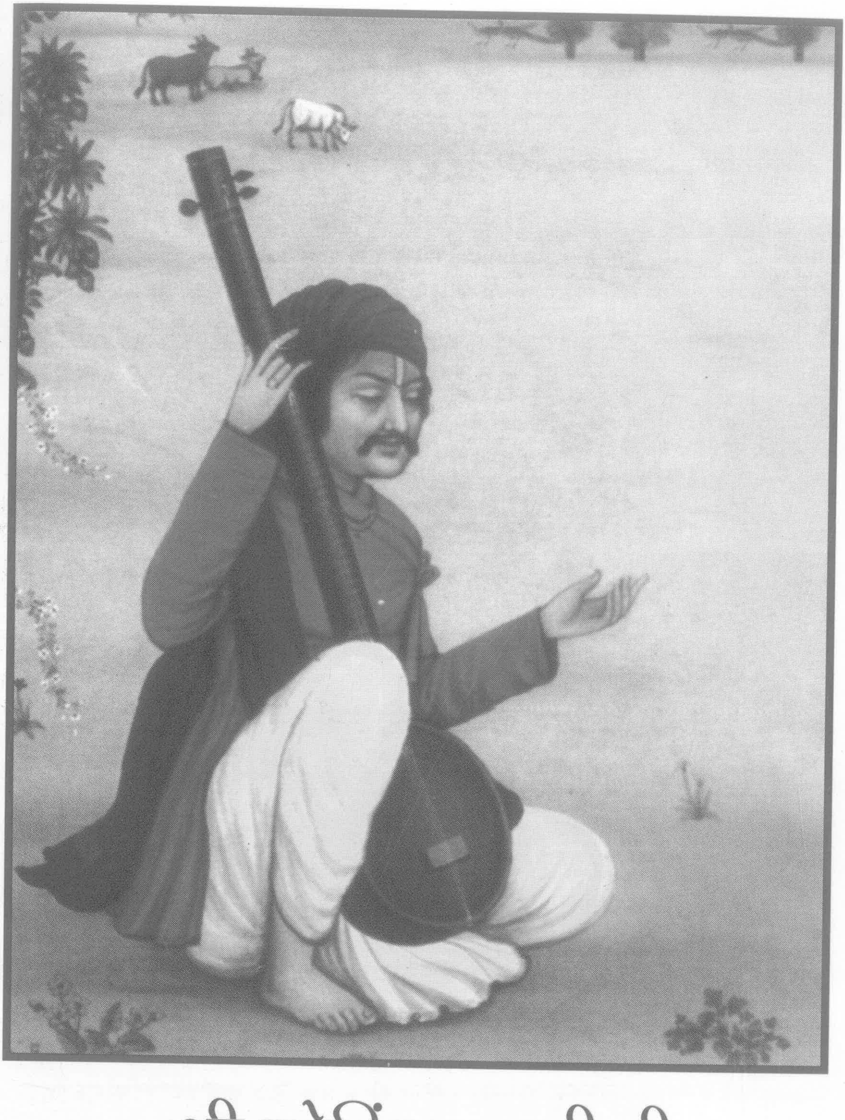

श्री गोविंदस्वामीजी

जन्म : वि.सं.1562 नि.ली.प्र : वि.सं.1642

|| श्री हरिः ||

श्रीगोविंदस्वामी - श्रीगोविंददासजी

प्रभुश्री श्यामसुंदरके प्रति अस्खलित बहेती अपनी भक्तिधाराको, भावपुर्ण, स्नेहपूर्ण कीर्तनों द्वारा बहाने वाले अष्टछाप अष्टकविओमेंसे छे सखाओके बारेमें, उनके जीवन - कथनके बारेमें, कुछ कुछ जाननेका प्रयत्न अपने पीछली अभ्यास-क्रमकी पुस्तिकाओमें हमने किया। अब हम सातवे सखा गोविंदस्वामी -गोविंददासजी के बारेमें जानकारी प्राप्त करनेका प्रयत्न करेंगे।

"सखा मिले श्रीनाथ सरीखे, विधना जिनके भाग्य सराहे, लिखे ललाके लीलामय पद, लला स्वयं आ जिनके गाये। कभी खेलते गिल्ली दंडा, कभी रुठते, फिर मान जाते, स्वामी दाँव हार जाते तो, कभी दास स्वामी बन जाते। बन श्रीनाथ, कृष्ण जब आए, श्रीदामा गोविन्द बन गये, गोविंददास, दास बन चमके और नाथ ब्रजचंद बन गये।"

कविश्री भगवतशरण चतुर्वेदीजी (जयपुर) की इस काव्य पंक्तियोंसे इतना तो निश्चित होता है कि सखा तो आंठो थे किन्तु दास्यभक्तिके साथ साथ सख्यभक्तिकी श्रेष्ठता के दर्शन हमे श्रीगोविंददासजी की जीवनी से होता है।

ऐसे ये गोविंदस्वामि कौन थे? उनका जीवन कैसा था ? ये जाननेकी उत्कंठा हमे अवश्य ही होगी। पुष्टिमार्ग के अन्य सखाओंकी तुलनामे आपके जैसा चरित्र बहोत ही कम मिलता है। आपके माता-पिता कौन थे? गुरु कौन थे इन बातोंका कोई उल्लेख नहीं प्राप्त होता है। आपके कोई काव्यमें से भी आपके जीवनके बारेमें, कोई भी उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। फिरभी अष्टसरवानकी वार्ता, चोर्यासी वैष्णव आदि पुस्तकोंके आधार पर हम इतना कह सकते हैं कि,

गोविंदस्वामि राजस्थानके भरतपुर राज्य में आये हुए 'आंतरी' नामक 'छोटे से गाँवके वतनी थे। उनका जन्म सन.**1562** और अंतकाल सन. **1642** में हुआ। जातिसे वे सनाढय ब्राह्मण थे और गृहस्थ भी थे। क्योंकी उनकी बहन कान्हबाई और बेटीका उल्लेख मीलता है। वार्ता साहित्य में कहा गया है कि, गोविंदस्वामि गुरु परम्पराका निर्वाह करते हुए शिष्योंको दीक्षा देते थे। आंतरी गाँवमें उनके बहुत शिष्य थे। इसके अलावा आपके पास माधुर्यपूर्ण कंठ,अद्‌भुत कवित्वशक्ति ,अगाध ज्ञान और अद्‌भुत संगीतके कारण आसपासके बहुतसे लोग आपसे प्रभावित होकर खिंचे चले आते थे। और आपके सेवक बन जाते थे। इस तरह जहां तक वे आंतरी गाँवमें रहे , अनेक शिष्योंके गोविंदस्वामि बनकर रहे।

किन्तु आपतो दैवी जीव थे। इतना सब होने पर भी आपकी आत्मा प्रभु मिलनकी आरत में, प्रभु दर्शनकी झंखनामें सदैव बेचैन रहती थी। मनमें एकही रटणा कि कब श्यामसुंदर मिलेंगे, कब उनकी लीलाओंके दर्शन होंगे? यह व्यथा आपके इस पदमें भी दिखाई देती है।

"सुपनेमें सगरी रैन गई, भोर भए वनचर
धुनिसुनि जागत ही पीर भई।
गोविंद प्रभु मिले सुख उपजे, जात न काहू कही।"

आप कुटुंब, वतन, स्वामिपद, सबकुछ छोडकर, गोकुल आये, जहां व्रजमंडलमें प्रभु श्यामसुंदर सदैव रासलीला में रसलीन है। गोकुलमें महावनमें आपने निवास किया। वहां जमुनाजी के तटपर बैठकर, सदैव आप प्रभुश्यामसुंदर से विनती करते, आपके कंठसे अलौकीक पद रचनाए प्रगट होती। एक दिन।।

आपकी भेंट श्रीगुसांईजीके सेवकसे हुई। उसके साथ आप श्रीगुसांईजीके दर्शनको गये। वे तो आपकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। आपश्रीने नामनिवेदन करवाके गोविंदस्वामिको शरणमें लिया। उसी दिनसे गोविंदस्वामि स्वामि मिटकर दास हो गये। श्रीगुसांईजीकी कृपासे आपको श्रीठाकुरजीके बाललीलाके रसात्मक स्वरुपका साक्षात्कार हुआ।

अब आप श्रीगुसांईजीको गुरु मानकर, सबकुछ छोडकर प्रभुकी सेवा, कीर्तन सेवा करने लगे। प्रभूकी जिस लीलाका आपको दर्शन होता था, उसी लीलाका वर्णन प्रभु सन्मुख गाने लगे और प्रभुको रिझाने लगे। अब आप गिरिराजजीकी कदम्बखंडीमें निवास करने लगे। जो आजभी गोविंदस्वामिकी कदम्बखंडी के नामसे विख्यात है।

एकबार आंतरी गाँवके कई लोग गोविंदस्वामिको ढूढते ढूंढते गोकुलमें आये। उन्होनें गोविंददासजीसे ही प्रश्न कियाकि, आपने गोविंदस्वामिको कहीं दैखा है? आपने झटसे उत्तर दिया की आंतरी वाला गोविंदस्वामीतो कबका मर गया। जो दूसरोंको अपना शिष्य बनाता था। अब तो वह श्रीगुसांईजीका सेवक, गोविंददास ही है। सर्वात्मभावसे समर्पणका इससे उत्कृष्ट उदाहरण और क्या हो सकता है ?

श्रवण, कीर्तन वगैरा नवधाभक्तिमें से गोविंददासजीको सरव्यभक्ति सिद्ध हो गई थी। गोविंददास, श्रीनाथजीके अेकांत, अंतरंग सखा बन गये थे। अनोसरमें ठाकोरजी गोविंददासजीके साथ कभी कभी गिल्ली दंडा खेलतेथे। तो कभी गोविंददासजीको घोड़ा बनाकर घुडसवारी करते थे। तो कभी गोविंददासजीकी मजाक भी कर लेत थे।

एकबार गोविंददासजी कीर्तन कर रहे थे। श्रीनाथजीने मस्तीमें आकर गोविंददासको कांकरी मारी, गोविंददास कुछ नहीं बोले, लेकिन प्रभुतो कांकरी पर कांकरी मारते ही गये, अब गोविंददासजी की धीरजका अंत आ गया। उन्होने श्रीजीबापा पर कांकरी फेंकी। श्रीनाथजी चमके श्रीगुसांईजीने यह देखातो गोविंददाससे कहा, अरे! यह तुमने क्या किया? गोविंददासजीने कहा-"अपनो सो पूत, परायो ढढींगर?" श्रीठाकुरजीके साथ, सख्यभावमें अपना रोष प्रगट करता ये अति सुंदर पद सुरदासजी का है।

"खेलनमे को काको गुसैयाँ"

सख्यमें कोई छोटा, कोई नीति-नियम नहीं होते। वहांतो सिर्फ हृदयका निर्मल प्रेम ही होता है।

ये बात हमें गोविंददासजीके जीवन से प्राप्त होती है। एक दिन गोविंददासजी उत्थापनके दर्शन करने गये। उन्होने देखाकि श्रीनाथजी के पाघके पेच खुल रहे थे। गोविंददासजीने प्रभु से कहा आपश्रीके पाघके पेचतो खुल रहे है। तब स्वयं प्रभुने गोविंददासजीको आज्ञा दी की ऐसा है तो तू मेरी पाघके पेच ठीककर दे। गोविंददासजीने पाघ ठीक करदी। इसका एकही अर्थ निकलता है कि गोविंददासजी की सख्यभक्ति सर्वोत्तम थी

"प्रीतम प्रीत ही ते पैये ...."

आपश्रीका ये कीर्तन यही संदेश देता है की प्रभुको प्रीतिसे ही पाया जाता है और कोई रीतिसे नहीं।

ऐसा ही अेक और प्रसंग है, जो बताता है की गोविंदस्वामि प्रभुके कीतने

कृपापात्र थे, उनके कीर्तन प्रभुको कितने पसंद थे। उसका प्रमाण है। एक दिन श्रीगुसांईजीने उत्थापन समयमें देखाकि श्रीनाथजीकी कवाई फट गई है। श्रीगुसांईजीको बड़ा आधात हुआ की ऐसे श्रीठाकोरजी का वस्त्र कैसे फट सकता है? उदास होकर आपश्री आपकी बैठकमें आये। गोविंददासजीने आपश्रीका उदास चहेरा देखकर पूछा की क्या बात है? श्रीगुसांईजीने जब बताया तब गोविंदासजी हंसकर बोलेकी आप क्यों उदास होते हो? अपने छोरे को नहीं जानते ? मैं कीर्तन कर रहा था और आपका लड़का श्याम ढाक पर बैठा कीर्तन सुन रहा था। इतनेमें आपश्रीको मंदिर में आते देख, श्रीजीबावाने ढाकपरसेही छलांग लगाई क्योंकी प्रभु, आपके पहलेही मंदिरमें पहुंच जाना चाहते थे। उसी समय कवाईका छेड़ा ढ़ाकमें फंसगया और क्वाई फट गई। अगर आपश्री देखना चाहते हो तो अब भी वह कवाईका टुकड़ा वहां मौजूद है। श्रीगुसांईजी गोविंददासजीके साथ श्यामढ़ाक पर गये, वहां देखातो कवाईकी चीर वहां लटक रही थी। श्रीगुसांईजी गोविंददासजीकी भक्ति पर अति प्रसन्न हुए और उसी दिनसे प्रभुको परिश्रम न पहुंचे, इसलिये सभी सेवकोंको, तीनबार शंरवनाद करनेकी, शंखनादके बाद कुछ देर ठहरकर मंदिरके किंवाड़ खोलनेकी आज्ञा दी। जो आज पर्यंत चालू है।

ऐसे तो अनेक प्रसंग है, जो गोविंददासजीकी सख्यभक्तिके, द्योतक है। किन्तु यहां उल्लेखनिय यह है कि, भक्त तो भगवानको सख्यभावसे भज सकता है, परंतु जिसके लिये स्वयं भगवान बेचैन हो जाये, ऐसे सखाके भाग्यकी कैसे सराहना की जासकती है।

गोविंददासजीने श्रीनाथजी के प्रति अपनी इस भक्ति धाराको कीर्तनो के रुपमें अस्खलित रुपसे बहाई है। प्रभुकी विविध लीलाओंके अनेक कीर्तन आपने लिखे। जिसमें मंगलासे लेकर शयनपर्यंतके, वर्षोत्सवके, बाललीलाके, गोदोहन, दानलीला, गोचारण, वनविहारके, वेणुवादनके, रासके, व्रतचर्याके, मानके अनेक पद लीखे है। जीनकी संरव्या **575** तक पायी जाती है।

इस कीर्तनोंसे हमे संगीतशास्त्रके तथा काव्यके एक उच्चकोटिके विद्वानके दर्शन होते है। संगीतकलामें आपकी निपुणता के कारण ही संगीत सम्राट तानसेन और राजा आशकरण जैसे, आपके पास संगीतकी शिक्षालेने आते होंगे। इतनाही नहीं, स्वयं बादशाह अकबर आपका संगीत सुनने आया करेते थे। एकबार प्रातःकालका समय था। गोविंददासजी यमुना किनारे बैठकर, भैरवी रागमें अपने स्वामि-सरवा प्रभुको रीझा रहे थे। एक म्लेच्छने यह राग सुना, अति प्रसन्नता के कारण उसके मुखसे वाह-वाह शब्द निकल गये। गोविंद-दासजीने जब देखाकी प्रभुको रीझानेके लिये जो राग वे गा रहे थे, वो तो "एक म्लेच्छने छू लियो"। तबसे उन्होंने ये राग ठाकुरजी सन्मुख कभी नहीं गाया और भैरवी रागमें कोई पद उन्हों ने नहीं बनाया। (कहा जाता हैकी ये म्लेच्छ और कोई नहीं, अकबर बादशाह ही थे।) क्योंकी गोविंददासजी तो प्रभुकी प्रसन्नताके लिये ही कीर्तनगान करते थे। लौकिक मनोरंजन के लिये नहीं। इस प्रसंगसे आपकी स्वामि के प्रति, अनन्य भक्तिही प्रगट होती है। अष्टसखाओंके कीर्तन, केवल कल्पनाका आविष्करण नहीं है, ये बातका पहेलेभी उल्लेख हो चुका है और आजभी फिरसे इसी बातको दोहराई जाती है। सभी सखाओंको प्रभुकी प्रत्यक्ष

लीलाओंके दर्शन होते थे। जैसे सूरदासजीका "आज तो हरी नंगम नंगा" पद इसका प्रमाण है तो, गोविंददासजी का धमार पद गान का प्रसंगभी इसी बातको सुदृढ बनाता है । एक समय बसंतके दिन थे । श्रीगुसांईजी, श्रीनाथजीकी सेवामें थे।

गोविंददासजी धमार गा रहे थे।

"श्री गोवर्धनरायलाला। तिहारे चंचल नैन विशाला।
तिहारे उर सोहे बनमाला। ताते मोहि रही ब्रजबाला।
............अरगजा कुमकुम घोरीके प्यारी लीनो कर लपटाई ।
अचकां अचकां आइके भाजी, गिरिधर ई गाल लगाई ।।

इतना गाके गोविंददासजी चुप हो गये । पद आधा क्यों छोड दिया? ऐसा श्रीगुसांईजीके पुछने पर, गोविंददासजी ने जवाब दिया "जो महाराज ! धमार तो भाजि गई और मन अरुझाई गयो। ताते खेल तो उतनोई रह्यो। भाजी गई धमार तो आगे खेल कहा होइ ?"

जो, बादमें श्रीगुसांईजीने धमार पूर्ण कर दी ।

"इहि विधि होरी खेलही, ब्रजवासिन संग लगाई ।
श्रीगोवर्धनधर रुप पै जन 'गोविंद' बल-बल जाई ।।

ये पूरा प्रसंग हमे एक ही बात मानने पर मजबूर कर देता है कि अष्टसखाओंके कीर्तन केवल कल्पना नहीं । प्रभुकी लीलाके साक्षात दर्शनकी ये शाब्दिक तसवीर है । भावसभर प्रतिकृति है।

गौविंददासजीका अनन्यभाव, जैसा गुरु-गोविंदमें था, वैसा हीके लिये

अनन्यभाव श्रीयमुनाजीके लिये भी था। वे सर्वदा, श्रीयमुनामैयाका, आधिदैविक स्वरुपमें साक्षात् स्वामिनीजीके रुपमें ही दर्शन करते थे। इस लिये कभीभी, गोविंददासजीने यमुनाजीमें स्नान नहीं किया। वे हमेशां कुऐंके जलसे ही स्नान करते थे। क्योंकी वे मानते थे कि, ये तो साक्षात् स्वामिनीजी है, उनको मैं अपने इस शरीरसे स्पर्श कैसे करु?

गोविंददासजी की पदरचनाऐं गीति- काव्यमें है अैसा हम कह सकते है क्योकी सॅक्षिप्तता, एकरुपता, संगीत और आत्मअभिव्यक्ति, ये चारों तत्वोंको आवश्यकमाना जाता है और इन सभी तत्वोंका दर्शन हमे गोविंददासजीके पदोमें होता है। संगीतके वे प्रकांड पंडित थे। स्वर, राग, ताल और लयकी शुद्धताके वे समर्थक थे। इनके पदोमें विविध रागों तथा आड़ा चौताल, झपताल, चारताल आदिका प्रयोग, आपकी ध्रुपदगायकीको प्रमाणित करता है।

इनकी रचनाओंमें मुरव्यतया श्रृंगार, शांत, वात्सल्य और करुण रसोंका दर्शन होता है। रस कोईभी हो, आपके पद माधुर्य और प्रसादगुणोंसें भरपूर है। शब्द और अर्थकी एकरुपता, बाह्य सौंदर्यके साथ साथ, भावसौंर्दर्यकी सुंदर अभिव्यक्ति, आपके पदोमें दिखाई देती है। उ.त.

गोरे अंगवारी गोकुल गॉवकी ग्वालिनवाकों
लहर लहर जोबन करै थहर थहर करे देह ।
धुकर - पुकर छाती करें, वाके बडे रसिकसे नैना ॥

सुंदर शब्दचित्र प्रगट करनेकी अद्भुत ताकत, अलग अलग ऋतुओंका

तादृश वर्णन, राधा-कृष्ण और ग्वाले-गोपियोंकी विविध लीलाओंका श्रृंगारमय रसवर्णन, अपनी मौलिक भावधाराको, शब्दो में गुँफित करनेकी कला, ये सब आपके ज्ञान, भाषा प्रभुत्वका ही दर्शन कराती है।

पुष्टिसम्प्रदायकी भावनाके अनुसार, गोविंददासजीका लीलात्मक स्वरुप, श्रीप्रभुके अंतरंग सरवा श्री स्वामिनीजीके भ्राता-श्रीदामाजीका है। जो दिनमें प्रभुके साथ खेलते है। रात्रि समयमें वे भामा सखी है। श्रीठाकुरजी इन्हे मालारुप मानते है और वे श्रीजीके अतिव प्रिय है। प्रभुके द्वारिकाधीश स्वरूपमें आपकी सदैव आसक्ति रही है। प्रभुकी लीलाओमें आंखमिचौनी और हिंडोरामें तथा शृंगारमें, टिपारामें आपकी आसक्ती है। आपके कीर्तन का मुरव्य समय ग्वालका था।

ऐसे ये गोविंददासजी ने, अपनी अनोखी सरव्यभकितके कारण, एक दार्शनिक भक्त, प्रतिभावंत कवि और कीर्तनकारके रुपमें, केवल अष्टछाप काव्य मेंही नहीं, समग्र भक्ति-काव्यमें अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

"गोविंदस्वामी द्वारा परिदर्शित अनन्त रससिन्धुमें अवगाहन कर हम ऐहिक तापोंसे निवृत्ति और चिन्तन-सुखकी उपलब्धि द्वारा जीवन के वास्तविक लक्ष्यको प्राप्त कर सकते है। "कलौ" केशवकीर्तनात् के अनुसार आजके निःसाधन जीवके लिये भगवत् प्राप्तिका यही एक मात्र उपाय है। यही उनके काव्यका लक्ष्य है और यही अमर सन्देश।"

ध्वज गीत

जय जय मंगल कारक जय हे, जय हे धर्म --पताका ।
जय जय वैष्णव नायक जय हे ,जय हे, पावन गाथा ।।
आकाश पे हम फहरायेंगे, नीचे न कभी झुकने देंगे ।
हो अमर शान इसकी जग में, इसके हेतु हम मिट जाएंगे ।।
जय जय वैष्णव नायक जय हे , जय हे पावन गाधा ।
श्री महाप्रभु ओर पुष्टि मार्ग के,ध्येय का विश्व रचायेंगे ।
जिसमें गुँजे जय धर्म हमारा, ऐसा कर दिखलायेंगे ।।
जय जय जन हितकारक जय हे, भारत धर्म पताका ।
जयहे । जय हे । जय हे ।

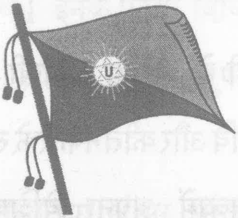

दो रंगो मे विभाजित ध्वज का उपरी भाग गहरा नीला, जो श्री ठाकुरजी के श्रीअंग का प्रतीक है । निचला भाग गहरा पीत (केशरिया) है जो श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग का प्रतीक है । मध्य में स्वर्णिम आभा लिये सुदर्शन चक्र है जो भगवद् शक्ति का प्रतीक, वैष्णवों की रक्षा का परिचायक है तथा उससे उत्कीर्ण किरणें सम्प्रदाय के संदेश को विश्वभर में पहुंचा रही है। चक्र के अंदर का भाग ब्रजमंडल का सूचक है। षट्कोण छः भगवद् धर्मो का सूचक है । षट्कोण के मध्य में तिलक लाल रंग में भगबद् चरंणारावेंद का प्रतीक है।

स्थायी

नी	**नी**	**सां**	**सां**	**ग**	**ग**	**म**	**म**	**प**	**प**	**प**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**प**
ज	य	ज	य	मं	-	ग	ल	का	-	र	क	ज	य	हे	-
म	**म**	**ग**	**ग**	**ग**	**म**	**नी**	**प**	**ग**	**ग**	**रे**	**सा**	**रे**	**रे**	**सा**	**रे**
ज	य	हे	-	ध	-	र्म	प	ता	-	-	-	का	-	-	-
नी	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**ध**	**ध**	**ध**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**प**
ज	य	ज	य	वै	-	ष्ण	व	ना	-	य	क	ज	य	है	-
म	**म**	**ग**	**ग**	**ग**	**म**	**नी**	**प**	**ग**	**ग**	**रे**	**सा**	**रे**	**रे**	**सा**	**रे**
ज	य	है	-	जी	-	व	न	गा	-	-	-	था	-	-	-

अंतरा

प	**प**	**प**	**प**	**म**	**प**	**ग**	**म**	**प**	**प**	**नी**	**नी**	**सां**	**नी**	**सां**	**सां**
आ	का	-	श	मे	-	ह	म	फ	ह	रा	-	यें	-	गे	-
नी	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**नी**	**ध**	**ध**	**नी**	**सां**	**नी**	**ध**	**प**	**प**
नी	चे	त	क	भी	-	झु	क	ने	-	दें	-	गे	-	हो	-
नि	**नी**	**सा**	**सा**	**ग**	**ग**	**म**	**म**	**प**	**प**	**प**	**नी**	**ध**	**ध**	**प**	**प**
अ	म	र	शा	-	न	इ	स	की	-	ज	ग	में	-	-	-
म	**म**	**ग**	**ग**	**ग**	**म**	**नी**	**प**	**ग**	**ग**	**रे**	**सा**	**रे**	**रे**	**सा**	**सा**
इ	स	के	हे	-	तु	मि	ट	जा	-	ये	-	गें	-	-	-

इसी प्रकार सभी अंतरे गाये या बजाये जायेंगे ।

रचयिता : पू.पा.१०८ नि.लि.गो.श्री. रणछोडाचार्यजी महाराजश्री

॥ श्री हरिः ॥

पताका गीत (वैष्णव अस्मिता)

पुष्टि पताका तुझो प्रणाम तुझो प्रणाम तुझो प्रणाम
वैष्णव हैं हम वैष्णव हैं,
वल्लभ के हम वैष्णव हैं............(मुखडा)
भक्तिअमृत पीनेवाले,
प्रेम सभीको देने वाले
प्रभु चरणोके परवाने हम,
छके हुए मतवाले हैं.....वैष्णव हैं.......(१)
राग भोगसे दुर रहें हम,
भगवद्रस भरपुर रहें हम
हरि हरि मुखसे रटनेवाले ,
दिवाने दिलवाले हैं........वैष्णव हैं.....(२)
अहंकार नही मनमें आये,
दासोहम्की धून लगाये
सेवक बनकर श्रीजीकि हम,
सेवा करनेवाले हैं ......वैष्णव हैं......(३)
आत्मसर्मपण ध्येय हमारा,
सेव्य सदा श्री नंददुलारा
"श्रावणी" जगमे पुष्टि पताका ,
लेकर चलनेवाले हैं.....पुष्टि पताका..(४)
वैष्णव हैं हम वैष्णव हैं
वल्लभ के हम वष्णव हैं
"श्रावणी"

रचयिता (प.पू.गो.१०८ श्रीइन्दिरा बेटीजी महोदयाश्री)

मुखड़ा

म म म म	म म म म	ग म प म	ग सा सा सा
पु - ष्टि प	ता - का -	तु झे - प्र	णा - - म
ध ध ध नी	नी प प म	म म ग प	म म म म
तु झे - प्र	णा - - म	तु झे - प्र	णा - - म
सां सां सां सां	नी ध ध नी	नी सां सां सां	सां सां सां सां
वै - ष्ण व	है - ह म	वै - ष्ण व	हैं - - -
नी नी नी नी	नी नी ध म	म ध ध सां	नी नी ध म
व - ल्ल भ	के - ह म	वै - ष्ण व	हैं - - -

अंतरा

सां सां सां सां	नी ध ध नी	नी सां सां सां	सां सां सां नी
भ - क्ति अ	मृ त पी -	ने - वा -	ले - - -
नी नी नी नी	नी नी ध म	म ध ध सां	नी नी नी नी
प्रे - म स	भी को दे -	ने - वा -	ले - - -
म म म म	म म म म	ग म प म	ग सा सा सा
प्र भू च र	णों - के -	प र वा -	ने - ह म
ध ध ध ध	नी प प म	म म ग प	म म म म
छ के - हु	ए - म त	वा - ले -	हैं - - -

इसी प्रकार पूरी कडियाँ गायी और बजायी जायेगी ।

॥ श्री हरिः ॥

आभार

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद तथा श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्टके सहकारसे कीर्तन प्रशिक्षण के पंच वर्षीय अभ्यास क्रमके पंचम वर्षकी केसेट सी.डी. **MP3** तथा पुस्तिका "कीर्तन विशारद" प्रगट करते हुए हम अत्याधिक आनंदका अनुभव कर रहे है।

इस कार्य सिद्धिसे नि.ली.पू.पा.गो. १०८ तिलकायत श्री गोविंदरायजी महारजश्री, नि.ली.पू.पा.गो. १०८ श्री मुकुंदरायजी महाराजश्री (मुंबई बडे मंदिर वाले) नि.ली.पू.पा.गो. १०८ श्री प्रथमेशजी महाराजश्री तथा पू.पा.गो. १०८ श्री गोकुलोत्सवजी महाराजश्री (इन्दौरवाले) ओका संजोया हुआ स्वप्न साकार हुआ है। इन सब महानुभावोकी इच्छानुसार राग, ताल, लय, स्वरलिपि (नोटेशन्स) सहीत नित्य के, उत्सव के तथा अन्य अनेक पद उन सबके राग विषयक माहिती सहित प्रगट किये गये है। जिसके अभ्याससे कीर्तन अनुरागी वैष्णव वृंद अवश्य लाभान्वित होंगे इसमे कोई संशय नही है।

इस अवसर पर इन पांचो वर्षोमें अपने आशिर्वचनोसे हमारा होंसला बढानेवाले सर्व गोस्वामि बालकोंके चरणोमें हम वंदन करते है।

इस पंच वर्षीय अभ्यासक्रमको परिपूर्ण करनेमें श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा हमे कुछ अंशमे आर्थिक सहकारभी मिला है और पू.पा. श्री निकुंजलता बेटीजी ने कुछ अंशमे लेखनकार्य द्वारा जानकारी भी दी और पांचो वर्षके केसेटोमें आशिर्वचन प्रदान किये उसके लिए हम उन्हें भी वंदन करते है।

नि.ली.पू.पा.गो. १०८ श्री प्रथमेशजी महाराजश्री के सेवक, १९८८ से परिषद द्वारा संचालित कीर्तन वर्गोमे विद्यार्थीओको आरोह, अवरोह, पकड़, आलाप, तान आदि और स्वरलिपि लिखाकर कीर्तन सीखाने वाले प.भ. कीर्तनकार श्री जमुना

प्रसादजी शर्मा ने ही इस कीर्तन प्रशिक्षणका पंचवर्षीय अभ्यासक्रम तैयार करके और स्वरलिपि लिखकर और केसेटोमें अपने सुमधुर स्वरोसे गा कर हमें उपकृत किया है। वास्तव मे उनके सहयोग बिना इस कीर्तन प्रशिक्षणका पंचवर्षीय अभ्यासक्रम तैयार ही न हो पाता, ऐसे इस अभ्यास क्रमके प्राणरुप परिषदके कीर्तनाचार्य के ही सहयोगसे हम इस पंचवर्षीय अभ्यासक्रमका समुद्र पहेले वर्षकी प्रवेशिका, दुसरे वर्षकी प्रबोध तीसरे वर्षकी सुबोध चतुर्थ वर्षकी प्रवीण और पंचम वर्षकी विशारद नामक पुस्तिकाओको और केसेटो, सी.डी. **MP3** आदि प्रकाशित करके आपके सन्मुख रख सके जिसे सीखकर आप श्री जी को प्रसन्न कर सके.

जिसके लिये हम श्री जमना प्रसादजी के कृतज्ञ है, और उनकाभी सहृदय से आभार प्रगट करते है। इन्होंने आजतक सेंकड़ो विद्यार्थीओको कीर्तनकार बना दिया है जिनमें से कुछतो अब स्वयं सिखाने लग गये है।

श्रीमती नैनाबेन, कु.ख्यातिबहन व श्री निर्मलभाई द्वारकादास जो इस परिषदके संरक्षक सदस्यभी है, इन्होनेभी इस अभ्यास क्रमको एवं परिषद द्वारा प्रेषित षडऋतु को सफल बनाने में प्रथम वर्षसे पंचम वर्ष तक के केसेट रेकॉर्डीगमें, एवं चतुर्थ वर्ष तक के प्रुफरीडींग मे प्रश्न पेपर तैयार करनेमें, परीक्षाओं लेनेमें, कार्यक्रमोंके व्यवस्थापनमें, आदि कार्योको अपनाही कार्य समझकर तन मन धनसे पूर्ण रुपसे सहकार दिया है, हम इनकाभी अन्तःकरण पूर्वक आभार मानते है।

इस समय हम श्रीमती कल्पनाबहेन शाहकी सेवाओकोभी नहीं भूल सकते, जिन्होंने इस पंचवर्षीय अभ्यासक्रममें एवं परिषद द्वारा प्रेषित षडऋतुओकी केसेटो, सीडी एवं एमपीथ्री तथा परिषदके शताब्दी वर्षके और १९९४ से किये जाते हर कार्यक्रममे, पुस्तिकाओके लेखन कार्यसे लेकर उद्घोषणाका कार्य इन्होंनेही अपना कार्य समझकर तन, मन, धनसे हमें उपकृत किया है, हम इनकाभी अन्तःकरण पूर्वक आभार मानते है।

"योजकः स्तत्र दुर्लभः" इस उक्तिको सहज बनाने वाले परिषदकें कार्यकर्तागण, श्रीमुकुंदभाई शाह, श्रीबटुकभाई शाह, श्रीप्रदीपभाई गांधी, श्रीनिर्मलभाई द्वारकादास, श्रीवल्लभभाई रायचुरा, श्रीचंद्रेशभाई पटेल, श्रीमनोहरभाई श्रोफ आदि कार्यकर्ताओनेभी इस पंचवर्षीय अभ्यासक्रममे, प्रकाशन आदिमें भी, तन, मन, धन से जो सर्वजनहीत का कार्य करवाया है उनकाभी हम अन्तकरण पूर्वक आभार मानते है।

तद्उपरांत इनसभी वर्षोकी परीक्षाओके पेपर्स तपासनेमे वगेरे कार्योमें श्रीप्रदीपभाई गांधी, श्रीमती छायाबेन गांधी, कु. आरती बहन एवं हेरल बहन गांधी एवं मोर झरिया बंधु काभी हम अन्तकरण पूर्वक आभार स्वीकार करते है।

इसके अलावा केसेट, सीडी आदिके रेकॉर्डींगमें पूर्णरुपसे सहयोग देनेवाले श्रीअरविंद साउन्ड स्टुडीओवाले श्री बाईट का एवं आरोही स्टुडीओवाले श्रीरत्नाकरभाईका तथा प्रिंटर श्रीजयंतभाई शाह एवं श्री बिपिनभाई शाह काभी सहर्ष आभार मानते है।

आखिरमें जिन जिन लोगोंने विद्यार्थीओंको अपनी परीक्षाओंके लिये कीर्तन सिखाया, जिन व्यक्तिओंने परीक्षा लेनेमे, परीक्षा पेपर तपासनेमे सहकार दिया उन सब भाई बहनों का, जिन जिन भाई बहनों ने परोक्ष व अपरोक्षमें तन, मन, धन, से सहकार दिया है उन सबोंका हम हार्दिक आभार मानते हैं।

◆

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यदभवेत ।। तत्संर्व क्षम्यतां देव प्रसीद पुरुषोत्तम।

इदं पुस्तकं मया यथामति संशोधितं तत्र यत मत्प्रमादादिना परिभ्रष्टं तत सर्व

पुष्टि मार्गीय भगवदीयैः सर्वेः संशोध्य ग्राह्यमिति विज्ञप्ति ः

ः विनीत ः

श्री जमुना प्रसाद शर्मा
एवं
श्रीमति कल्पनाबेन शाह

श्री प्रदीपभाई गांधी (महामंत्री)
एवं अधिकारी वृंद
आ.रा.पु.मा.वै.परिषद

सिखानेवालो के नाम	मौखिक परीक्षाए लेनेवालो के नाम	लिखित परीक्षाए लेनेवालोंके नाम
१ श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा	१ श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा	१ श्री तरुलताबेन संपट
२ श्री श्यामसुन्दरजी जोशी	२ श्री भगवतीप्रसादजी शर्मा	२ श्री तिलकभाई शाह
३ श्री राजेश चतुर्वेदी	३ श्री श्यामसुन्दरजी जोशी	३ श्रीमती छायाबेन गांधी
४ श्री उर्मिलाबेन वोरा	४ श्रीमती हारदिकाबेन महेता	४ कु. ख्याति द्वारकादास
५ श्री रोहिणीबेन परीख	५ श्री गिरिशभाई कारिया	
६ श्री दक्षाबेन वैद्य	६ कु. ख्याति द्वारकादास	**प्रश्नपेपर तपासनेवालोंके नाम**
७ श्री मंजुलाबेन शाह	७ श्री विदुरप्रसाद गौतम	
८ श्री चारूबेन रेशमवाला	८ श्री तीलकभाई शाह	१ श्री सुभाषभाई मोरझरीया आदि वृंद
९ श्री सरलाबेन लेहरा	९ श्री तरुलताबेन संपट	
१० श्री हसांबेन शाह		
११ श्री ज्योत्सनाबेन श्रोफ		
१२ ड़ॉ बकुलाबेन चौकसी		
१३ श्री लताबेन शाह		
१ श्री वी.पी. परीख - हालोल		
२ श्रीसी.पी.तलाटी - हालोल		
३ ड़ॉ. नटवरगोपाल मापावाला-(नागपुर)		
४ श्री गिरिधरगोपालअग्रवाल (नागपुर)		
५ श्री रविगोपाल अग्रवाल (नागपुर)		
६ श्री मानभट्टजी - वडोदरा		
७ श्री बबलाकाका - हलोल		
८ श्री बीनाबेन - सांगली		
९/१० Vashi-2		

॥ श्री हरिः ॥

सुज्ञ वैष्णव,

प्रभुकी लीलाओंके कीर्तन - गुणगान द्वारा अपना चित्त शीध्रतासे प्रभुमें निरुद्व हो जाता है ओर अपनी लीलाका गान सुनकर प्रभु शीघ्र प्रसन्न होते हैं। ईसीलिये "कीर्तनसेवा "का अष्टयाम सेवामें विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ हैं।

स्वसेव्य प्रभुको रिझाने के लिए प्रत्येक वैष्णव अपने स्वगृह में भी पारंपारिक एवं शास्त्रीय पद्धतिसे कीर्तनगान कर सकें ऐसे उच्च हेतुसे ओर प्रभुकृपासे पुष्टिभक्तिसंगीका पंचवर्षिय अभ्यासक्रम तैयार किया है; जिसमें मंगला से शयन पर्यंतके प्रणालीके अनुसार गाये जाने वाले सभी रागोंका समावेश है। "कीर्तन प्रवेशिका "से प्रारंभ कर "कीर्तन विषारद" पर्यंत यह अभ्यासक्रम है, जिस के अन्तर्गत यह पंचम पुस्तिका एवं ईसकी पूरक ऑडियो केसेट .सी डी .एम पी थ्री, भी उपलब्ध है। केसेटमें पुस्तिकामें दिये गये रागोंका कीर्तन स्वरलिपिके साथ गायन करके सिखाये है ओर संगीत विषयक प्रारंभिक जानकारी ,ताल, झांझ ईत्यादि बजा कर सिखाया गया है। गत वर्ष हमने ताल प्रशिक्षण के लिये एक विशेष कैसेट बनाई है जिसका लाभ पखावज या झांझ के विधार्थी भी ले सकते हैं। आशा है कि आपको यह अभ्यासक्रम पसंद आयेगा। प्रत्येक वर्ष विभित्र केंन्द्रोंसे ये परीक्षाअें ली जाती है और उत्तीर्ण विद्यार्थीओं को प्रमाणपत्र दिया जाता है। यदी आप परीक्षा देकर सहभागी बनना चाहते हों तो विशेष जानकारी के लिए कृपया अपना नाम व पत्ता लिखकर हमें भेजें।

ः हमारा पत्ता ः

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद

१५-ई , हालाई लोहाणा निवास, रघुवंशी हॉल, शंकर बारी लेन,
off. जे.एस.एस. रोड, चीराबाझार, मुंबई -४००००२.• टेली. : २२०७ ६०९८/५६३७२७५८

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

अे/४, राजनिलम, ग्राउन्ड फ्लोर, डॉ. रजबअली पटेल लेन,
ब्रीजकेन्डी होस्पिटल के सामने, भुलाभाई देसाई रोड, मुंबई-२६.
टेली : २३५३ ८८१४ / ९८२००२३७८२

कीर्तनानुरागी वैष्णव वृंद

आ.पु.वै.प. के सौ वे वर्षमें प्रवेशके अवसर पर "कीर्तन विशारद" पुष्टिभक्ति संगीत पाठयक्रम नं. ५ केसेट के साथ प्रकाशित हो रही है, यह बड़े ही आनंदका विषय है। विशेषकर मेरे लिए ये बड़े ही हर्षका विषय है, कि मेरी कीर्तन शिक्षा का लाभ वैष्णव वर्गको प्रभु सेवामे विनीयोग करने का अवसर मिलेगा, इस शुभ अवसर पर मैं अपने प.पू. पिताश्री छिद्दालालजी को अवश्य याद करना चाहूँगा, जिनके गुणसे मैं इस लायक बना। इसके साथही मैं अपने गुरुदेव श्री प्रथमेशजीका सदाँही ऋणी रहूंगा। जिनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से मैं इस महान कार्य को करने मे समर्थ हूआ। इस पाठयक्रम मे किसी प्रकारकी त्रूटी रह गयी हो तो आप इसे क्षमा कर देंगे क्योंकी मानव मात्र भूलके पात्र।

संगीत की परीक्षाओं का उद्देश्य आपको प्रथम या द्वितीय स्थान देना नहीं है परंतु कीर्तन के प्रति आपको जागृत करने का है। परीक्षा देने से आपको स्वर, लय, तालका ज्ञान तो होगा ही, लेकिन कौनसा पद किस रागमें कब गाया़ जाता है जिसकी विस्तृत जानकारी पू. पा. श्री निकुंजलता बेटीजीने अथाग परिश्रम से संशोधन करके इन पुस्तिकाओं में दी है, उसका भी आपको ध्यान रहेगा।

आशा है कि आप इससे लाभान्वित होकर प्रत्येक वर्ष की तरह उत्साहपूर्वक यह परीक्षा देंगे और इस पाठ्यक्रमके प्रचार - प्रसारमें हमारा साथ देते रहेंगे।

इसी के साथ आप कीर्तन प्रेमीयों को जय श्री कृष्ण।

जमुना प्रसाद शर्मा का

भगवद् स्मरण

॥ श्री हरि : ॥

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद द्वारा प्रकाशित

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका प्रथम मोती

"श्यामघटा घिर आई"

वर्षाकालीन २२ कीर्तनोंका संपुट; दो केसेटोंका सेट

●

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका द्वितीय मोती

"शीतकाल सुहावनो"

शीतकालीन ५० पदोंका संग्रह;
मंगला से शयन पर्यंतका ४ केसेटोंके सेटमें पुस्तिका सह उपलब्ध है।

●

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका तृतीय मोती

"ग्रीष्म युगल सुखदायी"

ग्रीष्म ऋतुके २८ पदोंका संग्रह;
मंगला से शयन पर्यंतका २ केसेटोंके सेटमें पुस्तिका सह उपलब्ध है।

●

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका चतुर्थ मोती

"होरी खेले वृजराज"

वसंत धमार के पद एवंम् रसिया का ३ केसेट का सेट पुस्तिका सह उपलब्ध है।

●

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं श्री गुंसाँईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
द्वारा प्रकाशित

"कीर्तन प्रवेशिका"
पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. १

"कीर्तन प्रबोध"
पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. २

"कीर्तन सुबोध"
पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. ३

"कीर्तन प्रवीण"
पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. ४

"ताल प्रशिक्षण"
कीर्तनोपयोगी ताल; झांझ और पखावजके साथ

***कीर्तनकार :* श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा**   ***भावोद्बोधन :* श्रीमती कल्पनाबेन शाह**

***संकलन :* कु. ख्याति द्वारकादास**

प्राप्ति स्थान :

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
१५-ई, लोहाना निवास,रघुवंशी हॉल के ऊपर,
जे. एस. एस. रोड, चीरा बजार, मुंबई-२.
फोन : २२०७ ६०९८, ५६३७ २७५८

प. पू. निकुंजलता बेटीजी
अे/४, राजनीलम, ग्राउन्ड फ्लीर, डॉ. रजबअली पटेल लेन,
ब्रीजकेन्डी होस्पिटल के सामने, भुलाभाई देसाई रोड, मुंबई-२६.
फोन : २३६३ ८८१४ ● Email : nikunjalatabetiji@hotmail.com

●

श्री बटुकभाई शाह
अंबर टेक्षटाईल, ४ सदईच्छा, मंडपेश्वर रोड,
बोरीवली (वेस्ट), मुंबई - ९२.
फोन : २८९५ ७८१७

●

श्री सुरेन्द्र एम. मेहता
६०२, राजमाला, ८७ बी नेपेन्सी रोड, मुंबई - ६.
फोन : (ओ.) : २२८३ ५२९५, (र) : २३६७ ८५५४
मो. : ९८२१०-९७५२१

केसेटोंका सेट पुस्तिका सह परिषदकी सभी शाखाओं में उपलब्ध है।